अक्टूबर–नवंबर–2021
संमिश्रांक

मूल्य - 45 रू. वर्ष - 9 अंक - 3-4 वोल्युम - 94

महिलाओं की सम्पूर्ण
हिन्दी मासिक पत्रिका

संगिनी

दीपावली विशेषांक

क्यों मनाया जाता है
दिवाली का पर्व

सुरक्षित और सुरक्षित
दिवाली के लिए इन बातों
का रखें ध्यान

भगवान महावीर का
निर्वाणोत्सव भी है
दीपावली

इस दिवाली पर रखें
अपनी डाइट का ध्यान

पकवान
दिवाली के..

फूलझड़ी मुस्करा दी

VISIT…

જેતલપુર મેઇન રોડ
(એન્જૉય રેસ્ટોન્ટની સામે)

વર્ષ: 1927
થી અવિરત

શુકનનું સોનું તો ગણદેવીકરનું જ...

નત્ મસ્તક વંદન
અમારા પ્રિય ગ્રાહકો,
સ્નેહીજનો, મિત્રો, શુભેચ્છકોને.
શ્રેષ્ઠ ગુણવત્તા, વ્યાજબી ભાવ અને
વિવેકપૂર્ણ વ્યવહાર માટે
અમે કટિબધ્ધ રહીશું.

સમગ્ર વર્ષ વ્યાજબી ભાવ
વિશાળ શોરૂમ
વિવેકપૂર્ણ વ્યવહાર

916 BIS હોલમાર્ક ગોલ્ડ જ્વેલરી તથા
રિયલ ડાયમંડ જ્વેલરીની વિશાળ શ્રેણી..

GANDEVIKAR JEWELLERS
વર્ષ: ૧૯૨૭
થી અવિરત

Gandevikar
Jewellers Pvt. Ltd.

જેતલપુર રોડ, એન્જૉય રેસ્ટોરન્ટની સામે, ચકલી સર્કલથી નજીક,
ચીકુવાડી, અલકાપુરી, વડોદરા. P.: 0265 - 2340950, 2342796

कहानी	लेखक	पेज नं.
धनतेरस	सरला सिंह	१९
मुझे उनसे प्यार नहीं हुआ	पी. बी. गरिमा	२६
अब बरसो भी तो क्या	ममता पानेरी	२९
दर्द की दहलीज़	मञ्जरी चतुर्वेदी	४२
साझे की अम्मा	नीलू शुक्ला	५६
मेकअप	हंसा दीप	५८

लेख	लेखक	पेज नं.
तमसो मा ज्योतिर्गमय	जितेंद्र निर्मोही	८
उजाले बाहर ही नहीं, भीतर भी हो	ललित गर्ग	१०
दीपावली पर समृद्धि का फूहड़-प्रदर्शन!	गिरीश पंकज	१३
क्यों मनाया जाता है दिवाली का पर्व	संगिनी डेस्क	१७
परंपरागत दीपावली : आज की आवश्यकता	संगिनी डेस्क	१८
असली दीपोत्सव	वीणा वैष्णव	२२
इस दशहरा रावण दहन या आत्मदोहन	अनामिका लेखिका	२३
त्यौहारों से बढ़ाएं आध्यात्मिक पूँजी	रीना रवि मालपानी	२५
अब कोई काम का नहीं रहा	राजेंद्र कुमार सिंह	३६
सुखद और सुरक्षित दिवाली के लिए इन बातों का रखें ध्यान	संगिनी डेस्क	३८
भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव भी है दीपावली	अलका जैन	४५
डिजिटल युग में बेहतर शिक्षक और शिक्षा का भविष्य	शोभा जैन	४८

सौंदर्य	लेखक	पेज नं.
दिवाली पर खास है दिखना तो इस तरह करें मेकअप	डॉ आदित्य	४०

स्वास्थ्य	लेखक	पेज नं.
इस दिवाली पर रखें अपनी डाइट का ध्यान	रजनी अरोड़ा	५०

लघुकथा	लेखक	पेज नं.
बेटियाँ	मधुलिका राय मल्लिका	२१
कंचना	नीना सिन्हा	२४
देवी का द्वार	मीरा जैन	३३
विजय	विजय सिंह चौहान	६२

पकवान दिवाली के	लेखक	पेज नं.
आकर्षक, स्वादिष्ट दीवाली की रंगोली	अर्चना गुप्ता	३४
मीठी-मीठी दिवाली की चरखी	''	३४
हेल्दी रागी पालक चकली	संगिनी डेस्क	३५
ओरेंज कुकीज़	''	३५

कविताएँ	लेखक	पेज नं.
दीपावली	ज्ञानप्रकाश पूयीष	९
दीपोत्सव ये....!	रागिनी स्वर्णकार	१६
मगर साथ अब मैं निभाऊँगा कैसे	विजय कनौजिया	१६
पंचभूती प्रेम पुष्प	अनिला राखेचा	२१
हो सके तो/मॉनसून ऐसा क्यों आया	पुरूषोत्तमभाई मिस्त्री	३३
अस्तित्व / शुभकामना	श्वेता दीप्ति	३३
दीप हूँ मैं	श्यामसुंदर श्रीवास्तव	३७
ओ कान्हा एक बार पुनः	प्रियंका भट्ट	३७
मैं राम नहीं हूँ	सैनिक कवि विशाल के. सी.	४१
माँ तुम हो मेरा संसार!	प्रियंका द्विवेदी	४४
विजय पर्व दशहरा	रुद्र प्रकाश गुप्त	४४
देवी दूर्गा के दोहे	विभा रंजन	४६
दीप-पर्व पर प्रेम का दीया जलाएँ	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	४७
नेह का दीपक जलाएँ	अवनीश त्रिवेदी	४७
छा जाये हर ओर उजाला	गरिमा सक्सेना	५२
दीप जला तुम जाओ!	अशोक आनन	५२
काश! एक दिवाली ऐसी होती	रीना अग्रवाल	५३
मातृभूमि/ कहे बंजारा	रुनु बरुआ	५३
बहाव	सुकेशिनी दीक्षित	५३
कविता	राजपाल सिंह गुलिया	५४
नारी ने हार कहाँ मानी	प्रियंका पांडेय त्रिपाठी	५४
मज़दूर की व्यथा	अनुपमा कड्डेल	५४
यह मन जरा सा	रश्मि संजय श्रीवास्तव	५५
ढूंढ़ लो अपनी कमी को	सतीश द्विवेदी	५५
आया दीपावली त्यौहार	व्यग्र पाण्डे	५७
दीप जलाओ	तुम्न गोस्वामी	५७

पुस्तक समीक्षा	लेखक	पेज नं.
तीस पास की नदियाँ	सत्या शर्मा	६०

बाल कहानी	लेखक	पेज नं.
कोरोना के साथ दिवाली	देशबन्धु	६१
फूलझड़ी मुस्करा दी	ओमप्रकाश क्षत्रिय	६३
नकल की सजा	विमला नागला	६५

बाल कविता	लेखक	पेज नं.
मुन्ना है चुलबुल्ला रे!	पूनम चौहान	६४
बुराई हारी है	उपेन्द्र अणु	६५
फूलों की क्यारी	कल्याणी झा	६६
त्यौहारों की लड़ियाँ	पूर्वा वर्मा	६६
मैं क्या करूँ / दीदी की डांट	काव्या कटारे	६६

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

खूबसूरत आवरण पृष्ठ से सजा 'सङ्गिनी' का 'हिंदी दिवस विशेषांक' एक संग्रहणीय अंक बन गया है।आपकी सम्पादकीय मेहनत साफ झलकती है। आप अपनी जीवटता और समर्पण से ९ वर्ष से इस पत्रिका का अनवरत प्रकाशन कर रहे हैं। हर अंक में देश– विदेश के प्रतिष्टित लेखकों के साथ नव रचनाकारों को स्थान देना अच्छा लगता है। इससे हिंदी में लिखने वाली एक नई पीढ़ी तैयार होगी। आप पूर्वोत्तर राज्यों के लेखकों को भी नियमित स्थान दे रहे हैं, इससे यहाँ हिंदी पढ़ने–लिखने वालों की संख्या बढ़ रही है।'सङ्गिनी' साहित्यिक –पारिवारिक पत्रिका के रूप में स्थापित हो रही है, यह प्रसन्नता का विषय है। आपकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवम मंगलकामनाएं!

– डॉ. सुशांत पुरवार , दीमापुर (नागालैण्ड)

'संगिनी' का सितम्बर २०२१ अंक हाथ में है। इस अंक की समस्त रचनाएँ विचारों के नूतन प्रवाह से आप्लावित है। इस अंक में हिंदी की दशा व दिशा को दृष्टिगत रखते हुए बेहतरीन आलेख संजोए गए हैं जिनमें से दोनों सम्पादकीय आलेख सहीत डॉ भानुश्री सोनी का 'मेरी भाषा, मेरा अभिमान', पूनम मिश्रा का 'जब बोलेंगे तो बचेगी हिंदी', अर्चना कोचर का ' हिंदी का त्यौहार' एवं अल्पना नागर का आलेख' भाषा और भूमंडलीकरण' प्रभावित करते हैं। बानी बर ठाकुर की लघुकथा 'जय हिंद, जय हिंदी' वर्तमान समय में हिंदी समाज की अंग्रेजी मानसिकता पर करारा व्यंग्य करती एक सुंदर लघुकथा है। सभी कविताएँ, आलेख, बाल कहानी, बाल कविताएँ पत्रिका को पठनीय बनाते हैं।इसके लिए लेखकों व संपादक माधुरी घोष का हार्दिक अभिनन्दन जो इतनी सुंदर, श्रेष्ठ, ऊपयोगी व पठनीय सामग्री परिश्रम पूर्वक संग्रहित करते हैं, जिससे कोई भी रचना बोझिल नहीं लगती। पत्रिका की सारी सामग्री विविधता लिए होती है। बौद्धिक संपदा से समृद्ध इस अंक के लिए हार्दिक बधाई।

– भूपेंद्र दीपकभाई परिहार, नासिक (महाराष्ट्र)

'संगिनी' का सितम्बर २०२१ का अंक पढ़कर हर्षित हूँ। पत्रिका का संपादकीय यह बताने के लिए काफी होता है कि पत्रिका का स्तर कैसा होगा। आप भारत के हिन्दीतर भाषी प्रदेश गुजरात से हिंदी भाषा की पत्रिका प्रकाशन कर हिंदी की प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आप भारत ही नहीं विदेशी हिंदी रचनाकारों को भी सम्मान स्थान देकर अनूठा कार्य कर रहे हैं। इंटरनेट ने दुनिया के कई देशों में 'संगिनी' का पाठक वर्ग तैयार कर दिया है। मैं नेपाल के हिंदी रचनाकारों की ओर से आपका अभिनन्दन करता हूँ और आपको नेपाल आमन्त्रित करता हूँ। नेपाल के रचनाकार 'संगिनी' में प्रकाशित होकर गौरवान्वित महसूस करते हैं। आप भारत–नेपाल के मध्य साहित्य सेतु का कार्य कर रहे हैं, इसके लिए आपकी सम्पादकीय टीम को साधुवाद।

– रणविजय बहादुर थापा, भक्तपुर, काठमांडू (नेपाल)

'संगिनी' का हिंदी दिवस विशेषांक (सितम्बर २०२१) उत्कृष्टतम पठनीय सामग्री से युक्त संग्रहनीय अंक है। इसमें हिंदी विषयक बेहतरीन आलेखों को सजाया गया है जो अन्य पत्रिकायन श्रेष्ठ है। आपने महज खानापूर्ति नहीं करके एक संग्रहनीय हिंदी विशेषांक पूरे श्रमपूर्वक प्रकाशित किया है। ताज़गी का अहसास कराती कविताएँ, गागर में सागर भरती लघुकथाएं, हृदय छूती कहानियां, बालमन को प्रभावित करती बाल कहानियां व कविताएँ, पुस्तक समीक्षा, स्वास्थ्य, सौंदर्य, संस्कृति से जुड़ी ऊपयोगी सामग्री संगिनी को बेहतरीन पारिवारिक साहित्यिक पत्रिका के रूप में प्रतिष्टित करती है। फिलहाल एक और नए और चिंतन परक विशेषांक के लिए हार्दिक बधाई एवम मंगलकामनाएं!

– डॉ. रमेश भौमिक, चैन्नई (तामिलनाडू)

'संगिनी' का सितम्बर २०२१ अंक बहुत रोचक, उम्दा सामग्री से भरपूर है।आवरण पृष्ठ हर बार की तरह मनोहारी है। इस अंक की तीनों कहानियां (ममता सिंह राठौड़, उर्मिला आचार्य, आरती वैष्णव) बेहतरीन और मन को झकझोरने वाली है। बानी बर ठाकुर व अमित कुमार की लघुकथाएं व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है। अनुपम कट्टेल, रानी गुप्ता, रीना अग्रवाल, विशाल के सी, रागिनी स्वर्णकार, राजेन्द्र श्रीवास्तव, ज्ञानप्रकाश पीयूष, बिना राय, मधुलिका राय, प्रतिभा श्रीवास्तव, लाल देवेंद्र कुमार की कविताओं में विचारों की ताजगी व संवेदनाएं हैं जो पाठकों को विशेष पसंद आएगी। 'बाल जगत' के तहत प्रकाशित सभी रचनाएँ बालमन के अनुरूप है। अन्य सभी सामग्री भी श्रेष्ठ हैं। आपको हार्दिक बधाई।

– राहुल पुरवार, शाहदरा, दिल्ली

अपनी रचनाएं निम्न ई–मेल या व्हाट्सएप्प पर ही भेजें–
ईमेल – rajkumarjainrajan@gmail.com
मोबाइल / व्हाट्सएप्प : 98282 19919

संपादकीय

रिश्तों की मिठास ही त्यौहारों की रोनक

दिवाली दीयों को त्यौहार, रोशनी का त्यौहार है। दिवाली के आने के कई दिनों पहले से हम उसके स्वागत की तैयारियों में जुट जाते हैं। घर की सफाई, रंगाई, खरीददारी, पकवान ये सब इस त्यौहार की तैयारी के महत्त्वपूर्ण हिस्से होते हैं। सभी भारतीय घरों में लज़ीज पकवानों का बनना खासतौर पर होता ही है। दीये जलाकर और आतिशबाजी कर उल्लास प्रकट किया जाता है। पर क्या इन सब से वाकई हम खुशियाँ हांसिल कर सकते हैं ? जब तक इस खुशियों में अपनो का साथ न हो या अपने साथ न हो।

कोरोना ने त्यौहारों में रिश्तों की अहमियत को काफी दूर कर दिया है। अब लोग एक-दूसरे के घर जाने में काफी सोचने लगे है। शुभकामनाएँ केवल ऑनलाईन या सोशल मीडिया द्वारा भेज कर अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने लगे हैं। पर क्या यह सोशल मीडिया रिश्तों की कमी को पूरा कर सकता है? वैसे कोरोना के आने से पहले भी हम देखते आये हैं कि लोग रिश्तों और रिश्तेदारों से थोड़ा दूर ही भागते हैं। भौतिक मिलन से अब लोग कतराने लगे है, इसलिए वे ना ही किसी के घर जाते हैं और ना ही किसी का आना पसंद करते हैं। ऐसे में घर के आँगन की रंगोली या मेज़ पर सजे पकवान का कुछ अर्थ ही नहीं रह जाता। उत्सव का मतलब ही सामूहिकता से हैं। सब मिलजुल कर खाएं, खिलाएं, आतिशबाजी करें तब ही उत्सव की उमंग प्रकट होती है। अकेले-अकेले त्यौहार मनाने में खुशियाँ कहाँ मिल पाती है? रिश्ते त्यौहारों की रोनक को कई गुना बढ़ा देते हैं। इसलिए रिश्तों के मायने हमारी संस्कृति, संस्कार और परम्पराएं हमें हमेशा सिखाती आई है। उन पवित्र व उज्ज्वल परम्पराओं को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। रिश्तों में प्यार, अपनापन कम न हो इसलिए इन त्यौहारों को जरिया बनाया गया है। आप भी अपने रिश्तों को जोड़ना चाहते हैं तो इस दिवाली अपनो को घर बुलाएँ या आप जाएं, साथ मिलकर खुशियों के दिप जलायें। अपनों की जगह कोई भी सोशल मीड़िया नहीं ले सकता है। केवल रिश्ते ही है जो आपके चेहरे पर असली खुशी ला सकते हैं। इसलिए इस मीठास, इस खुशी को कही जाने न दें।

इस दीपावली अपने रिश्तों में मिठास घोलें, आपकी सभी मनोकामनाएँ लक्ष्मी माँ की कृपा से पूरी हो, यही कामना 'संगिनी' परिवार करता है। आप सभी को इस प्रकाश पर्व दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

माधुरी घोष

प्रधान संपादक/ प्रकाशक

मालिक, मुद्रक और प्रकाशक माधुरी घोष द्वारा ईशा ग्राफिक्स, बी/१०२, एफ.एफ., परम कॉम्पलेक्ष, वी.एम.सी. गेस ऑफिस के बाजु मे, दांडीया बजार, वडोदरा-३९०००१ से मुद्रित एवं २२, तिलकनगर सोसायटी-१, नवजीवन, आजवा रोड, वडोदरा-३९००१९ गुजरात से प्रकाशित । संपादक : माधुरी घोष

हिन्दी मासिक पत्रिका

संगिनी
आप की हमसफर

वर्ष-9 • अंक-3-4
वोल्यूम-94 - अक्टूबर-नवंबर-2021

: प्रकाशक, संपादक :
माधुरी घोष

: सह संपादक :
राजकुमार जैन 'राजन'

: सहायक संपादक :
सुरजीत घोष

पृष्ठ सज़्जा : माधुरी घोष
पृष्ठ संख्या : 68

: ग्राफिक्स डिज़ाइनिंग :
शैलेश मकवाना

: भाषा शुद्धि :
रजनीकान्त कटारिया

: संपादकीय कार्यालय :
22 - तिलक नगर, किशन वाडी
पुलिस स्टेशन के पास, नवजीवन,
आजवा रोड़, वड़ोदरा-390019.
मो.: **9924716869**
ई-मेल: sangini.akh@gmail.com
rajkumarjainrajan@gmail.com

: मालिक, मुद्रक और प्रकाशक :
माधुरी घोष

RNI No. : GUJHIN/2013/55691
Post Regd. No. VDR (E)/329/2020-22

: अस्वीकार्य :

संगिनी आपकी हमसफर पत्रिका में प्रकाशित सर्व लेख, साहित्य, कविताएं, रचनाएं या फीचर इत्यादि संबंधित व्यक्ति के अपने विचार हैं, उस पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है । पत्रिका इसकी जिम्मेदारी नहीं लेती है। साथ ही पत्रिका में प्रकाशित चित्र या फोटो, लेख या फीचर को प्रभावपूर्ण तरीके से केवल प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इन्टरनेट या अन्य सोशियल साइट द्वारा ली हुई हो सकती है, इसे किसी भी तरह के नियमों का उल्लंघन नही समझा जायेगा। संगिनी पत्रिका में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशित तिथि से २ माह के अंदर की जा सकती है, उसके बाद किसी भी प्रकार की पूछताछ व कार्यवाही पर हम जवाब देने के लिय बाध्य नहीं हैं। सभी कानूनी विवाद वडोदरा कोर्ट के अधिकार क्षेत्र में ही सुलझाए जाएंगे।

अपनी बात

दिल मे उम्मीद का दिया जलाए रखिए...

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण कण में उत्सवधर्मिता की प्रतिध्वनियां हैं ,जिनसे राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव के स्वर मुखरित होते हैं। सत्य, संयम, अहिंसा और त्याग इन चार स्तम्भों पर हमारी संस्कृति टिकी हुई है। यही हमारे अस्तित्व की आत्मा है। भारतीय सभ्यता मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानती है और भारतीय संस्कृति उसको मानव बनने का मार्गदर्शन कराती है। भारतीय संस्कृति आस्थाशील संस्कृति है। हमारी संस्कृति पर अनेक प्रकार के प्रभाव पड़े हैं और आघात भी पहुंचे हैं, परन्तु वे उसके प्रवाह को तोड़ने में सफल नहीं हुए हैं।वर्तमान दौर में चहुँऔर जातीय उन्माद, साम्प्रदायिक तनाव, असामाजिक वातावरण, अनैतिकता, शोषण, हिंसा, दुराचार और अशांति के कारण हमारी युगों पुरानी परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत को भारी चोट सहनी पड़ रही है। कोरोना त्रासदी ने भी खासा नुकसान पहुंचाया है।

भारत कितना भी विपन्न रहा हो लेकिन उसकी समस्त सांस्कृतिक परम्पराएं, धर्मग्रन्थ सभी प्रकाश को ही समर्पित है। दीपक प्रकाश का पर्याय है। मनुष्य ने प्रकाश का यह विकल्प अपने अंदर के प्रकाश की प्रज्ञा से खोजा है। कोई भी शुभ कार्य हमारे यहां बिना दीप प्रज्वलन पूर्ण नहीं होता है। दीपक मनुष्य की प्रकाश चेतना का ही प्रतीक है। दीप हमारा लोक भी है, आत्मलोक भी और परलोक के प्रति प्रकाश की कामना भी।दीप चाहे आंतरिक हो या लौकिक, हमारे जीवन का प्रथम प्रकाश भी वही है। भारतीय परंपरा में तो दीपावली को प्रकाशपर्व कहा गया है। दीप पर्व, याने प्रकाश की अद्भुत छटा। विजयदशमी के जाते ही दीपावली की दस्तक मन मस्तिष्क में होने लगती है। कोरोना त्रासदी के कारण यह दस्तक कमजोर–सी लगने लगी है। मन में अनिश्चय भरी उदासी घर कर गई है। महामारी जन्य बेरोजगारी ने हमारी उत्सवधर्मी प्रकृति पर ग्रहण लगा दिया है।लगता है हमारे दिलों में अजब–सा सन्नाटा भरा अंधेरा छाया हुआ है। हमारे सामने प्रकाश–पर्व दीपावली उपस्थित होकर सभी तरफ प्रकाश फैलाने की प्रेरणा दे रहा है। अंधकार वेदना है, प्रकाश आनन्द है। तभी कहा गया है – 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' तो कभी 'अप्प दीपो भव:'। दीपपर्व दीपावली केवल धन की चमक–दमक ही नही है, ज्ञान की रोशनी, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सौहार्द्र के साथ ही पर्यावरण का प्रकाश और रिश्तों की चमक भी हैं। यह सन्देश देता है कि अब हमें संकल्प करना होगा कि कैसा भी विचलन आये, मन की शक्ति को कमजोर नहीं, संकल्पित करना होगा कि मन की एकाग्रता और हृदय की तन्मयता न टूटे, संकल्प करना होगा कि उम्मीद का नन्हा–सा दिया कभी बुझने न पाए। इस दीपावली अपने घर–आंगन के साथ तन–मन–जीवन और जन–जन को भी आलोकित करें। हमारी अस्मिता पर लगे जातीय उन्माद, साम्प्रदायिक तनाव, असामाजिक वातावरण, अनैतिकता, अशांति, हिंसा रूपी ग्रहण से हमारा राष्ट्र और समाज मुक्त हो जाये। हम सबको उजाले बांटकर इस पर्व को सार्थक बनाएं।

दुनिया में कुछ ऐसे बुनियादी परिवर्तन हो रहे हैं, जिन्हें समझना मुश्किल है। शायद यह कि सभ्यतागत परिवर्तन तो होंगे, पर जिंदगी वैसी ही रहेगी। उसके सुख–दुख और संवेदनाएं नहीं बदलेगी। जीवन को समता, समानता, स्वतंत्रता की बुनियादों पर खुद को ही रचना होगा। सदियों से यह परम्परा रही है कि सभ्यता की विकास यात्रा को मनुष्य और प्रकृति के संघर्ष और प्रकृति पर मनुष्य की विजय के रूप में जाना–समझा जाता रहा है। यह गलत सोच थी। मनुष्य ने प्रकृति से कभी संघर्ष नहीं किया, वह प्रकृति से कभी जीता भी नहीं। पर प्रकृति के साथ जब– जब भी मनुष्य ने अलगाव किया, मनुष्य परास्त ही हुआ। प्रकृति से लड़ा नहीं जा सकता। केवल उसके साथ मित्रवत रहकर ही हम अपना अस्तित्व बचा सकते हैं। हम अपने प्रकाश को फैलाना चाहते हैं तो हमें पहले तपना पड़ेगा। प्रकाश पैदा करने के लिए हमारे भीतर चिंगारी होना चाहिए, यदि नहीं है तो देश व समाज आपको याद नहीं रखेगा।

मनुष्य ही नहीं, प्राणी मात्र को अंधेरा रास नहीं आता। वह प्रकाश के लिए छटपटाता है। गहरी स्याह काली अमावस्या के दिन दीपावली होती है। इस शुभदिन सब पुरुषार्थ रूपी रोशनी का दीपक जलाकर घर द्वार, आंगन ही नहीं अपने अंतर्मन में भी उजाला भरें।शरीर, मन , बुद्धि का कौशल वर्षभर दिखाते रहें। दीप पर्व पर यह तैयारी मानव सभ्यता की ही नहीं, मानवीयता के विकास की भी गाथा है। चेतना जब जागृत होगी तो यह भाव प्रकाशित होगा कि स्वयं को प्रकाशित कर लेना काफी नहीं, अपने समाज, अपने देश को प्रकाशित करना होगा। हमारी शक्ति, हमारा सामर्थ्य जब पूरे समाज मे अवतरित होगा तभी सामूहिक जीवन में हम रोशनी भर पाएंगे। राष्ट्र का निर्माण ऐसी ही उद्भासित चेतनाओं से होता है और राष्ट्रों की सामूहिक चेतना ही विकसित होकर विश्व को एक सुखद नीड़ बना देगी ; तभी हम समझ सकेंगे कि विनाश और विकास, संहार और सृजन की निरंतरता और शाश्वतता। अंधेरा जितना घना होता है, उजाले की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है। हम सब मिलकर इन संभावनाओं को तलाशें। अपने भीतर दबी–सोई अनंत उम्मीदों को जगायें। आइए, इस दिवाली हम उम्मीदों के दिये जलाएं !!!

'संगिनी' के इस अंक को 'उत्सव' अंक के रूप में पाठकों को सौंपते हुए हमें अत्यंत आनन्दानुभूति हो रही है। इस अंक की सामग्री को लिक से हटकर तैयार करवाया गया है। हमें विश्वास है यह अंक आपको पसंद आएगा। आपकी पाठकीय प्रतिक्रिया हमारी रचनात्मक ऊर्जा को शक्ति प्रदान करती है।हमें आपके अभिमत व सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। प्रकाशपर्व के इस पावन अवसर पर एक दीया अपनी प्रिय पत्रिका 'संगिनी' के लिए भी जलाएं और अपना सद्स्यता शुल्क भेजकर सम्बल प्रदान करें ताकि नव लेखकों को प्रोत्साहन देने व हिंदी के प्रचार–प्रसार के हमारे इस कार्य को गति मिल सके। नवरात्रि, ओणम, दीपावली आदि सभी पर्वों पर आप सबके लिए हार्दिक मंगलकामनाएं!!

राजकुमार जैन 'राजन'
सह संपादक
आकोला. मो. **98282 19919**
rajkumarjainrajan@gmail.com

तमसो मा ज्योतिर्गमय

जितेंद्र निर्मोही
कोटा (राजस्थान)

वेद उद्धरित यह उक्ति ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' बोध कराती है कि ''हम अंधकार से उजाले की ओर चलें'' इस संसार की अमावस रात्रि में भी सत्य की दीपमालिका के अनेक दीये हैं जैसे दया, धर्म, परोपकार, सदायशता, सच्चरित्रता आदि जो प्रकाश फैला रहे हैं। इन दीप मालाओं से ही 'दीपोत्सव' मनाया जाता है। इसीलिए संतो की दिवाली बारह मासों होती है।

''सदा दिवाली संत की बारह माह बसंत''

जब शक्ति दम्भ का पर्याय हो जाती है तब तात्कालिक परिवेश में तो बड़ी प्रभावी होती है, किन्तु अंत में वो शिथिल व निरूपाय हो जाती है। दम्भ युक्त अनेक शासकों का पतन इसी प्रकार हुआ है। ७५ वर्ष स्थापित एक विचार धारा देखते ही देखते विलुप्त हो गई। हर हिंसक क्रांति का अंत हिंसा से हुआ है, किन्तु सत्य और अहिंसा के मानदंड आगे जाकर स्थापित हुए हैं। ''सर्वे भवंतु सुखिनः'' का उद्घोष करने वाले हमारे देश की पहचान अब बनने लगी है, इसके आध्यात्मिक मूल्यों को अब पहचाना जाने लगा है।

अंधकार से प्रकाश की ओर जाने वाला रास्ता जहाँ उर्ध्वगामिता का सूचक है, वहाँ यह सत्य को स्वीकृत करता है, असत्य को नकारता है। इस रास्ते पर चलने वाला उतनी जल्दी तो पहचान नहीं बना पाता इतना कि एक शब्द जाल में आवेष्टित करने वाला या वाकचातुर्य से युक्त व्यक्ति, किन्तु कालांतर में भव के अनेक रोगों से मुक्ति पाता हुआ इस जगत में स्थापित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति किसी पूर्वाग्रह या विचारधारा से बंधा हुआ नहीं होता है, वह उन्मुक्त होता है। इसी कारण ऐसी विचारधारा के व्यक्ति जिनकी कोई रचनात्मक राह नहीं होती है उनसे उनका तारतम्य नहीं बैठता है।

''उसके दुश्मन हैं बहुत, आदमी अच्छा होगा''

वो फिर भी ''एकला चलो रे'' वाली अपनी विशिष्ट क्षमता को साथ लेकर निरंतर गतिमान रहता है। शनैः शनैः पूर्वाग्रही लोग अपनी बुद्धि के स्तर के आधार पर ज्यों–ज्यों विवेक प्राप्त करने की अवस्था में आते जाते हैं, इस विशिष्ट व्यक्ति से जुड़ते चले जाते हैं। धीरे–धीरे परिष्कृत विचारधारा से युक्त व्यक्तियों की एक शृंखला बन जाती है। ऐसे लोगों से ही उनके आसपास का परिवेश आलोकित रहता है, यही है ज्योतिपथ। ऐसे व्यक्ति जहाँ भी अपना कर्मक्षेत्र बनाते हैं वहाँ के लोगों में अपने प्रति श्रृद्धा और आदर का भाव स्थापित कर देते हैं।

मूलतः 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अज्ञान के अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर बढ़ते जाना ही है। ऐसा ज्ञान जो यथार्थ या उचित के

प्रति निष्ठा, श्रृद्धा और विश्वास रखता है और असत से सामंजस्य स्थापित नहीं करता है। इस ज्ञान से स्वनिर्धारण क्षमता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है तब सत्य पथ की ओर ही चरण बढ़ते जाते हैं। पथ स्वतः ही अलग हो जाता है। तब वो मृत्यु से अमृत की ओर या मृत्युंजयत की ओर अग्रसर हो जाता है। अभय हो जाना ही, ऐसी राह की चरम अवस्था होती है। उस व्यक्ति का आत्मबल प्रबल हो जाता है। उस पर संशय, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, लोभ, अज्ञान, अविवेक, घमंड आदि दुर्गुण अपना पुरजोर असर नहीं दिखा पाते। ये यात्रा बड़ी कठिन होती है किन्तु अभ्यासी होने पर संतोषयुक्त एवं सहज–भाव की भी है। ऐसा मनुष्य स्वभाव से अपने प्रति कठोर एवं दूसरों के प्रति अत्यंत कोमल होता है। यही पथ है जो उसे अमरता प्रदान करता है।

''मृत्योर्मा अमृतं गमयः''।

ज्ञान का प्रकाश सनातन संस्कृति में ही माना गया है। अस्तु दीपावली के बाद दवात कलम पूजा सरस्वती के रूप में की जाती है। लोक में वाणी, संगीत, चित्र, कला आदि को सरस्वती का रूप ही माना गया है। जिनके आधार पर गुरु पूजा होती है। सरस्वती का एक रूप वेद माता गायत्री भी है। ''सरस्वती'' हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण पत्रिका रही है। यह सच है ''सरस्वती'' के माध्यम से महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य को नवबोध दिया। इसकी प्रेरणा पाकर कालजयी रचनाएँ लिखी गईं। आज भी यह पत्रिका साहित्य की प्रेरणा है।

आज आवश्यकता है साहित्य प्रकाश की ऐसी पत्रिकाओं के दीपकों की, अर्थ रूपी धृत की जिससे अधिक से अधिक प्रकाश फैल सके।

कविता

ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' आर.ई.एस.
सिरसा, हरि.)

दीपावली

मिट्टी के दियें जलें, दीपों का त्यौहार।
महके आंगन दीन का, खुशियाँ अपरम्पार।।

लड़ियाँ त्यागें चीन की, करें देश से प्यार।
पावन मिट्टी देश की, हमको रही पुकार ।।

घोर अमावस रात है, फैला है अँधियार।
दीप जलाओ प्रेम के, रोशन हो घर–बार।

प्रदूषण जिससे फैलता, करो ना ऐसे काम।
बम्म–पटाखे जेट का, करदो चक्का जाम।।

खूब चलाओ फुलझड़ी, रोशन हो परिवार।
नाचे खुशियाँ झूम कर, जीवन सुख का सार।।

रावण पर पाकर विजय, घर लौटे थे राम।
उनके स्वागत में जले, दीपक थे अभिराम।।

सांस्कृतिक यह पर्व है,अब भी इसकी धूम।
भाईचारा फैलता ,सद्भावों को चूम।।

नारी लक्ष्मी रूप है,उसको दें सम्मान।
मानो पूजन हो गया,लक्ष्मी जी का मान।

मुखिया घर का गणेश है ,दें हम आदर–मान।
गणेश पूजन हो गया, सुधिजन लेओ जान।।

खील–गंडेरी रेवड़ी, और मधुर पकवान।
बाँटो आस–पड़ोस में, यह है पर्व महान।।

उजाले बाहर ही नहीं, भीतर भी हो

ललित गर्ग
दिल्ली

दीपावली एक लौकिक पर्व ही नहीं, आध्यात्मिक भी पर्व है। यह केवल बाहरी अंधकार को ही नहीं, बल्कि भीतरी अंधकार को मिटाने का पर्व भी है। हम भीतर में धर्म का दीप जलाकर मोह, माया, लोक और मूर्च्छा के अंधकार को दूर करें, मन को मांजें एवं आत्मा को उजाले तभी दीपावली मनाने की वास्तविक सार्थकता सिद्ध होगी। दीपावली के मौके पर सभी आमतौर से अपने घरों की साफ–सफाई, साज–सज्जा और उसे संवारने–निखारने का प्रयास करते हैं। उसी प्रकार अगर भीतर चेतना के आँगन पर जमे कर्म के कचरे को बुहारकर साफ किया जाए, उसे संयम से सजाने–संवारने का प्रयास किया जाए और उसमें आत्मा रूपी दीपक की अखंड ज्योति को प्रज्वलित कर दिया जाए तो मनुष्य शाश्वत सुख, शांति एवं आनंद को प्राप्त हो सकता है। तभी कॉरोना रूपी महामारी के घावों को भर सकेंगे।

हम हर वर्ष दीपावली मनाते हैं। हर घर, हर आंगन, हर बस्ती, हर गाँव में सबकुछ रोशनी से जगमगा जाया करता है। आदमी मिट्टी के दीये में स्नेह की बाती और परोपकार का तेल डालकर उसे जलाते हुए भारतीय संस्कृति को गौरव और सम्मान देता है, क्योंकि दीया भले मिट्टी का हो मगर वह हमारे जीने का आदर्श है, हमारे जीवन की दिशा है, संस्कारों की सीख है, संकल्प की प्रेरणा है और लक्ष्य तक पहुँचने का माध्यम है। दीपावली मनाने की सार्थकता तभी है जब भीतर का अंधकार दूर हो। भगवान महावीर ने दीपावली की रात जो उपदेश दिया उसे हम प्रकाश पर्व का श्रेष्ठ संदेश मान सकते हैं। क्योंकि यह सन्देश मानव मात्र के आंतरिक जगत को आलोकित करने वाला है। तथागत बुद्ध की अमृत वाणी 'अप्पदीपो भव' अर्थात 'आत्मा के लिए स्वयं दीपक बन' वह भी इसी भावना को पुष्ट कर रही है। इतिहासकार कहते हैं कि जिस दिन ज्ञान की ज्योति लेकर नचिकेता यमलोक से मृत्युलोक में अवतरित हुए वह दिन भी दीपावली का ही दिन था।

यह बात सच है कि मनुष्य का रूझान हमेशा प्रकाश की ओर रहा है। अंधकार को उसने कभी न चाहा न कभी माँगा। 'तमसो मा ज्योतिगर्मय' भक्त की अंतर भावना अथवा प्रार्थना का यह स्वर भी इसका पुष्ट प्रमाण है। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल इस प्रशस्त कामना की पूर्णता हेतु मनुष्य ने खोज शुरू की। उसने सोचा कि वह कौन–सा दीप है जो मंज़िल तक जाने वाले पथ को आलोकित कर सकता है। अंधकार से घिरा हुआ आदमी दिशाहीन होकर चाहे जितनी गति करें, सार्थक नहीं हुआ करती। आचरण से पहले

ज्ञान को, चारित्र पालन से पूर्व सम्यक्त्व को आवश्यक माना है। ज्ञान जीवन में प्रकाश करने वाला होता है। शास्त्र में भी कहा गया– 'नाणं पयासयरं' अर्थात ज्ञान प्रकाशकर है।

हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ है। वह ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है। ज्ञान दुनिया का सबसे बड़ा प्रकाश दीप है। जब ज्ञान का दीप जलता है तब भीतर और बाहर दोनों आलोकित हो जाते हैं। अंधकार का साम्राज्य स्वतः समाप्त हो जाता है। ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता केवल भीतर के अंधकार मोह–मूर्च्छा को मिटाने के लिए ही नहीं, अपितु लोभ और आसक्ति के परिणामस्वरूप खड़ी हुई कॉरोना महामारी, पर्यावरण प्रदूषण, युद्ध एवं आतंकवाद की स्थितियों और अनैतिकता जैसी बाहरी समस्याओं को सुलझाने के लिए भी ज़रूरी है। युद्ध, आतंकवाद, भय, हिंसा, प्रदूषण, कॉरोना महाव्याधि, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, ओज़ोन का नष्ट होना आदि समस्याएँ इक्कीसवीं सदी के मनुष्य के सामने चुनौती बनकर खड़ी हैं। आखिर इन समस्याओं का जनक भी मनुष्य ही तो है। क्योंकि किसी पशु अथवा जानवर के लिए ऐसा करना संभव नहीं है। अनावश्यक हिंसा का जघन्य कृत्य भी मनुष्य के सिवाय दूसरा कौन कर सकता है? युद्ध एवं आतंकवाद की समस्या का हल तब तक नहीं हो सकता जब तक मनुष्य अनावश्यक हिंसा को छोड़ने का प्रण नहीं करता।

मोह का अंधकार भगाने के लिए धर्म का दीप जलाना ही होगा। जहाँ धर्म का सूर्य उदित हो गया, वहाँ का अंधकार टिक नहीं सकता। एक बार अंधकार ने ब्रह्माजी से शिकायत की कि सूरज मेरा पीछा करता है। वह मुझे मिटा देना चाहता है। ब्रह्माजी ने इस बारे में सूरज को बोला तो सूरज ने कहा–मैं अंधकार को जानता तक नहीं, मिटाने की बात तो दूर, आप पहले उसे मेरे सामने उपस्थित करें। मैं उसकी शक्ल–सूरत देखना चाहता हूँ। ब्रह्माजी ने उसे सूरज के सामने आने के लिए कहा तो अंधकार बोला–मैं उसके पास कैसे आ सकता हूँ? अगर आ गया तो मेरा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

जीवन का वास्तविक उजाला लिबास नहीं है, बल्कि नैतिक एवं चारित्रिक गुण हैं। वास्तविक उजाला तो मनुष्य में व्याप्त उसके आत्मिक गुणों के माध्यम से ही प्रकट हो सकता है। जीवन की सार्थकता और उसके उजालों का मूल आधार व्यक्ति के वे गुण हैं जो उसे मानवीय बनाते हैं, जिन्हें संवेदना और करुणा के रूप में, दया, सेवा–भावना, परोपकार के रूप में हम देखते हैं। असल में यही गुणवत्ता उजालों की बुनियाद है, नींव है जिस पर खड़े होकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाता है। जिनमें इन गुणों की उपस्थिति होती है उनकी गरिमा चिरंजीवी रहती है। समाज में उजाला फैलाने के लिये इंसान के अंदर इंसानियत होना ज़रूरी है। जिस तरह दीप से दीप जलता है, वैसे ही प्यार देने से प्यार बढ़ता है और समाज में प्यार और इंसानियत रूपी उजालों की आज बहुत ज़रूरत है।

जीवन के ह्रास और विकास के संवादी सूत्र हैं– अंधकार और प्रकाश। अंधकार स्वभाव नहीं, विभाव है। वह प्रतीक है हमारी वैयक्तिक दुर्बलताओं का,

अपाहिज सपनों और संकल्पों का। निराश, निष्क्रिय, निरुद्देश्य जीवन शैली का। स्वीकृत अर्थशून्य सोच का। जीवन मूल्यों के प्रति टूटती निष्ठा का। विधायक चिन्तन, कर्म और आचरण के अभाव का। अब तक उजालों ने ही मनुष्य को अंधेरों से मुक्ति दी है, इन्हीं उजालों के बल पर उसने ज्ञान को अनुभूत किया अर्थात् सिद्धांत को व्यावहारिक जीवन में उतारा। यही कारण है कि उसका वजूद आजतक नहीं मिटा। उसकी दृष्टि में गुण कोरा ज्ञान नहीं है, गुण कोरा आचरण नहीं है, दोनों का समन्वय है। जिसकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता वही समाज में आदर के योग्य बनता है।

हम उजालों की वास्तविक पहचान करें, अपने आप को टटोलें, अपने भीतर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि कषायों को दूर करें और उसी मार्ग पर चलें जो मानवता का मार्ग है। हमें समझ लेना चाहिए कि मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है, वह बार-बार नहीं मिलता। समाज उसी को पूजता है जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है। इसी से गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है-'परहित सरिस धरम नहीं भाई'। स्मरण रहे कि यही उजालों को नमन है और यही उजाला हमारे जीवन की सार्थकता है। जो सच है, जो सही है उसे सिर्फ आँख मूंदकर मान नहीं लेना चाहिए। खुली आंखों से देखना परखना भी चाहिए। प्रमाद टूटता है तब व्यक्ति में प्रतिरोधात्मक शक्ति जागती है। वह बुराइयों को विराम देता है। इस पर्व के साथ जुड़े मर्यादा पुरुषोत्तम राम, भगवान महावीर, दयानंद सरस्वती, आचार्य तुलसी आदि महापुरुषों की आज्ञा का पालन करके ही दीपावली पर्व का वास्तविक लाभ और लुत्फ उठा सकते हैं। संसार का प्रत्येक मनुष्य उनके अखंड ज्योति प्रकट करने वाले संदेश को अपने भीतर स्थापित करने का प्रयास करें, तो संपूर्ण विश्व में, निरोगिता, अमन, अयुद्ध, शांति और मैत्री की स्थापना करने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती है तथा सर्वत्र खुशहाली देखी जा सकती है और वैयक्तिक जीवन को प्रसन्नता और आनंद के साथ बिताया जा सकता है।

दीपावली पर्व की सार्थकता के लिए ज़रूरी है, दीये बाहर के ही नहीं, दीये भीतर के भी जलने चाहिए। क्योंकि दीया कहीं भी जले, उजाला देता है। दीये का संदेश है-हम जीवन से कभी पलायन न करें, जीवन को परिवर्तन दें, क्योंकि पलायन में मनुष्य के दामन पर बुज़दिली का धब्बा लगता है, जबकि परिवर्तन में विकास की संभावनाएँ जीवन की सार्थक दिशाएँ खोज लेती हैं। असल में दीया उन लोगों के लिए भी चुनौती है जो अकर्मण्य, आलसी, निठल्ले, दिशाहीन और चरित्रहीन बनकर सफलता की ऊँचाइयों के सपने देखते हैं। जबकि दीया दुर्बलताओं को मिटाकर नई जीवनशैली की शुरुआत का संकल्प है।

दीपावली पर समृद्धि का फूहड़- प्रदर्शन !

गिरीश पंकज
रायपुर (छ. ग.)

समाज में कुछ धनपतियों की अकड़ देखते ही बनती है। अकड़ दिखाने वालों में चंद सेठों के अलावा माले–ए–मुफ़्त उड़ाने वाले कुछ और लोग भी हैं। कुछ पैसेवाले खासकर त्यौहारों के समय जब अपनी आर्थिक–समृद्धि का जैसा फूहड़ प्रदर्शन करते हैं, उसे देख कर खीझ उत्पन्न होने लगती है। लेकिन ऐसे अश्लील किस्म के दृश्यों को देख हम–आप कुछ कर भी तो नहीं सकते क्योंकि अंततः दौलत उनकी है न! वे उसका जैसा चाहे उपयोग करें। हम कौन होते हैं उन्हें रोकने –टोकने वाले! यह और बात है कि हम चिंतन ज़रूर करते हैं कि उनके पास जो दौलत है, वह आकाश से तो नहीं उतरी है। वह इसी समाज से अर्जित की हुई है। यह उन लोगों के हिस्से की आभा है जो श्रमजीवी कहलाते हैं। ऐसे लाखों लोगों से ही अकसर नाजायज़ मुनाफा अर्जित करने के बाद ही उनके पास समृद्धि आती है। इसी परजीवी समृद्धि का प्रदर्शन ये लोग मौके–बे–मौके करते रहते हैं। पिछली दिवाली की बात मुझे याद आ रही है। कॉलोनी में अति संपन्न व्यक्ति रहते हैं। हर साल दिवाली के दिन अपने घर को तरह तरह की बहुरंगी झालरों से सजाया करते हैं और रात को लक्ष्मी पूजन के बाद हजारों रुपये के पटाखे जलाकर स्वाहा कर देते हैं। छोटी दिवाली के दिन से ही उनके घर के बच्चे पटाखे छोड़ने लगते हैं। लोग अपने–अपने घरों के भीतर रहते हैं लेकिन लगातार पटाखों की आवाज़ सुनकर समझ जाते हैं कि सेठजी सपरिवार दिवाली मना रहे हैं। उस दिवाली की रात मैंने देखा, जब सेठ जी बच्चों के साथ पटाखे जला रहे थे, तब मलिन बस्ती के कुछ फटेहाल बच्चे वहाँ खड़े होकर अति प्रसन्न भाव से यह तमाशा देखने आ कर खड़े हो गए थे। जब पटाखे फूटते, तो गरीब बच्चे तालियाँ बजाते और 'होय–होय' की आवाज़ें निकालते। लेकिन धनपति जी को इन बच्चों का वहाँ खड़ा रहना और प्रसन्नताभरी आवाज़ लगाना नागवार गुज़र रहा था। उन्होंने फौरन आगे बढ़ कर बच्चों को फटकार लगाई। बुरी तरह से दुत्कारते हुए कहा, चलो, भागो यहाँ से। बच्चे घबरा कर किनारे हो गए लेकिन जैसे ही पटाखे छूटे, बच्चे फिर निकट आकर खड़े हो गए। सेठ जी के मन में पता नहीं उस दिन क्या चल रहा था। उनका परिवार उधर पटाखे छोड़ रहा था, इधर सेठ जी बच्चों के पास पहुँचकर और उन्हें झापड़ रसीद कर रहे थे और चीख रहे थे, अबे, भागो यहाँ से, नहीं तो तुम लोगों पर भी पटाखे छोड़ दूँगा। समझे न ! इस बार सभी बच्चे भयभीत हुए और भाग खड़े हुए। क्योंकि वह और अधिक थप्पड़ नहीं खाना चाहते थे। फिर भी बच्चे तो बच्चे ही होते हैं। वे सब बहुत दूर खड़े होकर आतिशबाजी का आनन्द लेने लगे। पटाखा छूट रहा हो और कोई बच्चा आनंदित ना होना चाहे, यह कैसे संभव है? यह दृश्य मैं भी देख रहा था, और मन –ही – मन पीड़ा से भी भर रहा था। मेरे मन में गुस्सा भी उठ रहा था। एक बार तो सोचा, जाकर सेठ से भिड़ जाऊँ और बोलूँ कि उनका व्यवहार उचित नहीं था, लेकिन अपने स्वभाव को अब शांत कर चुका हूँ। क्योंकि अगर समझाने भी जाता तो बहुत सम्भव है कुछ कड़वी बात कह

देता। शायद मारपीट की नौबत भी आ सकती थी। लेकिन मुझे लगा कि त्यौहारों के दिन इस तरह की कोई हरकत ठीक नहीं। क्योंकि ऐसा होने पर मेरा और सेठ का परिवार पुलिस केस में उलझ कर रह जाएगा। एक दो बार ऐसी समझाइश की परिणति पुलिस थाने तक भी पहुँच चुकी थी। यही सोच कर मैं खामोश रह गया। मगर यह चिंतन चलता रहा कि यह कैसा सेठ है जो किसी गरीब की खुशी भी बर्दाश्त नहीं कर सकता! वे गरीब बच्चे सेठ से पटाखे तो नहीं मांग रहे थे। उनके घर के सामने खड़े ही थे। वे सब कुछ दूर से खड़े होकर सिर्फ तमाशा ही देख रहे थे लेकिन सेठ जी उनकी यह खुशी भी हज़म नही कर पा रहे थे। कमाल है। क्या यह सचमुच सेठ है या दुनिया का सबसे विपन्न आदमी!

उसी रात मैंने कुछ समय बाद ही एक सुखद दृश्य देखा कि एक दफ्तर में काम करने वाला एक बाबू भी अपनी हैसियत के अनुरूप खरीद कर लाए गए पटाखों के साथ दिवाली मना रहा था। वह भी अपने बच्चों के साथ घर के बाहर आतिशबाज़ी कर रहा था। सेठ द्वारा दुत्कारे जाने के बाद वे बच्चे वहाँ जाकर खड़े हो गए थे। बाबू ने जब उन नंगे पांव बच्चों को देखा, तो वह फौरन उनके पास गया और उन्हें फुलझड़ी के दो पैकेट देते हुए कहा, हैप्पी दिवाली, बच्चों। सारे बच्चे प्रसन्न हो गए और वहीं बाबू के घर के बाहर ही जल रहे दीपों से जलाकर 'होय होय' कहते हुए फुलझड़ियाँ छोड़ने लगे।

मैं पटाखे नहीं छोड़ता इसलिए उन बच्चों को मैं पटाखे नहीं दे सका, अलबत्ता घर में बनी कुछ मिठाइयाँ एक पैकेट में डालकर जरूर भेंट में दी। कुछ देर बच्चे प्रसन्नता का भाव लिए अपने-अपने घरों की ओर लौट गए। लेकिन मैं यही चिंतन करता रहा कि आखिर अमीर है कौन? क्या वह करोड़पति जो गरीब बच्चों की खुशियाँ भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था? या फिर वह बाबू, जो अपनी सीमित तनख्वाह में से अपना घर चलाता है मगर चंद गरीब बच्चों की खुशियों के लिए अपने बच्चों के हिस्से की फुलझड़ियाँ भी उन्हें भेंट कर देता है?

उजास बाँटें, छीने नहीं

दिवाली भले ही अंधेरे से उजाले का पर्व हो लेकिन मैंने यह साफ-साफ महसूस किया है कि जिनके यहाँ पर्याप्त उजाला होता है वे और अधिक उजाला संचित करना चाहते हैं। भले ही वह किसी के हिस्से का ही उजाला हो,और उसे छीनना पड़े लेकिन वे संचित करके रख लेना चाहते हैं। उधर जिनके यहाँ अभिशप्त अंधेरा है वे एक दीपक जलाकर भी संतुष्ट हो लेते हैं। वे अंतर्मन में एक दीये से ही खुशियों का उजाला भरकर प्रफुल्लित हो लेते हैं। अनेक धनपति ऐसे ही हैं जो सारी खुशियाँ अपनी तिजोरी में कैद करके रख लेना चाहते हैं। वे किसी भी निर्धन को जाकर खुशियाँ नहीं बांट सकते। किसी सामाजिक कार्यों में अपना योगदान नहीं करना चाहते। वे सिर्फ अपने में मगन रहते हैं और नंबर दो की कमाई दिवाली जैसे पर्व पर लुटा देते हैं। दिवाली की रात को जब नीरव सन्नाटा पसरने लगता है, अनेक घरों के दीप बुझने लगते हैं, तब ये लोग पटाखों की लड़ियाँ जलाते हैं, ताकि दूर-दूर तक उनके वैभव की क्रूर आवाज़ गूंजती रहे। उनको इस बात से लेना-देना नहीं रहता कि पटाखे प्रदूषण

फैलाते हैं, हवा को ज़हर से भर देते हैं। उनको तो बस इसी में मज़ा आता है कि आज हमने पटाखा चलाने का रिकॉर्ड ब्रेक कर दिया।

हमारे घर के पास ही इसी निर्मम सोच वाले एक सेठ जी को मैं वर्षों से जानता हूँ। वे धनसंचय के मामले में बेहद निर्मम हैं। वर्षों से इसी समाज में रह रहे हैं लेकिन कभी किसी के साथ कोई सरोकार रखने की उन्होंने कोशिश नहीं की। उनकी संतानें भी उन्हीं की परंपरा को निभाते हुए बड़ी हुई। खाते पीते संपन्न घर के लोग समाज में रहते हुए भी असामाजिक बने रहे । कभी किसी सामाजिक आयोजनों में कोई चंदा नहीं दिया। हाँ चालाक बहुत हैं। जैसे जो उनका नुकसान कर सकते है, उनको 'लिफाफे' देकर पसंद करने की कला उन्हें खूब आती है। लेकिन किसी गरीब के आँसू पोंछने के लिए उनकी आत्मा तैयार नहीं होती। देखने वाले देखते रहे हैं कि उनके दर पर आने वाला कोई भी भिक्षुक अपमानित होकर ही लौटता है । उनका परिवार किसी को कुछ नहीं देना चाहता। हालत यह है कि उनके आंगन में लगे हुए पेड़ों के फल भी मजाल है कोई तोड़ ले। जबकि यह सच्चाई है कि आंगन के पेड़ उन्होंने नहीं लगाए। वे उनके बाप दादाओं के ज़माने के पेड़ हैं लेकिन उन्हें अपनी संपत्ति समझ कर वे एक–एक फल पर अपना अधिकार बनाए रखना चाहते हैं। और भूले भटके कभी कभी फल तोड़ने की नादानी करने वाले मासूम बच्चों को गालियाँ देकर भगा देते हैं।

ऐसे आत्म केंद्रित और अनुदारवादी धनपतियों को जब मैं देखता हूँ तो आश्चर्यचकित हो जाता हूँ। सोचता हूँ, कैसे ये लोग मनुष्य योनि में आकर शान से जी रहे हैं। मनुष्यता की बुनियादी विशेषताओं से ये लोग क्यों इतने दूर हो गए हैं? क्या इन्हें बचपन से उदारता के कोई संस्कार नहीं मिले? क्या कभी उन्होंने रामचरितमानस की ये पंक्तियाँ नहीं पढ़ी कि परहित सरिस धर्म नहिं भाई परपीड़ा सम नहिं अधमाई? क्या इन्होंने यह दोहा कभी नहीं सुना कि पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानो काम? हमारे अनेक महापुरुषों ने, महान कवियों ने आदमी को इंसान बनाने के लिए न जाने कितनी अद्भुत रचनाएं कीं लेकिन क्या कारण है कि समाज के वर्ग पर इसका कोई असर नहीं हुआ। हिंसा और बलात्कार की वारदातें भी निरंतर बढ़ रही है। जैसे–जैसे हम तथाकथित आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं, वैसे–वैसे समाज का एक वर्ग निर्मम होता चला जा रहा है। इस वर्ग की कोई विशेष जाति या कोई विशेष धर्म नहीं होता। ये किसी भी जाति या धर्म के लोग हो सकते हैं। लेकिन इनकी फितरत में अनुदारता, कट्टरता भरी रहती है। ये निपट आत्म केंद्रित होते हैं। मैं–मैं और सिर्फ मैं की भावना इनके जीवन का लक्ष्य होती है। यही कारण है कि उनके घरों में अनेक तरह के धर्म ग्रंथ होने के बावजूद वे वहाँ से कुछ अर्जित नहीं कर पाते। उनके जीवन में नैतिकता समाहित नहीं हो पाती क्योंकि उनके जीवन का चक्र (या कहें कि दुष्चक्र) अर्थ के इर्द–गिर्द ही मंडराता रहता है। ऊपर जिस सेठ की बात मैंने कही, उनका घर बड़ा भव्य है, विशाल है, लेकिन हृदय बहुत संकुचित। घर के भीतर उन्होंने एक सुंदर मंदिर भी बना रखा है, जहाँ कुछ धार्मिक पुस्तकें भी रखी हुई हैं। उनके घर के लोग नियमित रूप से भगवान को प्रणाम करते हैं

लेकिन उनकी आत्मा धर्म–कर्म से दूर ही रहती है। बहुत पहले मैंने किसी कवि की पंक्तियाँ पढ़ी थीं, 'काफी धोखाधड़ी हुई है /किंतु इमारत खड़ी हुई है/ राम तुम्हारी मर्यादा बस/ पूजा घर में पड़ी हुई है।' तो ऐसे अनेक धनपतियों का यही हाल है। श्रेष्ठ ग्रंथों के होने के बावजूद वे जीवन भर अधार्मिक बने रहते हैं क्योंकि उन्होंने पूजाघर में रखे गये धर्म ग्रंथों का पारायण ही नहीं किया। अर्थ केंद्रित मानसिकता ने उन्हें धन पशु के रूप में तब्दील कर दिया। यह एक सच्चाई है कि समाज में ऐसे अनेक सम्पन्न लोग हैं जो उदार होकर अपने हिस्से की कुछ खुशियाँ समाज को भी बाँटने लगे तो यह समाज खुशहाल हो जाए। गरीबी खत्म हो सकती है। लेकिन जब हम केवल अपने ही आंगन में दीप जलाना चाहते हैं तो फिर स्वाभाविक है कि दूसरी जगह अंधेरा पसरा ही रहेगा। काश, दिवाली का उजाला संकुचित मानसिकता के धन पतियों को यह सोचने पर बाध्य कर कर दे कि ईश्वर ने हमें जितना वैभव दिया है, उसका एकांश भी हम वंचितों के तक पहुँचा सके, तो जीवन में स्थाई रूप से आत्मा में एक दीप प्रज्वलित होता रहेगा।

रागिनी स्वर्णकार(शर्मा)
इंदौर (मध्य प्रदेश)

दीपोत्सव ये.....!

सरिता की बहती सरसधार
तन्वंगी का दीपोत्सव ये
बिंबित दीपों में नेहधार
मादक मोहक अरुणोत्सव ये

स्वप्न सुसज्जित से नयनों में
प्रीत गीत मधुरे बयनों में
दीपशिखा का दिल छलका हे
नेहिल नूतन प्रणयोत्सव ये

उजली उजली साँसें सुरभित
खुलते से अवगुंठन मन के
पलकों की कोरों में कणिका
विहँसित विरहित प्राणोत्सव ये

सुलझे सुलझे मोह जाल अब
खिलती मधुरिम सी मुस्कानें
विस्तृत हो अस्तित्व समाया
नेह समर्पित त्यागोत्सव ये

उत्सुक नयना बाट निहारे
कूल दुकूल उड़े, शरमाये
दीपदान संग प्रीतदान में
कब बदलेगा मिलनोत्सव ये !

विजय कनौजिया,
अम्बेडकर नगर, उ० प्र०

मगर साथ अब मैं निभाऊँगा कैसे

नहीं चाहते बात उनसे करूँ मैं
नहीं चाहते पास उनके रहूँ मैं
बदल जाते हैं आजकल लोग ऐसे
करूं बात अब अपनेपन की मैं कैसे ?

वे ही हैं जिन्हें दूर जाना नहीं था
कभी दूसरा घर बसाना नहीं था
मगर घर पुराना नहीं अब है भाता
बदल अब लिया है मकां देखो कैसे ?

हुआ घोंसला प्रेम का अब वीराना
नहीं रास आता है अब गुनगुनाना
सूनी पड़ी प्रेम नगरी हमारी
इसे अब दुबारा बसाऊं मैं कैसे ?

बदल सी गई प्रेम की रूपरेखा
नहीं था कभी उनका ये रूप देखा
भुलाना था आसान उनके लिए मैं
मगर उनको मैं भी भुलाऊँगा कैसे ?

उन्हें थी हमारी ज़रूरत यहीं तक
बनाया पथिक प्रेम पथ पर यहीं तक
निभाया सदा साथ उनका था मैंने
मगर साथ अब मैं निभाऊँगा कैसे ?
मगर साथ अब मैं निभाऊँगा कैसे ?

क्यों मनाया जाता हैं दिवाली का पर्व

कार्तिक मास की अमावस्या को दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। पूरे देश में इसे प्रकाश और रोशनी के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। दिवाली दरअसल एक दिन का नहीं, बल्कि ५ दिनों का त्योहार है। धनतेरस से ही इस त्यौहार की शुरुआत हो जाती है। धनतेरस, नरक चतुदर्शी, अमावस्या, शुक्ल प्रतिपदा और भाई दूज तक दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। दीप जलाते, पटाखें फोड़ते या एक दूसरे से मिलते वक्त अक्सर हमें ख्याल आता है कि आखिर दिवाली क्यों मनाई जाती है? इसका महत्त्व क्या है और क्या है? इसके पीछे की कहानी? हम आपको बताने जा रहे हैं दिवाली के बारे में कुछ प्रचलित कहानियाँ...

कथा-१: भगवान राम जब रावण को मारकर अयोध्या नगरी वापस आए तब नगरवासियों ने अयोध्या को साफ-सुथरा करके रात को दीपों की ज्योति से दुल्हन की तरह जगमगा दिया था। तब से आज तक यह परंपरा रही है कि कार्तिक अमावस्या के गहन अंधकार को दूर करने के लिए रोशनी के दीप प्रज्वलित किए जाते हैं।

कथा-२: जब देवताओं और राक्षसों द्वारा समुद्र मंथन चल रहा था तब कार्तिक अमावस्या पर देवी लक्ष्मी क्षीर सागर (दूध का लौकिक सागर) से ब्रह्माण्ड में आई थी। तभी से माता लक्ष्मी के जन्मदिन की उपलक्ष्य में दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है।

कथा-३: दिवाली के एक दिन पहले नरक चतुर्दशी मनाते हैं, क्योंकि भगवान श्री कृष्ण ने इस दिन नरकासुर का वध किया था। नरकासुर एक पापी राजा था, यह अपने शक्ति के बल से देवताओं पर अत्याचार करता था और अधर्म करता था। उसने सोलह हजार कन्याओं को बंदी बनाकर रखा था। इसलिए भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध किया। बुराई पर सत्य की जीत पर लोगों ने अगले दिन उल्लास के साथ दीपक जलाकर दीपावली का त्यौहार मनाया।

लक्ष्मी जी को धन की देवी और गणेश भगवान बुद्धि के देवता हैं। इस दिन इनके पूजन से बुद्धि और धन की प्राप्ति होती है क्योंकि बुद्धि के बिना धन का कोई महत्व नहीं होता। इसीलिए कहा जाता है कि माँ लक्ष्मी के घर आने के बाद अगर बुद्धि का उपयोग नहीं किया जाए तो लक्ष्मी जी को रोक पाना मुश्किल हो जाता है।

इसीलिए दिवाली की शाम को माँ लक्ष्मी के साथ-साथ गणेश जी की प्रतिमा रखकर दोनों की साथ में पूजा की जाती है। इस दिवाली आप भी भगवान गणेश और माँ लक्ष्मी जी की विधिवत पूजा करके अपने घर में धन, बुद्धि और यश का वास करवा सकते हैं।

परंपरागत दीपावली : आज की आवश्यकता

डॉ. अलका जैन
'आराधना'
जयपुर

दीपावली का त्यौहार भारत की आत्मा की उत्सवमय अभिव्यक्ति है। यह एकमात्र त्यौहार है जिसे पूरे भारत में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। पारंपरिक अर्थों में दिवाली के निहितार्थ ये हैं कि लंका के राजा रावण के वध के पश्चात् श्री राम अपनी पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे और इसी उपलक्ष्य में अयोध्यावासियों ने खुशियाँ मनाई थीं, अपने घरों को सजाया था, पूरी नगरी को सजाया था और दीपमालाओं से रोशन कर दिया था। आज इस त्यौहार के स्वरूप में बहुत बदलाव आया है।

भौतिकतावाद की लहर ने इसे सिर्फ और सिर्फ बाज़ारवाद का प्रतीक बना दिया है। आज दीयों की जगह चाइनीज़ लाइटों ने ले ली है । दीये तो नाम मात्र की संख्या में प्रज्वलित किए जाते हैं । मिठाइयों के स्वाद पर भी बाज़ार हावी हो गया है। दीयों की रोशनी की जगह पटाखों की चिंगारी आँखों को सुहाने लगी है। परिवार टूटकर एकल हो गए हैं । त्यौहारों की मूल भावना ही खत्म हो गई है। ऐसी विकट परिस्थितियों में पिछले १८ माह से देश और दुनिया को कॉरोना नामक महामारी ने हिला रखा है। कोविड-१९ एक ऐसा वाइरस जो सीधा फेफड़ों पर अटैक करता है और ऐसी स्थिति में दिवाली के समय होने वाला प्रदूषण जानलेवा हो सकता है। ऐसी स्थिति में आज और भी अनिवार्य हो गया है कि हम दिवाली को पारंपरिक तरीकों से मनाएं। हमें फिर से माटी की महक की ओर लौटना होगा। हमें

अपने घरों को दीयों से रोशन करना होगा। हमें बाहर की मिलावटी मिठाइयों के बजाय घर में पकवान बनाकर ज़्यादा खुशी होगी क्योंकि इससे हम संक्रमण से मुक्त रह सकेंगे ।

आज सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि हम प्रदूषण को रोकें, अनावश्यक बाहर ना निकलें, वाहनों का गैरज़रूरी प्रयोग ना करें और पटाखों का प्रयोग तो सर्वथा वर्जित हो जाना चाहिए । मनुष्य होने के नाते यह हमारा दायित्व है कि हम एक-दूसरे के साथ खड़े हों और मानव के अस्तित्व पर आए इस संकट का मुकाबला करें। यही आज के युग की मांग है।

दिवाली का त्यौहार लक्ष्मी पूजन का त्यौहार है। लक्ष्मी के संग गणपति हैं जो आदिदेव हैं, उनके साथ सरस्वती हैं । जी हाँ .... लक्ष्मी की आराधना ज्ञान के बिना अधूरी है ... विवेक के बिना अधूरी है। हम यदि अपना संयम खो कर आचरण करते हैं तो किसी भी तरह की पूजा-अर्चना फलदाई नहीं होगी। ऐसी स्थिति में हमें फिर से परिवार के साथ मिलकर ये त्यौहार मनाने होंगे। हमें याद करना होगा कि भारत की उन परंपराओं को .... जिनके कारण भारत विश्व गुरु कहलाता है। आज हम दीपावली के इस त्यौहार को तकनीक की अति से मुक्त करके फिर से भारतीयता की ओर मोड़ सकते हैं। हाँ... इसे 'हैप्पी दीवाली' नहीं 'दीपावली मंगलमय हो' समझ कर मनाना होगा। अपनी संस्कृति, अपनी जड़ों की ओर लौटना हमें विकास की नई राह दिखाएगा जो सचमुच आत्मनिर्भर भारत की नींव रखेगा।

धनतेरस

डॉ सरला सिंह 'स्निग्धा'
दिल्ली

शाम का समय था, सुगन्धित पवन बह रही थी। चारों तरफ सूर्यास्त के समय की मनभावनी लालिमा छायी हुई थी। सभी पक्षी वृन्द अपने अपने घोंसले में जाने के लिए अपनी उड़ान भर चुके थे । समस्त पशु गण भी अपने अपने घरों की ओर जाने के लिए उन्मुख हो चुके थे। रजनी डूबते हुए अरुण देव को देखकर सोच रही थी, सूर्य की शोभा डूबते समय भी अनुपम होती है। कितनी शीतलता बिखेरती हैं उनकी किरणें। हमें भी दुख सुख दोनों में समान भाव रखना चाहिए। यदि आज दुख है तो कल सुख रूपी सुबह भी ज़रूर होगी ।

रजनी, रजनी कहाँ हो? उसी समय सास ने आवाज़ लगाई।

जी माँजी अभी आयी। कहते हुए वह घर के अन्दर चली गई।

अपना सब सामान रख लिया है, सुबह जल्दी ही निकलना है। ठंडे ठंडे में हम लोग बनारस पहुँच जायेंगे। सास ने रजनी से कहा।

जी माँ जी, सब सामान ठीक से रख लिया है। रजनी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। शादी के करीब दस महीने बाद उसको गाँव से शहर में अपने पति के पास जाने का मौका मिल रहा था। बनारस में ही उसके ससुर नौकरी करते थे तथा उनके साथ रहते हुए उसके पति नौकरी की तलाश में थे। बनारस में ही दो कमरे का एक घर लेकर सास ससुर तथा उसके पति रहा करते थे। करीब दस माह बाद जब उन्होंने देखा कि बहू के पांव भारी हैं तो उन्होंने उसे अपने साथ शहर ले जाने का निर्णय किया। वह इसलिए भी कि ज़रूरत पड़ने पर उन्हें डॉक्टरी सुविधा ठीक से मिल सके। हंसी-खुशी सभी शहर आ गये।

विनय की अभी नौकरी तो लगी नहीं थी सो उसका काम था सुबह खा-पीकर निकल जाना, काम की तलाश करना तथा शाम को दोस्तों के साथ मटरगस्ती करना। रजनी घर का काम-धाम निपटाकर कुछ समय सास के साथ गुज़ारती फिर अपने कमरे में चली जाती। वहाँ कुछ देर आराम करने के बाद फिर शाम का काम शुरू हो जाता। रात में विनय बहुत देर से आता तो उसका गुस्सा बढ़ जाता पर सास ससुर के आगे वह उसे कुछ भी बोलना उचित नहीं समझती थी। उसे लगता यह काम माता पिता का है कि अपने लड़के पर निगाह रखें।

कुछ महीने बाद दीपावली का समय नज़दीक आया। धनतेरस से पहले ही सास व ससुर दोनों ही खेत की बुआई आदि के लिए गाँव जाने की तैयारी करने लगे। सास ने जाते जाते बहू को ढेर सारी हिदायतें दे डालीं,रजनी ठीक से रहना। ज़्यादा देर तक खड़ी मत होना और कुछ भारी सामान मत उठाना। मैं जल्दी ही आ जाऊँगी।

दीपावली के दिन मैं आ जाऊँगी। बहुत ही ध्यान से रहना।

रजनी ने सास को आश्वस्त करते हुए हामी भरी, जी माँ जी आप लोग निश्चिंत होकर गाँव जाइए, मैं अपना व घर का पूरा ध्यान रखूँगी।

सब कुछ समझा बुझाकर सास बड़े ही बेमन से ससुर जी के साथ गाँव चली गई। कुछ दिनों बाद धनतेरस का दिन आया। आज विनय सुबह से ही घर से निकला था। रात के ग्यारह बजने को आये वह घर ही नहीं पहुँचा। यह सब रजनी को नागवार लग रहा था। आज के दिन भी विनय जाने कहाँ है? दिन तो अकेले कट जाता है पर रात काटनी बहुत मुश्किल महसूस होती है। रजनी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच रहा था। उसी समय दरवाज़े पर खट–खट की आवाज़ सुनाई दी। उसने खिड़की से देखा तो विनय खड़ा था । घर के अन्दर आकर सबसे पहले विनय ने हंसते हुए जेब से रुपए निकाल कर रजनी के हाथ पर रख दिए और बड़े गर्व से बोला,लो आज धनतेरस मनाने के लिए पैसे।

रजनी को उन रुपयों को देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। आखिर अचानक इतने पैसे इनके पास कहाँ से आ गए? उसने पूछा, आपको इतने सारे रुपए कहाँ से मिले?

अब विनय सकपका सा गया। उसने सोचा था कि रूपये पाकर रजनी बहुत खुश होगी, वह खुशी से फूली न समायेगी पर यहाँ तो उसका उलटा ही हो रहा है। उसे इन रुपयों के बारे में पूरी जानकारी देनी पड़ेगी,यह उम्मीद नहीं थी। उसने बात को संभालने की कोशिश की, ये रुपए, ये तो मैंने जुए में जीता है। मैंने पहली बार तुम्हारे लिए जुआ खेला और देखो मैं जीत भी गया। विनय ने उसे खुश करने का प्रयास किया।

अब एक तो रजनी पहले से ही गुस्से में थी और विनय द्वारा जुए में जीते हुए उन पैसों को देखकर वह और भी खौल उठी और गुस्से में बोली, भाड़ में जाए आपका यह धनतेरस, आपने जुआ कैसे खेला यह? शरीफों का काम नहीं है।

उसने सारे रुपए एक झटके में टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिया। यह देखकर विनय ने समझाते हुए कहा, रुपए क्यों फाड़ दिए, इन रुपयों में लिखा था क्या कि यह जुए में जीते हुए हैं?

यह सुनकर तो रजनी का गुस्सा और भी भड़क गया।

तड़ाक!!! खींचकर एक चांटा विनय के गाल पर जड़ दिया और लगभग चीखते हुए वो बोली,ठीक है अगर नहीं लिखा है तो चलो मैं भी गलत काम करती हूँ और मैं भी पैसे कमाती हूँ कोई नोट पर लिखा थोड़े ही होगा कि यह नोट कैसे आया है ?

यह सुनते ही विनय की रूह तक कांप गई। उसने रजनी को एक चांटा जड़ दिया और बोला,तुम्हारी हिम्मत भी कैसे हुई इस तरह की बात बोलने की? वह गुस्से से कांप रहा था।

''हाँ वैसे ही जैसे तुम्हारी हिम्मत जुआ खेलने की हुई। रजनी ने उतनी ही दृढ़ता से जवाब दिया।

विनय को अब अपनी गलती का

एहसास हो चुका था। उसकी आँखों से पछतावे के आँसू बह निकले। उसने रोते हुए दोनों हाथ जोड़कर रजनी से माफ़ी मांगी । यह देख रजनी भी अब रो पड़ी। दोनों कुछ देर तक रोते रहे फिर विनय ने रजनी का हाथ पकड़ कर उससे यह वादा किया कि वह अब कभी भी जीवन में कोई भी गलत काम नहीं करेगा जिससे उसे ज़रा सा भी कष्ट पहुँचे। आज का धनतेरस उनका इस तरह मन रहा था। आज रजनी जैसी पत्नी पाकर वह खुद को धन्य मान रहा था। वह सही अर्थ में एक सहधर्मिणी व अर्द्धांगिनी बनी खड़ी थी।

विनय ने अपने इस वादे का निर्वाह भी आजीवन किया । आज के समय में विनय और रजनी दो बेटे बहू और नाती पोतों से भरे घर में सुख और शांति से रह रहे हैं, पर कभी भी किसी ने विनय के बारे में कुछ भी गलत नहीं कहा। यही नहीं उसके क्षेत्र में सभी लोग विनय का एक आदर्श के रूप में अपने बच्चों को उदाहरण देते हैं।

लघुकथा

बेटियाँ

मधुलिका राय मल्लिका
गाजीपुर (उत्तरप्रदेश)

उर्वी बहुत दुःखी रहती थी। क्योंकि उसकी तीनों संतान बेटियाँ ही थीं। पूरे परिवार के साथ–साथ पति भी उसे तिरस्कार पूर्ण नज़रों से देखता था। कारण वह पुत्र पैदा नहीं कर सकी। परिवार में उसकी जिठानी की खूब आव–भगत और इज़्जत–मनुहार होती; क्योंकि उसको दो–दो बेटे थे।

धीरे–धीरे समय बीतता गया। उसके जेठ के बच्चों के लिए पढ़ाई– लिखाई की समुचित व्यवस्था के साथ–साथ खाने–पहनने की उत्तम व्यवस्था हुआ करती थी। पर उर्वी की बेटियाँ उन्हीं की पुरानी किताबों एवं बचा–खुचा खाकर पल–पढ़ रही थीं। उर्वी अपनी बच्चियों को जान से ज़्यादा प्यार करती थी।

सबका तिरस्कार सहते हुए वह, उससे जितना बन पड़ता था अपनी बेटियों के लिए करती थी। वक्त के साथ–साथ बच्चे बड़े हो गये। उर्वी की बड़ी बेटी सृष्टि हाई स्कूल बोर्ड एग्ज़ामिनेशन में पूरा प्रांत टॉप करती है। गाँव में खुशहाली छा जाती है। गांव के प्रधान और गणमान्य लोग सृष्टि को शाबाशी देने के लिए उसके घर आते हैं। वे सृष्टि के दादा और पिता से बोलते हैं अब तो संकुचित सोच से बाहर आ जाओ, देखो, बेटी ने पूरे गाँव का नाम रौशन किया है। ये बेटियाँ गाँव का नाम रोशन करेगी।

कविता

अनिला राखेचा
कोलकाता, प.बंगाल

पंचभूती प्रेम पुष्प

दिन भर तपने के पश्चात
तिरोहित होते सूरज की चाल में
आ जाती है अद्भुत रफ्तार
संध्या की सुरमई बेला में
अधीर हो उठता है उसका समर्पण
मेदिनी से मिलन के लिए
वय की अस्ताचलगामी बेला में
व्याकुल हो उठी है साँसें भी
तुमसे संयोग की आस लिए
आस्वादना चाहती है
तुम्हारी वयस के तुहि कणों को
अनुभूतना चाहती है
तुमहारी वेदना के हर मर्म को
श्रवण करना चाहती है
तुम्हारी आवाज़ में अपना नाम
निरखना चाहती है
आठों प्रहर तुम्हें अविराम
और भरके बाहुपाश में
उड़ना चाहती है मुक्त आकाश में
विलीन करना चाहती है
इस माटी को माटी में
ताकि उदित होता रहे
पुनः पुनः पंचभूती प्रेम पुष्प
इस असंवेदनशील होती
मानवता की छाती पर!!

असली दीपोत्सव

वीणा वैष्णव रागिनी
कांकरोली, राजस्थान।

मुझे याद है गत वर्ष जब मैं दीपावली पर घर की सफाई कर रही थी,तो अक्सर ऐसा होता है जो कपड़े बच्चों के छोटे हो जाते हैं उनको किसी न किसी रूप में काम में लिया जाता है।

यही सोच कर मैंने जो कपड़े काम के नहीं थे उन्हें एक तरफ रख दिया। तब बड़े वाले बेटे ने कहा माँ इन कपड़ों का क्या करोगे।

मैंने कहा कुछ बनाऊँगी तो उसने कहा कि पहले से ही अपने यहाँ पर इतने सारे बिस्तर पड़े हैं,जो किसी काम में नहीं आते। दीपावली पर धूप लगाकर आप वापस अंदर रख देते हो तो क्यों ना इन कपड़ों को ऐसे जरूरतमंद बच्चों को दिए जाए जिनको वास्तव में इनकी ज़रूरत है।

बात मुझे भी अच्छी लगी, मैंने उन कपड़ों को एक बैग में रख दिया। पड़ोस में भी कुछ अच्छे परिवार के लोग भी रहते हैं। उनसे भी मैंने इस विषय पर चर्चा की। उनके भी बहुत सारे कपड़े पड़े हुए थे।

मैंने वह भी ले लिए क्योंकि मुझे किसी का भला हो उस कार्य को करने में शर्म नहीं आती। फिर मैंने वो सारे कपड़े दीपावली से दो दिन पहले उन लोगों तक पहुँचाएं जिनको वास्तव में इनकी ज़रूरत थी।

जब मैं वहाँ पहुँची तो बहुत सारे बच्चे दौड़कर पास में आ गए क्योंकि मैं एक अध्यापिका हूँ तो बच्चों को एक लगाव भी रहता है कि मैम आए हैं।

जब मैंने वो कपड़े उन बच्चों को दिए,तो मैंने देखा दो बच्चे चुपके चुपके आपस में बातें कर रहे थे कि यह कपड़े में दीपावली के दिन पहनूँगा।

उस समय उनके चेहरों पर मुस्कुराहट थी और वास्तव में मुस्कान, मुझे अभी भी याद है,उसका बखान शायद मैं शब्दों में नहीं कर पाऊँगी।

मैं यह सब देखकर सुनकर मन ही मन बहुत खुश हो रही थी।

मेरी आँखों में खुशी के आँसू आ गए। मैं मन ही मन सोचने लगी कि आज तक मैंने यह कार्य क्यों नहीं किया।

वास्तव में पहली बार मुझे असली दीपोत्सव का एहसास हुआ। इसका सारा श्रेय मैं अपने बेटे को देती हूँ। उसी ने मेरी आँखें खोलीं।

अब मैं सदा ही यही काम करती हूँ। जो भी चीज मुझे लगता है मेरे काम की नहीं है वह मैं उन लोगों तक पहुँचा देती हूँ जिनको वास्तव में इनकी ज़रूरत है।

इस कार्य को करने में मुझे आत्मिक सुख की अनुभूति होती है। इतने दिन जो मैं दीपावली मना रही थी वह सिर्फ अपनी खुशी के लिए थी। मुझे लगता है असली दीपोत्सव बरसों बाद मैं अब मना रही हूँ।

इस दशहरा
रावण दहन या आत्मदोहन

अनामिका लेखिका
खुर्जा, उत्तर प्रदेश।

रावण का पुतला जले, वायु प्रदूषण होय

मन का रावण मारिये, भला सभी का होय।।

दशहरा पर्व, दीपावली से बीस दिन पहले आने वाला पर्व, जब हर शहर, हर गाँव, हर गली के नुक्कड़ पर रावण का पुतला जलाकर हम सभी अनेक मेलों का, अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं और बड़े खुश होकर अपने बच्चों को बताते हैं कि आज के दिन भगवान राम ने लंका के राजा रावण को मारकर, राम–रावण युद्ध का अंत किया था और अपनी पत्नी सीता को रावण की कैद से मुक्त किया था। इसी ख़ुशी में हम हज़ारों साल से रावण का पुतला फूंकते आ रहे हैं, साथ ही साथ हम अपने बच्चों को ये भी बताते हैं कि ये पुतला बुराई का प्रतीक है, इसे जलाकर हम बुराई का अंत करते है।

लेकिन क्या सही मापदंडों में रावण का पुतला जला देने मात्र से समाज की बुराई ख़त्म हो जायेगी? क्या आपने कभी दर्पण के समक्ष खड़े होकर अपने आप से बातें की है? क्या कभी अपने अंतर्मन में झाँककर देखा है ? क्या अपनी व्यक्तिगत बुराइयों का अंत करने की कोशिश की है? क्या आपने अपने मन में दिन–प्रतिदिन विकसित होते उस रावण को

मार ना चाहा है जिसके कारण, भारत जैसे देश में जहाँ कभी रामराज्य स्थापित होने के दावे हम जैसे ही लोग करते हैं उस देश की छोटी–छोटी बालिकाएँ, स्त्रियाँ स्वच्छंद रूप से विचरण भी नहीं कर सकतीं। जहाँ हर तीसरी लड़की को यही डर लगा रहता है कि कहीं कोई दरिंदा उसकी अस्मिता को ग्रहण न लगा दे। दिल्ली की निर्भया जैसे कांड भी हमारे ही देश में होते हैं।

क्या हमारे रीतिरिवाज, हमारी मान्यतायें, हमारे आदर्श इतने खोखले हो गये हैं कि ऐसे दुष्कर्म करने से पूर्व हम एक बार भी नहीं सोचते, क्यों कलंकित कर रहे हैं हम अपने ही समाज और धर्म को? कैसे भूलते जा रहे है हम अपनी संस्कृति को, जिसमें लक्ष्मण जी को अपनी भाभी सीता के अपहरण के दौरान फेंके गए गहनों में से केवल पायल और बिछियाँ की ही पहचान थी? बाक़ी गहनों की नहीं, क्योंकि उन्होंने कभी नज़र उठाकर अपनी भाभी को देखा ही नहीं था।

कोई लाभ नहीं हम अपने बच्चों को कितने ही बड़े–बड़े स्कूलों में पढ़ा लें। कितनी ही भाषाओं का ज्ञान दिला दें, अगर हम उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति का ज्ञान नहीं करा पाये तो। अगर हम उन्हें अच्छा इंसान न बना पाये तो सब व्यर्थ है ..।

समाज के उत्थान के लिये, देश

की प्रगति के लिये अगर नयी तकनीक, नया ज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी है तो अपने मन पर संयम रखना भी ज़रूरी है। आवश्यकता है उस रावण का अंत करने की जो सही मायने में देश की प्रगति में बाधक है। आवश्यकता है हमारे अंतःकरण में पल रहे द्वेष, ईर्ष्या और निंदा रूपी रावण के पुतले को जलाने की, जिसको जलाने के बाद जो धुआँ फैले उससे प्रदूषण न हो बल्कि हमारी आत्मा का शुद्धीकरण हो। तब सही मायने में आने वाली दीपावली को आप दीपकोत्सव के रूप में मना पायेंगे जिसमें असंख्य दीपकों के साथ प्रेम, पावनता, निर्मलता, उदारता, शालीनता और परोपकार के असंख्य दीप आपके हृदय में भी प्रज्वलित हो सकें क्योंकि हमारा उद्देश्य केवल एक प्रगतिशील समाज की स्थापना करना ही नहीं है बल्कि एक स्वस्थ, सभ्य और शालीन समाज की स्थापना करना भी है जहाँ रहने वाले लोगों ने सबसे पहले अपने मन के अंदर बसने वाले रावण को जला दिया हो..

ढूँढे दूजों में कमी, निज गुण ढूँढ न पाय

साध ना पाय हृदय को, रावण ही कहलाय।।

लघुकथा

कंचना

नीना सिन्हा
पटना (बिहार)

कमरे में तेज़ी से प्रवेश कर बत्ती जला करके नई नवेली दुल्हन कंचना ने अपनी उंगलियों से बंदूक बनाते हुए देवर के पीठ में सटा दी, हैंड्स अप, देवर जी! अच्छा मज़ाक कर लेती हो, भाभी! इंस्पेक्टर भैया से विवाह का असर है क्या? पहले अपना हनीमून तो खत्म होने दो। नकली बंदूक भी मँगवा लेना, ताकि पुख्ता असर हो , रंजन ठठा कर हँस दिया। बातों को हँसी में न उड़ाइए, देवर जी! बात यहाँ स्त्री की मर्यादा की है।

मैंने ऐसा क्या कर दिया है, भाभी? अभी तो मेरे भैया ही आपको नहीं छोड़ते कि मैं आपसे हँसी-मज़ाक भी कर सकूँ, एक शरारती मुस्कान आकर उसके चेहरे पर ठहर गई।

बिना किसी प्रत्युत्तर के कंचना ने उनके हाथों की दूरबीन को इंगित कर कहा, यह किस काम आती है, मैं ससुराल प्रवास के कुछ दिनों में ही समझ गई हूँ। विपरीत दिशा के फ्लैटों की कामकाजी महिलाएँ, उनका रात के वक्त घर लौटना, थके हारे तन-मन से बेख्याली में झीने पर्दों की ओट में कपड़े बदलना और उनको ताकने-झाँकने का आपका शगल, मेरी नज़रों से अब छिपा नहीं है, देवर जी! आपके भैया की प्रेमिका रही हूँ। अब पत्नी बन चुकी हूँ, कुछ अनुसंधान मुझ में भी तो समाएगा।

माहौल को हल्का करने के उद्देश्य से लहजा बदलकर कंचना बोली, प्यारे-प्यारे देवर जी! यह मेरी पहली और आखिरी चेतावनी है। थोड़ा कहा है, ज़्यादा समझिएगा। नहीं तो यह केस आपके भैया और माँजी की अदालत में पहुँचेगा।

अरे नहीं भाभी! ऐसा गजब नहीं कीजिएगा। आपका नन्हा-मुन्ना देवर हूँ, खिसियानी-सी मुस्कुराहट के साथ रंजन ने सुधरने का वादा किया।

कंचना कमरे से बाहर निकल लंबी-लंबी साँसे लेने लगी। उसका दम घुटने सा लगा था, हे प्रभु! स्त्री शरीर के प्रति यह कैसी मानसिकता है! इसका निवारण कैसे हो?

त्यौहारों से बढ़ाएं आध्यात्मिक पूँजी

डॉ. रीना रवि मालपानी
पुणे (महाराष्ट्र)

कोरोना त्रासदी ने जीवन के सत्य पक्ष को उजागर किया है कि शरीर नश्वर है और केवल ईश्वर ही परम सत्य है। हम दुनियादारी की उलझनों में अंतर्रात्मा से मिलन के क्षण को महत्त्व नहीं देते हैं। स्थितियों और परिस्थितियों से जुझते-जुझते हम स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं। तेरा-मेरा, इसका-उसका और अपना-पराया, इन सभी व्यर्थ चिंतन में जीवन के अमूल्य आनंद के क्षणों का क्षय कर देते हैं। हमारी मनोकामनाओं, अभिलाषाओं और इच्छाओं का कभी अंत नहीं होता। एक इच्छा पूरी हो जाए तो दूसरी आ जाती है कि इसकी प्राप्ति हो जाए तो फिर टेंशन खतम, इसके आगे भी यही प्रक्रिया ज़ारी रहती है।

आधुनिकता की अंधी दौड़ में मनुष्ययोनि का मूल उद्देश्य गौण हो जाता है। ईश्वर द्वारा रचित सृष्टि में थोड़े-थोड़े समय अंतराल में त्यौहारों को स्थान दिया है। ईश्वर का प्रत्येक अवतार, रूप और लीलाएँ मानवयोनि की सफलता के कुछ सूत्र प्रतिपादित करती हैं, तो क्यों न इन छोटे-छोटे त्यौहारों में हम अपनी असली पूँजी आध्यात्मिक पेशन को बढ़ाएं? इच्छाओं की सरिता का कोई किनारा नहीं है। शायद ईश्वर के साथ लौ लगाने से हमें जीवन के प्रति अनुकूल व्यवहार करना आ जाए। हम हमेशा परिस्थितियों को निहारते हैं और कहते हैं कि अंत समय में मुक्ति का द्वार खोज लेंगे, परंतु वर्तमान समय में तो आज भी अनिश्चित हो गया है।

विश्वव्यापी कोरोना संक्रमण के बीच हमने एक-एक श्वास पर जीवन को तांडव करते देखा है। अर्थ और पहुँच भी अनर्थ के परिणाम को नहीं रोक सका। विकराल परिस्थितियों ने शव गंगा के प्रवाह को निरंतर गति दी। जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु है जोकि निश्चित है। अनिश्चित को महत्त्व देते-देते हम निश्चित के आने को अस्वीकार नहीं कर सकते। ईश्वर का सांनिध्य हमारी बुद्धि को भी निर्मल बनाता है। हम सभी इस संसार के हाथों में बंधे हैं, पर सारा संसार उसके हाथों में है। जीवन का प्रत्येक हर्ष-विषाद समभाव से ईश्वर को सौपते चलें और उसके निर्णय को बिना संशय के स्वीकार करते रहें। तृष्णा से मुक्ति का द्वार ईश्वर उपासना में निहित है। ईश्वर के प्रत्येक अवतार में हमने उन्हें संघर्षों से अनवरत जूझते हुए देखा है। इसके पश्चात भी ईश्वर स्वयं दोषारोपण से वंचित नहीं रहें, तो फिर हम इस मोहमाया के जाल में क्यों खुद को ठेस पहुँचा रहे हैं? हम तो उस परम शक्तिशाली ईश्वर का अंश हैं। यह मनुष्ययोनि तो तभी सार्थक है जब हम इसे ईश्वर की स्तुति, स्मरण और सत्कर्म में खर्च करते हैं, तो क्यों न बचे हुए क्षणों में आध्यात्मिक पेशन को संग्रहित करें और ईश्वर तत्त्व में स्वयं को लीन करें?

त्यौहारों से बढ़ाए जीवन की
आध्यात्मिक पूँजी।
मुक्ति के द्वार की यही है प्रमुख
कुंजी।।
मनुष्ययोनि का उद्धार है ईश
साधना।
डॉ. रीना कहती, क्यों न हम
करें ईश आराधना।।

कहानी

मुझे उनसे प्यार नहीं हुआ

पी. बी. गरिमा
पूर्णिया, बिहार

मेरे शादी को १२ साल हो गऐ और आ ज हमारे ३ बच्चे भी हैं, पर १२ साल बाद भी मुझे अपने पति से प्यार नहीं हुआ...।

मेरी कॉलेज की पढ़ाई पूरी भी नहीं हुई थी कि मेरे लिए रिश्ते आने शुरू हो गए थे, परंतु मोल भाव के कारण कोई भी रिश्ता सेट नहीं हो पाया था...।

दरअसल मैं अभी शादी के लिए तैयार भी नहीं थी..परंतु घर वालों को मेरी शादी को लेकर बहुत ज्यादा उत्सुकता थी..और हो भी क्यों ना..मेरे घर की पहली शादी थी...।

मेरी एक दोस्त रुचि अपने पसंद के लड़के से शादी कर हैदराबाद में रहती थी, जिससे मेरी बराबर बात होती रहती थी...।

जब मैंने अपने शादी की बात उससे की तो उसने कहा, शादी लव मैरिज करो या अरेंज इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, बस यह देखना कि लड़का कितना लविंग और केयरिंग है उसकी लाईफ में तुम्हारी क्या अहमियत है, बाकी पैसे तो सभी कमा लेते हैं परंतु वो प्यार हर किसी को नसीब नहीं होता...।

और हाँ सुनो, शादी करने से पहले लड़के से अच्छी तरीके से बात कर लेना और उसके बारे में सब पता कर लेना...।

शादी के पहले जब मैंने एक अनजान आदमी से शादी करने से इनकार किया तो माँ ने डांट कर चुप करा दिया...।

मैं एक ही बात बार-बार कहती रहती कि मुझे इस लड़के को जानने का कुछ समय दो, मैं ऐसे ही किसी अनजान आदमी से कैसे शादी कर सकती हूँ? शादी करने के लिए दिल में एक दूसरे के लिए प्यार होना ज़रूरी है न माँ, प्यार की बात तो छोड़ो हम एक दूसरे को जानते तक नहीं...।

रूढ़िवादी परंपरा निभाने के चक्कर में किसी ने मेरी एक नहीं सुनी...।

शादी फाइनल होने से पहले मेरा मोल-भाव अच्छे से हुआ...।

हाल फिलहाल की शादी में जो मोलभाव कर रकम दिया गया था उससे थोड़ा ज्यादा भाव मिला मुझे, क्योंकि लड़का सरकारी नौकरी में था और फिर मेरे पिता की ठाठ बाठ का भी सवाल था।

शादी फाइनल होने के बाद मुझे एक खास मौका दिया गया, लड़के से मिलने का... समय निश्चित किया गया और मैं सवाल की एक लंबी लिस्ट लेकर गई थी। इतनी मिन्नत के बाद एक ही तो मौका मिला है, जिसमें मैं सारे सवाल करके सारी बातें पता कर लूँगी.. कुछ अपनी पसंद बता दूँगी तो कुछ उसकी पसंद भी मालूम कर लूँगी...।

मैं उससे मिलने के लिए बहुत ही उत्सुक थी इसलिए समय से २० मिनट पहले पहुँच चुकी थी ताकि पहली मुलाकात में मैं लेट ना हो जाऊं... २० मिनट छोड़कर पूरे १ घंटे इंतज़ार किया, मुझे लगा अब

वह नहीं आएगा...।

मैं गुस्से से लाल हो गई और घर जाने के लिए गाड़ी के पास आने लगी तभी अचानक पीछे से हाय की आवाज़ आई।

मैं पीछे मुड़ी तो देखा, वह कुछ दोस्तों के साथ था। मैं कुछ बोल पाती कि उसने जल्दबाजी में कहा, चलो बैठ कर बात करते हैं। वह मुझे एक घंटे से इंतज़ार करवा रहा था उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी... मैं कुछ देर गाड़ी के पास ही रुकी और खुद को संभाला फिर उसके सामने लगी चेयर पर जा बैठी... बैठते ही उसने कहा, क्या लोगी कॉफी? हाँ कॉफी ही लेते हैं (उसने मेरी पसंद पूछा नहीं, बस कॉफी के लिए कहा) मैंने 'हाँ' में सर हिलाया... फिर वह अपने मोबाइल में व्यस्त हो गया और कॉफी आने का इंतज़ार करने लगा... मैं सोच रही थी कि सवाल की शुरुआत वह करे तो मुझे भी पूछने का मौका मिल जाएगा, पर उसने कुछ पूछा ही नहीं... मैंने घबराते हुए कहा, जी आपको मुझसे कुछ पूछना भी है तो पूछ सकते हैं... उसने तुरंत जवाब दिया, यह सब तो घर वालों ने कर ही दिया है, वैसे मुझे आपके बारे में सब मालूम है और मेरे बारे में भी आपको बताया ही गया होगा... वैसे एक सवाल कर सकता हूँ आपसे, मैंने सर हिलाकर जी में जवाब दिया, उसने कहा कोई बॉयफ्रेंड भी है या था। मैं कुछ कह पाती कि उसने कहा, अरे घबराइए नहीं, यह आम बात है, ऐसे अगर था भी तो अब नहीं होना चाहिए... आपके पास्ट लाइफ में क्या था मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, अब आप मेरे घर की इज़्ज़त है, मेरा मतलब है कि मेरी पत्नी बनने जा रही हैं तो अब यह सब ठीक नहीं है... ।

उसकी बातें सुनकर मुझे गुस्सा आ रहा था और गुस्से में ही मैंने जवाब दिया, जी मुरा कोई बॉयफ्रेंड नहीं था, उसने मुस्कुराते हुए कहा, चलिए तब तो बहुत अच्छी बात है... तब तक वेटर कॉफी लेकर आया और टेबल पर रखते हुए कहा, जी, कुछ और ऑर्डर भी है? तो उसने तुरंत कहा, जी नहीं! कॉफी ही बहुत है। (क्योंकि उसके पास समय नहीं था)

उसकी कॉफी आधी ही खत्म हुई थी कि उसने कहा, वैसे सब ठीक है, मुझे जरा ज़रूरी मीटिंग में जाना है, आप घर जाओ और आराम करो... और हाँ सुनो! अपनी पसंद की ज्वेलरी माँ को बता देना, वह बनवा देगी, मैं थोड़ा बिज़ी हूँ कहते हुए चला गया... मैं एक हाथ में कॉफी और दूसरे हाथ में सवालों का लिस्ट लिए अपने सपनों से लड़ रही थी...

वापस घर आई तो पापा जी बोले, लड़का अच्छा है न बेटा, आखिर हो भी क्यों ना, अपनी लाडो रानी के लिए हीरा चुनकर लाया हूँ, मोटी रकम लग रही थी फिर भी मैं पीछे नहीं हटा, देखना बेटा इस लड़के से तुम्हारी शादी हो गई न तो समाज में हमारा सीना और ज़्यादा चौड़ा हो जाएगा क्योंकि इतने बड़े घर में रिश्ता जो जोड़ रहा हूँ...।

मैं होठों पर झूठी मुस्कान लिए बस एक ही शब्द बोल पाई, जी पापा... इतना कह कर मैं अपने कमरे में चली गई... माँ को मेरी झूठी मुस्कान पर शक हो गया, मेरे पास आ कर मुझे गले लगा लिया और पूछा, क्या हुआ बेटा? मुझे बताओ...।

मैंने सारी बात माँ को बता दी और

कहा कि, माँ मैं उस इंसान के साथ पूरी उम्र रहने जा रही हूँ जिसे मैं प्यार नहीं करती, बिना प्यार के शादी कैसे करूँ? और वैसे भी उसके पास मेरे लिए ज़रा भी समय नहीं है, वह बहुत बिज़ी इंसान है माँ...।

माँ ने कुछ देर सोचा फिर मुझे ही समझाने लगी, देख बेटा, शादी करने के लिए प्यार होना ज़रूरी नहीं होता, प्यार तो शादी के बाद भी होता है...तू घबरा मत, एक बार शादी हो जाने दे। तू देखना बहुत जल्द तुम्हें सब सही लगने लगेगा और तुझे भी दामाद जी से प्यार हो जाएगा और तू सारा दिन उसी के घर में उसी के साथ रहने वाली हो तो उसका सारा समय तो तेरा ही होगा न! तुम इतना मत सोचो बेटा.. आखिर मैंने भी तो तेरे पापा से ऐसे ही शादी की थी, तु तो एक बार मिल भी आई, मैंने तो तेरे पापा को देखा भी नहीं था और देख आज सब ठीक है न...! और इस तरह से मेरी शादी हो गई...।

शादी के बाद मुझे अपने ससुराल से कोई शिकायत नहीं थी और ना ही उनसे, क्योंकि उन्होंने मुझे कभी किसी चीज की कमी ही महसूस नहीं होने दी, घर में हर सुख सुविधा है... कभी बीमार पड़ी तो समय पर डॉक्टर और मेडिसिन... तीज-त्यौहार में नई साड़ी और नई ज्वेलरी अपनी पसंद की ले सकती थी, मुझे बहुत आज़ादी थी घर में फिर भी दिल में एक टिस सी उठती थी, मुझे दर्द होता था, मुझे खुद पर गुस्सा आता था वो इसलिए क्योंकि वह कभी मेरी परवाह नहीं करते थे...।

मैं नाराज़ हूँ, क्यों हूँ? उन्हें इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता था...। उन्हों ने तो कभी अपनी पसंद की एक साड़ी तक लाकर नहीं दी हाँ, पैसे देते थे जितनी ज़रूरत हो.. हमेशा एक कमी सी खलती थी क्योंकि उनके पास मेरे लिए वक्त नहीं था। मैं कैसी हूँ उन्होंने कभी पूछा ही नहीं... मेरे सजने सवरने पर कभी उन्होंने तारीफ नहीं की, हाँ लोगों को बताते हैं कि मेरी पत्नी है...। मेरी राय या सहमती उनके लिए कोई मायने नहीं रखती है पर, हाँ उन्होंने कभी किसी चीज में मुझे रोका नहीं।

मैं वो सब करती हूँ जो एक पत्नी को करना चाहिए और वो भी सारी ज़िम्मेदारी निभाते हैं जो एक पति को निभाना चाहिए, फिर भी ना वो मुझे समझ पाऐ और ना मैं उन्हें। लगता है कि मुझे किसी चीज की कमी नहीं हैं पर मुझे लगता है कि मुझे प्यार करने वाले जीवनसाथी की कमी है... वो अपने ऑफिस के काम में लगे रहते थे और खाली समय में ऑफिस की महिला मित्रों के साथ व्यस्त रहते थे... कभी पार्टी तो कभी टूर तो कभी महिला मित्रों के बर्थडे पर गिफ्ट लेकर जाना, पर मेरे बर्थडे पर कभी कोई उनकी तरफ से गिफ्ट नहीं आया.. मैं किचन से बैडरूम, बेडरूम से किचन कभी ब्रेकफास्ट तो कभी टिफिन तैयार करती रही...।

इन सब में १२ वर्ष गुज़र गये और आज हमारे ३ बच्चे भी हैं पर आज भी जब मैं तन्हा बैठकर सोचती हूँ कि क्या माँ की बात सच हुई? क्या मुझे उनसे प्यार हुआ? तो दिल से जवाब आता है, नहीं। आज शादी के १२ वर्ष के बाद भी मुझे अपने पति से प्यार नहीं हुआ। मैं आज भी इसी इंतजार में हूँ कि कब माँ की बात सच होगी और मुझे भी उनसे प्यार हो जाएगा...।

अब बरसो भी तो क्या

डॉ ममता पानेरी
उदयपुर, राजस्थान

कमला की कातर निगाहें आसमान के एक छोर पर टिकी हुई है इस आस में कि कहीं से कोई बादल आकर बरसे और इतने वर्षों से सूखे पड़े खेतों को नवजीवन दे, पर वह देख रही है कि बादलों का पानी तो जैसे उसकी आँखों के पानी की तरह बिल्कुल सूख–सा गया है

आखिर कब तक इंसान की आँखें नम रह सकती हैं? कमला और उसके गाँव के लोगों के पास पीने के लिए आँसू के घूंट तक नहीं बचे हैं, आखिर पन्द्रह साल कम नहीं होते हैं अकाल के।

इतने वर्षों के अकाल के कारण हर चीज़ इतनी महंगी होती जा रही है कि अब आम व्यक्ति के लिए रोज़मर्रा की वस्तुएं खरीदने में भी परेशानी आ रही है।

कमला का मन आज इसलिए इतना व्यथीत हो रहा है क्योंकि उसके सास–ससुर दुर्घटनाग्रस्त होकर जब अंतिम सांस ले रहे थे तो उन्होंने कमला का हाथ अपने हाथ में लेकर वचन लिया था – कमला तुम अपने देवर श्याम के लिए भी अपने ही जैसी कोई सुशील लड़की देख कर उसका विवाह भी बड़े ही धूमधाम से करना और उसे यह महसूस मत होने देना कि उसके माता–पिता नहीं है

अभी कमला की शादी को भी दो ही वर्ष तो हुए थे और उसके सिर पर इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी आ गई थी।

हालाँकि गाँव में वे संपन्न थे। कुछ पुश्तैनी ज़मीन थी और बाकी कमला का पति सुरेश काफी मेहनती था। स्वयं की खेती का काम तो करता ही था साथ ही पढ़ाई करके वह ग्रेजुएट भी हो गया था और अब खेती के काम के साथ–साथ एक फैक्ट्री में भी काम करने लग गया था उसने श्याम को भी अपनी ही फैक्ट्री में लगवा दिया था। दोनों भाई बहुत मेहनती थे लेकिन इन पन्द्रह वर्षों के अकाल के चलते सुरेश को अपनी शादी के समय कुछ ज़मीन बेचनी पड़ी थी। कुछ ज़मीन माता पिता के दुर्घटनाग्रस्त होने पर उनके इलाज के लिए बेचनी पड़ी थी।

अब केवल दो ही खेत बचे हैं जिस पर वे खेती करते हैं लेकिन बिना पानी के भला कोई खेती करें भी तो कैसे! दोनों भाई अपनी कमाई के पैसों से गांव के जिन लोगों के पास कुएं में पानी बचा है उनसे पानी लेकर खेतों में सिंचाई करते हैं और इस तरह वे जैसे–तैसे जीवन यापन कर रहे हैं।

सास–ससुर को गुज़रे तीन वर्ष हो गए हैं अब कमला को श्याम के विवाह की चिंता सताने लगी है। जब से कमला की मुलाकात शीला से हुई है जो कि कुछ ही दिन पहले शहर से आई है यहाँ के सरकारी स्कूल में पढ़ाती है तभी से कमला के मन में शीला श्याम के लिए जम गई है।

कमला अब अक्सर शीला के यहाँ, जहाँ वह कमरा किराया लेकर रहती थी आने जाने लगी। दोनों में अच्छी मित्रता हो गई ।

एक दिन अवसर देखकर कमला ने अपने मन की बात शीला के समक्ष प्रकट की और कहा कि मेरा देवर श्याम लाखों में एक है तुम्हें बहुत खुश रखेगा। पर शीला ने इसका निर्णय अपने माता–पिता पर छोड़ा कि इसका फैसला तो वेही लेंगे।

आज सवेरे से ही कमला का मन काफी प्रफुल्लित हो रहा है सुबह से ही वह घर को व्यवस्थित करने में लगी हुई है क्योंकि आज शीला के माता–पिता उसके रिश्ते की बात करने आ रहे थे। सुरेश और श्याम ने भी आज फैक्ट्री से छुट्टी ले ली थी।

श्याम के मन में उसके जीवन में आने वाली वासंती वेला को लेकर

एक अलग ही उमंग जगी हुई है। शीला को बिना देखे ही उसने उसे मन ही मन अपनी जीवनसंगिनी मान लिया है और जीवन के सपने देखने लगा। आखिर उसकी भाभी ने शीला की तारीफ भी तो कुछ ऐसी ही की थी।

ठीक समय पर शीला के माता–पिता आ गए और श्याम व शीला का रिश्ता पक्का हो गया।

अगले दिन उन दोनों की भी मुलाकात करवा दी गई। दोनों एक दूसरे से मिले बिना भी एक दूसरे के बारे में इतना कुछ जान गए थे कि पहली मुलाकात भी उन्हें अजनबी–सी नहीं लगी। बल्कि उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे काफी पहले से ही एक दूसरे से परिचित हैं।

रिश्ता तो पक्का हो गया था पर अब कमला और सुरेश को दूसरी चिंता सता रही थी कि इतनी महंगाई के चलते वे श्याम की धूमधाम से शादी का सारा इंतजाम कैसे करें।

इसके लिए उन्हें तो केवल एक ही उपाय दिखाई दे रहा था कि वे दो में से एक खेत और बेच दे। परंतु श्याम पहले ही कह चुका था कि शादी तो एकदम सादगी से करनी है ज़्यादा खर्चा करने की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन कमला को अपने सास–ससुर की अंतिम इच्छा याद आ गई और फिर वह सुरेश से कहती है – नहीं शादी तो हमें धूमधाम से ही करनी है क्योंकि हर व्यक्ति के जीवन में यह समय एक बार ही आता है और उसे लेकर हर व्यक्ति अपने मन में कई प्रकार के सपने संजोता है चाहे वह उसे सामने प्रकट कर पाए या ना भी कर पाए तो भी।

तब सुरेश् व कमला ने मन ही मन निश्चय किया कि वे श्याम को बिना बताए अपना एक और खेत बेच देंगे और उन्होंने ऐसा ही किया भी। अपना एक और खेत बेचकर श्याम और शीला की शादी बड़ी ही धूमधाम से की। शीला और श्याम एक दूसरे को पाकर बहुत प्रसन्न थे। अपनी भाभी कमला के प्रति बड़े ही कृतज्ञ थे क्योंकि कमला के प्रयास से ही वे एक–दूसरे के हो पाए हैं।

समय तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। अभी तक किसी न किसी कारणवश सुरेश और कमला अपनी स्वयं की गृहस्थी की तरफ ज़्यादा ध्यान नहीं दे पाए थे इसलिए शादी के कुछ समय बाद शीला ने कमला से कहा– भाभी अब आप थोड़ा भैया को भी समय दें, अब तक आपने सब कुछ घर परिवार के लिए ही किया है अब घर का कामकाज़ मैं संभाल लूँगी।

समय अपनी ही गति से गतिशील था और अब इस परिवार में कुछ और खुशियों ने दस्तक देनी चाही और वह भी एक नहीं बल्कि दोहरी खुशी अब परिवार में आने वाली थी। कमला और शीला दोनों की गोद में नन्हीं किलकारियाँ गूंजने वाली थी। सुरेश और श्याम दोनों ही कमला और शीला का बहुत ख्याल रखते थे।

धीरे–धीरे इंतज़ार की घड़ियाँ करीब आ रही थी। कमला को दो ही महीने बाद संतान की प्राप्ति होने थी और शीला को चार महीने बाद।

काफी इंतज़ार के बाद आज आखिर वह खुशी का दिन आ ही गया आज कमला ने एक बड़े ही प्यारे बेटे को जन्म दिया।

घर में नन्हे मेहमान के आने से घर में एक अलग ही प्रकार की रौनक आ गई थी। जितना हो पाता घर के चारों सदस्य अपना वक्त बच्चे के साथ ही गुज़ारते। शीला व कमला तो एक पल के लिए भी बच्चे से दूर नहीं रहना चाहती थी।

समय अपनी ही रफ़्तार से आगे बढ़ रहा था। आज दो महीने बीतने के बाद दूसरी खुशी का दिन भी आखिर आ ही गया। शीला ने प्यारी–सी पुत्री को जन्म दिया।

जब डॉक्टर ने आकर यह ख़बर सुनाई तो सुरेश कमला व श्याम की खुशियों को जैसे चार चांद लग गए थे। पर यह चांद उनके पास पल भर की खुशी ही लेकर आया था क्योंकि डॉक्टर की बात अभी आधी ही थी डॉक्टर ने थोड़ा रुक

कर कहा आप लोग थोड़ा सा धैर्य से काम लीजिएगा। यह सुनकर तीनों के चेहरे जैसे अवाक् होकर प्रश्नातुर हो डॉक्टर के चेहरे पर टिक गए। हिम्मत कर सुरेश ने डॉक्टर से पूछा क्या बात है डॉक्टर साहब, माँ बेटी दोनों स्वस्थ तो है ना?

डॉक्टर ने धीरे–धीरे कहना शुरू किया, सॉरी सर डिलीवरी के वक्त अचानक से शीला का बी पी काफी बढ़ गया था जिसका असर उसके हार्ट पर हुआ और हमारे बहुत कोशिश करने के बावजूद भी हम जैसे तैसे बच्ची को ही बचा पाए। माँ को नहीं।

यह सुनते ही परिवार के तीनों सदस्यों पर जैसे दुख का पहाड़ टूट पड़ा तीनों के तीनों जैसे बेसुध हो गए।

एक घंटे बाद सुरेश ने अपने आप को संभाला व श्याम और कमला को उठाया और उन्हें कहा– हमें अपने आप को संभालना होगा। शीला हमें जो ज़िम्मेदारी सौंपकर गई है उसे पूरा करना होगा। श्याम अपने आप को संभालो अपनी इस नन्हीं बेटी की तरफ देखो जो कि एक निशानी के रूप में शीला तुम्हारे पास छोड़ गई है। श्याम ने अपनी बच्ची को गोद में लेकर गहरी सांस ली।

सुरेश ने कमला के पास जाकर कहा– कमला तुम्हें तो दो बच्चों को संभालना है कमला अपने बेटे को पड़ोसी के पास छोड़ कर आई थी। वह भी काफ़ी देर से अकेला था सुरेश ने श्याम व कमला को नन्हीं बच्ची को लेकर घर जाने को कहा और यह भी कहा कि मैं शीला के शव को घर लाने की व्यवस्था करता हूँ।

तब तक शीला की मृत्यु की खबर सुनकर उसके माता–पिता भी अस्पताल पहुँच गए। बड़े ही भारी मन से शीला के अंतिम संस्कार की रस्म पूरी की गई।

शीला के शादी करके इस घर में आने से इस घर में जितनी खुशियाँ आई थीं आज उसके चले जाने पर उससे चार गुनी उदासी घर में छा गई है।

वर्षों से अकालग्रस्त समय में भी शीला के घर में आने से जो घर हरा भरा हो गया था वह आज फिर सूखा हो गया।

धीरे–धीरे कमला ने अपने आप को इस सदमे से बाहर निकाला क्योंकि उसे दोनों बच्चों को भी संभालना था। कमला एक तरफ घर का काम करती और दूसरी तरफ दोनों बच्चों को भी संभालती थोड़ी देर बेटी को दूध पिलाती तो थोड़ी देर बेटे को। बेटा तो उसका अपना था और बेटी से दो महीने बड़ा भी था इसलिए कमला का ज़्यादा ध्यान बेटी पर ही रहता था।

सुरेश और श्याम दिनभर फैक्ट्री पर काम करते थे और अब उनके पास एक ही खेत था। उसकी सार–संभाल भी ज़रूरी थी। बारिश का अभी भी कोई नामोनिशान नहीं था। इसलिए दोनों भाई मेहनत करने में लगे रहते थे। रात को दोनों भाई दोनों बच्चों के साथ थोड़ा समय बिता पाते थे दिन भर अकेले कमला को ही उन्हें संभालना पड़ता था।

श्याम अपने आपको दिन भर काम में व्यस्त रखता था जिससे उसे शीला की याद कम से कम सताए, पर जब शाम को वह अपनी बेटी को देखता तो उसे शीला की याद तड़पाने लगती। इससे बचने के लिए वह धीरे–धीरे अपने आप को अपनी बेटी से दूर रखने लगा। कमला श्याम की अपनी बेटी के प्रति बेरुखी का कारण समझती थी, इसलिए उसकी कोशिश यह रहती थी कि वह अपनी बेटी को माँ और पिता दोनों का प्यार दे पाए।

उसको मन ही मन लगता कि आसमान से जब शीला मुझे देखे तो उसे यह नहीं लगना चाहिए कि मैंने उसकी बेटी का लालन–पालन ठीक से नहीं किया और दूसरा वह भी जब शीला की बेटी के पास होती तो उसमें शीला की झलक को देखती तथा अपने आप को शीला के निकट महसूस करती थी। यही कारण था कि उसका बेटी के प्रति लगाव बढ़ता

जा रहा था । कई बार ऐसा होता कि बेटा रोता रहता और वह उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दे पाती।

जैसे–जैसे बच्चे बड़े हो रहे थे उनकी चंचलता भी बढ़ती जा रही थी और ऐसे में उनका ध्यान भी ज़्यादा रखना पड़ता था। अकाल जिसने इतने वर्षों से पाँव पसार रखे थे उससे देश में महंगाई इतनी बढ़ गई कि आम व्यक्ति के घर–खर्च चलाना मुश्किल हो गया। अब उन्हें घर का खर्च चलाने के लिए अपना अंतिम खेत भी बेचना पड़ा।

अब बच्चे बड़े हो रहे थे और उसके साथ–साथ उनकी आवश्यकताएं भी बढ़ रही थी। खेत को बेचकर जो पैसे आए थे उनसे कुछ समय तक घर का खर्च ठीक–ठाक चल गया महंगाई ने जो कहर ढाया उसके कारण अब केवल फैक्ट्री से होने वाली कमाई से घर चलाना कमला के लिए दिन–ब–दिन मुश्किल से मुश्किलतर होता जा रहा था फिर भी कमला जैसे तैसे घर खर्च चला रही थी

पर आज तो जैसे कमला के सामने परीक्षा की घड़ी आ गई। सुरेश और श्याम तो फैक्ट्री पर जी तोड़ मेहनत करने में लगे रहते थे जिससे यदि कुछ अतिरिक्त पैसा मिले तो घर खर्च में कुछ सुविधा हो पाए। इधर अकाल के चलते पूरे गाँव में महामारी फैलने लगी। कमला दोनों बच्चों का बहुत ध्यान रखती थी और जितना संभव हो उन्हें दूसरे बच्चों से दूर रखती थी, लेकिन फिर भी बच्चे तो बच्चे हैं। आखिर पहले बेटा और फिर बेटी दोनों ही महामारी के शिकार हो गए। उसके घर के पास ही एक क्लिनिक था। पूरे गाँव में वही एकमात्र क्लिनिक था जिस पर महामारी की निशुल्क दवाई वितरित की जा रही थी।

कमला दोनों बच्चों को लेकर क्लिनिक पर गई। वहाँ जाकर उसे पता लगा कि दवाई की एक ही खुराक बची है और खुराक मंगवाई है पर उसे आने में तीन दिन लग जाएंगे डॉक्टर ने कमला को कहा कि अभी हम आपके एक ही बच्चे को दवाई दे सकते हैं, दूसरे के लिए तीन दिन बाद आइएगा।

कमला ने दो पल के लिए मन में कुछ विचार किया और फिर कहा ठीक है, डॉक्टर साहब आप मेरी बेटी को दवाई दे दीजिए बेटे के लिए मैं तीन दिन बाद ले जाऊँगी।

डॉक्टर ने बेटी को दवाई दे दी। कमला दोनों बच्चों को लेकर घर आ गई दोनों बच्चों को खाना खिलाया और सुला दिया। तब तक सुरेश व श्याम भी बच्चों की तबियत की बात सुनकर जल्दी ही घर आ गए। दोनों बच्चों को सुलाकर कमला उनके पास बैठी उनके सिर पर हाथ फिरा रही थी। वे दोनों भी उसके पास बैठ गए और कमला से आज जो कुछ हुआ वह सारा हाल जाना।

तीनों बैठे ही थे कि उनके बेटे ने एक ज़ोर की सांस ली और वह उसकी अंतिम सांस में बदल गई। सुरेश की आँखें कमला के चेहरे पर टिककर जैसे यह सवाल कर रही थी कि क्या तुमने अपने पुत्र के साथ ठीक किया? तो कमला की आँखें जैसे जवाब दे रही थी– तो क्या मैं उस बिन माँ की बच्ची के साथ अन्याय करती? इतने में वर्षों बाद बादलों से जैसे बिजली कड़की और कमला को लगा जैसे बादलों की ओट से शीला उसे देख रही है और मानो कह रही है भाभी आपने यह क्या किया? मेरी बच्ची की रक्षा के लिए अपने कलेजे के टुकड़े की बलि दे दी।

और एकदम बादल गरजा और मूसलाधार बारिश का रूप ले लिया।

मीरा जैन
उज्जैन, मध्य प्रदेश

देवी का द्वार

नवरात्र के दिन देवी भक्ति में लीन सुरेखा ने अपनी वेदना आखिरकर देवी के समक्ष प्रगट कर ही दी–

'हे देवी माँ ! हम पूरे जतन से समग्र सामग्रियों, ढोल ढमाके , साज–सज्जा, भक्ति भाव सहित आपकी पूजा अर्चना करते हैं लेकिन आप कृपा गाँव वालों पर ही बरसाती हो, गाँव में रहने वाली देवरानी से जब भी मिलो बहुत खुश हो बताती है, 'देवी माँ की कृपा से सब काम आराम से पूर्ण हो रहे हैं।'

जबकि वहाँ साधारण सी परम्परागत पूजा और भक्ति के अतिरिक्त और है ही क्या ?'

तभी अंतर्मन की आवाज़ कानों से टकरायी जैसे देवी माँ के ही स्वर हो–

' बेटी ! तुमने पूजा अर्चना की तुलना तो कर ली, एक बार निष्पक्ष मन से दोनों की आकांक्षाओं की तुलना भी करके देखो , वह कम में भी बहुत संतुष्ट है और तुम ––––'

दो कविताएँ

पुरूषोत्तमभाई मिस्त्री
नया अंज़ार, कच्छ

हो सके तो

दुराचार, अत्याचार, व्याभिचार त्याग दो
अहंकार, हिंसाचार, बुरा व्यवहार त्याग दो
झुठा यार, झुठा प्यार कुविचार त्याग दो
बारबार, माँसाहार, विषय–विकार त्याग दो
दुःष्प्रचार के प्रहार का प्रकार त्याग दो
तकरार, वार–पलटवार का खुमार त्याग दो
ना मान ना सत्कार हो ऐसा द्वार त्याग दो
हो भ्रष्ट्राचार से भरा ओ बारोबार त्याग दो

मॉनसून ऐसा क्यों आया

मौसम ने तान्डव दिखलाया
महा प्रलय का शंख बजाया
हम मन ही मन सोच रहे हैं
मॉनसून ऐसा क्यों आया ?
फटे बादल जल बरसाने
पहाड़ों से खिसकी चट्टाने
भागो अपनी जान बचाओ
लोग लगे केहराम मचाने
हर मन में ये ख्याल समाया
मॉनसून ऐसा क्यों आया ?
हमने बढ़ाया प्रदूषण भारी
ना समझ सके हम भूल हमारी
प्रकृति को कब किसने हराया
कुदरत से दुनिया है हारी
सत्य कुदरत ने ये समझाया
मॉनसून ऐसा क्यों आया

दो कविताएँ

डॉ श्वेता दीप्ति
काठमांडू (नेपाल)

अस्तित्व

मैं किताब तो नहीं
जी किया पढा
अच्छी लगी तो बार बार पढा
नहीं तो अनदेखा कर दिया
कुछ भा गया तो
खींच दी उसके सीने पर
चुभती लकीरें
या फिर कर दिया उसे अलग
बेरहमी से फाडकर

वक्त के साथ जी भरा तो
बेतरतीबी से छोड दिया
घर के किसी कोने में
और फिर जमती गईं
धूल की गहरी परतें ।
गुजरते वक्त के साथ
धीरे धीरे उसके बचे
अस्तित्व को
समाप्त कर दिया
दीमकों के साम्राज्य ने !

शुभकामना

उस सुबह जब
प्राची में
अपने पैरों को पसारना
शुरू किया था
उसकी दीप्ति ने जब
सृष्टि को दीप्त किया
तरु की फुनगियों पर
जब विहगों ने जीवन
का संचार किया
उसी समय
सृष्टि का वह नन्हा अंश
अपने संपूर्ण वजूद के
मेरे आंचल में आया
और मुझे स्वर्गिक
आनंद के साथ
विभोर कर गया !!

पकवान दिवाली के.....

अर्चना गुप्ता 'बन्धु'
शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

सामग्री– २०० ग्राम मैदा, आधा चम्मच बेकिंग पाउडर, चार चम्मच घी, सजावट करने के लिए मीठी क्रीम, खाने वाले रंग।

विधि – मैदा में बेकिंग पाउडर और घी डालकर अच्छे से मिला लें। फिर पानी की सहायता से सख्त गूंथ लें। गूंथी हुई मैदा को ३० मिनट तक किसी एयर टाईट डिब्बे में बंद कर दें। बाद में एक लोई बनाकर, चौकी बेलन के सहारे मोटी रोटी की तरह बेल लें। इसको डोसा खाने वाले कांटे से गोद लें, जिससे यह फूले नहीं! फिर घी गरम करके धीमी आंच में सुनहरा होने तक सेंक लें। ठंडा हो जाने पर, मीठी क्रीम में अलग–अलग प्रकार के खाने वाले रंग मिलाकर, कोन में भरकर मनचाही आकृति की रंगोली अंकित करें। फिर इसे खाने की मेज के बीचों बीच सजा दें। आपकी खाने की मेज पर चार चाँद लगाने के लिए स्वादिष्ट दिवाली की रंगोली तैयार है।

सामग्री– २०० ग्राम मैदा, आधा चम्मच बेकिंग पाउडर, चार चम्मच घी या रिफाइंड मैदे में डालने के लिए, ३०० ग्राम चीनी पाग के लिए , चार सफ़ेद इलायची ।

विधि – २०० ग्राम मैदा में बेकिंग पाउडर और घी या रिफाइंड डालकर अच्छे से मिलाएं। फिर थोड़ा–थोड़ा पानी डालकर सख्त करके गूंध लें। चिकना हो जाने पर एयर टाइट डिब्बे में ३० मिनट के लिए रख दें। उसके बाद चौकी–बेलन से बेलकर मनचाहे आकार में कटोरी की सहायता से चरखियाँ काटें। कटी हुई चरखियों के किनारों को डोसा खाने वाले कांटे से काटकर, गरम तेल में, माध्यम आंच में सुनहरा होने तक भून लें। पाग बनाने के लिए ३०० ग्राम चीनी में चार सफ़ेद इलायची दाना पीसकर डालें और आधा कप पानी डालकर चाशनी बनाएं। तैयार चाशनी में चरखियों को डालकर चलाएं। फिर थाली में फैलाकर ठंडा कर लें। लीजिये, दीवाली की मीठी–मीठी करारी, स्वादिष्ट चरखियाँ आपका मुँह मीठा करने के लिए तैयार हैं।

– संगिनी डेस्क

सामग्री :– पालक पेस्ट – एक कप, रागी पाउडर – एक कप, चावल पाउडर – एक कप, लहसुन पेस्ट – आधा चम्मच, नमक स्वादानुसार, सफेद तिल – एक बड़ा चम्मच, दरदरा जीरा – एक छोटा चम्मच, मीठा सोड़ा – एक छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर – आधा चम्मच, अनारदाना पाउडर – एक छोटा चम्मचस, रिफाइंड तेल – मोयन के लिए व तलने के लिए।

विधि :–तेल को छोड़कर सभी सामग्री मिला लें। अब मोयन के लिए २ बड़े चम्मच तेल मिलाएं और अच्छी तरह समलकर कड़ा गूंथ लें। आवश्यकतानुसार थोड़ा पानी मिला लें। तैयार मिश्रण को चकली बनाने वाली मशीन में भरकर चकली बनाएं। कड़ाही में तेल गर्म करके मंदी आंच पर चकली तल लें।

सामग्री :– बटर – १०० ग्राम, कैस्टर शुगर – १०० ग्राम, मैदा – २०० ग्राम, ऑरेंज एसेंस – ४ से ५ बूंद, ऑरेंज कलर – २ बूंद, दूध – आवश्यकतानुसार, कटा पिस्ता – बड़ा चम्मच, पेठा चेरी – थोड़ी सी।

विधि :– मैदा छान लें। बटर व कैस्टर शुगर को फेंट लें। इसमें ऑरेंज एसेंस, ऑरेंज कलर व मैदा डालकर आटे की तरह गूंथ लें। आवश्यकता हो तो थोड़ा दूध मिला लें। तैयार मिश्रण की बॉल्स बनाकर दबाएं। प्री हीटेड ओवन में १८० डिग्री सेंटीग्रेड पर १५–२० मिनट तक बेक करें। ठंडा होने पर कटे पिस्ता व पेठा चेरी से सजाएं।य

अब कोई काम का नहीं रहा

राजेंद्र कुमार सिंह

आजकल बाबू रामचरण की गिनती बडे लोगों के बीच होने लगी है। कारण यह कि राजनैतिक हलकों में उनका कद बढ गया है। उठना–बैठना, पहनना–ओढना,चाल–ढाल यहाँ तक कि बोल–चाल में भी फर्क आ गया है। इसलिए उसके दोस्तों के बीच यह मामला गरम मसाले की तरह स्वादिष्ट बन गया है। दोस्तगण पहले से ही आस लगाए बैठे हैं कि चलो अपने बीच का आदमी बडे मंत्री का पीए हो गया है तो अब उनके साथ पी रहा होगा।

लेकिन दोस्तों की यह खुशी चिरस्थायी नहीं थी। बिछुड़न के दर्द से अभी उबर नहीं पाए थे कि एक दिन उनकी संभावनाओं के विरुद्ध दोस्तों से मिलने आ धमका। ऐसा विश्वास था जो सरकारी हो गया वह किसी काम का नहीं रहता। कहीं अपना रामचरण वैसा ही तो नहीं निकलेगा? यह गम उन सभी को दीमक की तरह खोखला कर ही रहा था कि एक दिन रामचरण गाजे–बाजे के साथ धमकाया।

उस दिन दोस्तों में खुशी की लहर दौड गई पर उसने शीघ्र ही कहर बनकर उनके अरमानों को कुचल डाला। उनका सबसे नजदीकी व लंगोटिया यार रामचरण जो देर–सबेर पैसा–कौडी से मदद तो करता ही रहता था उन सबके ग्लास में अपने हाथों से ताडी ढारा(डाला)करता था। उसकी बातों को सुन सब अवाक हो गये–अबे अब मैं ताडी नहीं पीता, ब्रांडी पीता हूँ। नशा भी भरपूर होता है और सेहत भी बनती है। क्या अभी तक तुमलोग ताड़ी में ही डूबे हुए हो? थू! शर्म आनी चाहिए तुम लोगों को घृणा नहीं होती इस तरह की ज़लालत की ज़िंदगी जीते हुए'? उसने शरण की तरफ मुखातिब होकर बोला, हाँ रे रामचरण, ससुर के नाती कल तक तो यही ताडी किसी ब्रांडी से कम नहीं थी। साले आज उसी को गाली दे रहा है? औकात इतनी जल्दी भूल गया बे? अब तुम हमलोगों के साथ क्यों पीओगे। बेटा अब तुम मंत्री का पीए बनकर पी रहे हो?

'मेरे कहने का मतलब ये नहीं था' रामचरण संभला–'मैं तो कहता हूँ एक ब्रांड को लंबे समय तक नहीं पीना चाहिए।

'मतलब'.रोहन चौका।

'ज़ायका बदलकर पीने से सेहत पर खास प्रभाव नहीं पडता। देखो तुमलोग अपने सेहत को। उसने धिक्कारा–'और मेरी सेहत देख लो।'

अब तक खखोरन जो चुप था, यकायक बमक गया–'राजनीति खराब चीज है ही। इसकी खुमारी जिस पर चढती है न वह सब कुछ भूल जाता है। रिश्ते–नाते की अहमियत भी खत्म हो जाती है। सत्ता ही उसका माँ–बाप, भाई–बंधू सब कुछ वही होता है। मानवता की बातें होती है, किन्तु उसकी आड़ में कुछ और खेल खेला जाता है।'

रामचरण मंद–मंद मुस्कुराते हुए मनोयोग से सुन रहा था और मन–ही–मन स्वयं से कह रहा था–'साले तुम लोगों को भी चस्का लग जाएगा तब पता चलेगा। मैं तुम लोगों को खिंचने का चक्कर चला रहा हूँ बे।'

'तब रामचरण हमलोगों को एक तरह से भूल ही गया है। क्योंकि जो चीज सरकारी हो जाती है फिर उस पर भरोसा नहीं रहता।

दिलीप की बातें सुन महीप को अपने अनुभव के आधार पर कहना ही पडा। वह अपने दोस्तों

में सबसे सीनियर था। बोला–' पिछले साल सरकारी पुल बना। उद्घाटन के बाद उस साल की बरसात सह नहीं पाया। टूटकर बिखर गया। गरीबों के लिए मुफ्त आवास बने, उदघाटन हुआ। तेज़ हवा का झोंका आया और समतल मैंदान में तब्दील हो गया। सरकारी दवाखाना में बुखार की दवा लेने गया। नकली थी। गया था बुखार छुडाने के लिए,पेट पकडकर आया।

और अंत में हमलोग के बीच एक दोस्त था रामचरण। अब सरकारी हो गया है। कोई काम का नहीं रहा।

आदमी का कद तब बढता है,जब अपने बीच के लोगों को लात मार दे। वास्तव में रामचरण बडा आदमी हो गया है।

रामचरण मंद–मंद मुस्कराते हुए स्वयं से कह रहा था–'बेटा तुमलोग भी पीए हो जाओगे।

राजनीतिक हल्कों मे आज कल तुमलोगों की ही चर्चा चल रही है।

इतना सुनते ही ताड़ी के जगह सबने मिलकर ब्रांडी का सेवन शुरू कर दिया था।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
भिण्ड, म०प्र०

दीप हूँ मैं

दीप हूँ मैं घोर तम में टिमटिमाता हूँ।
छाँटने को यह अँधेरा पग बढ़ाता हूँ।।

आदमी जंजाल बुनता, स्वार्थ का मन में बसेरा।
छल–कपट, पाखण्ड अंदर,नृत्य करते डाल डेरा।
मार कर जो पालथी बैठी हुईं मानव हृदय में–
उन कुचालों को सदा धूल चटाता हूँ।
दीप हूँ मैं घोर तम में टिमटिमाता हूँ।।

आँधियाँ जो सामने से वार कर आँखें दिखातीं।
दंभ में मद मस्त हो हुँकार भरके जो डरातीं।
नाचती हैं झूमती जो लक्ष्य मुझको है हराना–
मात खाती वे सदा, मैं मुस्कराता हूँ।
दीप हूँ मैं घोर तम में टिमटिमाता हूँ।।

कामना कुत्सित नशीली सर्पिणी सी फनफनाती।
व्याधियाँ बाधा समेटे मार्ग में हैं फन उठाती।
किन्तु क्या परबाह करना मैं जुटा निज काम में–
ज्ञान की नव वर्तिका सा झिलमिलाता हूँ।
दीप हूँ मैं घोर तम में टिमटिमाता हूँ।।

डॉ.प्रियंका भट्ट,
उदयपुर
(राजस्थान)

ओ कान्हा एक बार पुनः

ओ कान्हा एक बार पुनः
अवतार धरण कर आओ
भूल गये जो सब प्राणी
वो गीता ज्ञान सुनाओ
ओ कान्हा,,,,,,,,,,
कितने ही नवजात शिशु
काल के ग्रास बने हैं
घर–घर में कंस समान
अत्याचारी बड़े हैं
मानव के इस कंस रूप का
फिर संहार कराओ
ओ कान्हा,,,,,,,,,,,,
हर नारी डर रही बेचारी
दुर्योधन के भय की मारी
पाण्डव के सम मौन दृष्टि धर
दुनिया देख रही है सारी
अपने कृष्णाकी लाज बचाने
दौड़ के तुम आ जाओ
ओ कान्हा,,,,,,,,,,,,
घर–घर झगड़े क्रोध लाचारी
खून के रिश्ते खून पे भारी
विष –झलन का छाया गहरा
भाव–शून्य मानवता सारी
फिर से हर मानव को
मानवता का पाठ पढ़ाओ
ओ कान्हा,,,,,,,,,,,,
भ्रष्टाचार रिश्वत बेगारी
लोभ मोह लालच संग यारी
पद पेसा और नाम के खातिर
अन्याय अधर्म न्याय पर भारी
फिर से मानव मूल्यों को हर
मानव में जगाओ
ओ कान्हा,,, ,,,,,
कर्महीन हो कर्म को भूले
पड़ प्रपंच सब बने निठल्ले
यंत्रजनित सुख सुविधा पा कर
सिध्दान्त कर्म का सब भूले
फिर एक बार गीता का
कर्म उपदेश सुनाओ
ओ कान्हा एक बार पुनः
अवतार धरण कर आओ ।।।

सुखद और सुरक्षित दिवाली के लिए इन बातों का रखें ध्यान

– संगिनी डेस्क

रोशनी का त्यौहार दिवाली न सिर्फ आपके लिए बल्कि दूसरे के लिए भी सेफ और हैपी हो इसके लिए आपको कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखना चाहिए। ऐसा कर आप न सिर्फ पर्यावरण की रक्षा करेंगे बल्कि इसका फायदा आपको भी होगा।

हम सभी चाहते हैं कि हमारा त्योहार खुशियों से भरा हो। फिर चाहे वह होली हो, दिवाली या फिर कोई और त्यौहार... लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि त्यौहार सिर्फ हमारे लिए ही नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी सेफ होना चाहिए। रोशनी का त्यौहार दिवाली हम सभी के लिए सेफ हो और हम हैपी दिवाली मना सकें इसके लिए आपको कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखना चाहिए।

नकली मिठाई की करें पहचान :- दिवाली के मौके पर मिठाइयों की डिमांड बढ़ने की वजह से मिलावट का धंधा भी जोरों पर रहता है। ऐसे में बाजार से मिठाई खरीदने से पहले आप उसकी जांच कर यह जान सकते हैं कि यह मिठाई कहीं नकली तो नहीं है। इसके लिए आपको फूड लैब जाने की जरूरत नहीं बल्कि आप घर पर ही टेस्ट कर सकते हैं। इसके लिए टिंचर आयोडीन की ५ बूंदें, मिठाई के थोड़े से टुकड़े पर डालें और इसे गर्म करें। अगर मिठाई नकली होगी तो उसका रंग नीला या काला हो जाएगा।

असली-नकली खोये की पहचान :- मिठाइयों की मांग बढ़ने के साथ ही मिठाई बनाने में इस्तेमाल होने वाले खोये की डिमांड भी बढ़ जाती है जिस वजह से नकली और मिलावटी खोये का कारोबार भी फलने-फूलने लगता है। ऐसे में घर पर मिठाई बनाने के लिए खोया या मावा खरीदने से पहले इसकी जांच कर लें कहीं यह नकली तो नहीं है। इसके लिए खोये को उंगलियों में लेकर रगड़ें। अगर उसमें चिकनापन नहीं है, तो समझ जाएं कि वह नकली है।

पटाखों को कहें ना :- अगर आपको लगता है कि पटाखे जलाए बिना दिवाली का त्यौहार अधूरा है तो आप गलत सोचते हैं। दिवाली रोशनी का त्यौहार है और इसे तेज आवाज वाले खतरनाक पटाखे जलाकर इसका मतलब बदलने की जरूरत नहीं है। आप चाहें तो बिना पटाखे जलाए भी दिवाली के त्यौहार को खुशियों के साथ मना सकते हैं।

आँख-कान का रखें ध्यान:- अगर आप फिर भी पटाखे जलाने के बारे में सोच रहे हों तो कम आवाज और कम धुंए वाला ग्रीन पटाखा ही जलाएं और पटाखे जलाते वक्त अपने आँख-कान का खास ख्याल रखें। नायलॉन के कपड़े पहनकर पटाखे न जलाएं। बच्चों को पटाखों से दूर

रखें और उनके कान में कॉटन या ईयर प्लग लगा दें।

जलने पर पानी से धोएं :- अगर सावधानी बरतने के बावजूद आंखों में पटाखे की चिंगारी चली जाए तो आंखों को बिल्कुल न रगड़ें। इसकी जगह आँखों को साफ और ठंडे पानी से अच्छी तरह से १० मिनट तक धोएं और फिर मरीज को तुरंत आई स्पेशलिस्ट के पास लेकर जाएं।

मिट्टी के दीयों का इस्तेमाल:- दिवाली पर अपने घर को सजाने के लिए बिजली की झालर और लाइटें कितनी भी क्यों न लगा दी जाए लेकिन पारंपरिक मिट्टी के दीयों की बात ही अलग है। इस बार दिवाली पर भगवान आगे दीया जलाने के साथ ही घर सजाने के लिए भी मिट्टी के दीयों का ही इस्तेमाल करें। इस तरह से न सिर्फ आप वातावरण की सुरक्षा करेंगे बल्कि उन लोकल कारीगरों की भी मदद कर पाएंगे जो इन दीयों के जरिए ही अपना जीवनयापन करते हैं।

ऑर्गेनिक रंगों से बनाएं रंगोली :- दिवाली का त्यौहार जिस तरह से दीयों के बिना अधूरा है ठीक उसी तरह से रंगोली के रंगों के बिना भी दिवाली की खुशियां पूरी नहीं होती। घर के फेस्टिव लुक देने के लिए ज्यादातर लोग घर में एक से बढ़कर एक रंगोली बनाते हैं। लेकिन रंगोली बनाते वक्त केमिकल वाले रंगों का इस्तेमाल करने की बजाए ऑर्गेनिक कलर्स ही यूज करें। आप चाहें तो सिर्फ फूलों से भी रंगोली बना सकते हैं।

पालतू जानवरों का खास ख्याल :- आपकी दिवाली हैपी हो इसके लिए आपको अपने साथ-साथ अपने पेट यानी पालतू जानवर का भी ख्याल रखना चाहिए क्योंकि दिवाली के दौरान होने वाली तेज आवाज जानवरों को डरा देती है। लिहाजा दिवाली के दौरान जानवरों को घर में अकेला न छोड़ें और पटाखों से तो उन्हें बिल्कुल दूर ही रखें।

दूसरों के चेहरों पर लाएं खुशी :- दिवाली के दौरान घर की साफ-सफाई करते वक्त आपको ऐसी कई चीजें मिलती होंगी जिनका अब आप इस्तेमाल नहीं करते। फिर चाहे वे आपके पुराने कपड़े हों, खिलौने या फिर किताबें। आप चाहें तो इन पुरानी चीजों को गरीब और जरूरतमंदों के बीच बांटन के साथ ही उन्हें कुछ मिठाइयां और गिफ्ट्स भी बांट सकते हैं ताकि आपके साथ-साथ सुविधा से वंचित उन लोगों की दिवाली भी बन जाए हैपी।

प्लास्टिक का इस्तेमाल न करें :- गिफ्ट्स रैप करना हो या फिर दोस्तों और रिश्तेदारों को गिफ्ट्स बांटने जाना हो...प्लास्टिक बैग्स का इस्तेमाल भूल कर भी न करें। गिफ्ट्स और फूड आइटम्स पैक करने के लिए हैंडमेड पेपर बैग्स का इस्तेमाल करें।

सौंदर्य

दिवाली पर खास है दिखना तो इस तरह करें मेकअप

– डॉ आदित्य

दिवाली पर खास दिखना है तो मेकअप का भी परफेक्ट लगना जरूरी है। आप इसमें कोई गलती न कर दें इसलिए हम लाएं हैं मेकअप से जुड़ी कुछ टिप्स।

दिवाली पर कौन खास नहीं दिखना चाहता। इसके लिए खासतौर से महिलाएं स्पेशल साड़ी, जूलरी खरीदने के साथ ही पार्लर में भी अपनी ब्यूटी को निखारने के लिए काफी पैसे खर्च करती हैं। लेकिन पार्लर जाकर मेकअप करवाने का समय कम ही महिलाओं के पास होता है। तो क्यों न इस बार घर पर ही आप फेस्टिव मेकअप ट्राई करें, जो आपको ऐसा लुक देगा कि आप छा जाएंगीं।

कैसा होना चाहिए मेकअप का बेस?

सबसे पहले मेकअप का बेस सही होना चाहिए। चेहरे को अच्छी तरह से क्लीन और मॉइश्चराइज करने के बाद अपने स्किन टोन के हिसाब से सही फाउंडेशन चुनें और उसे चेहरे पर लगाएं। फाउंडेशन के बाद कंसीलर की मदद से चेहरे के डार्क स्पॉट्स जैसे आंखों के नीचे के डार्क सर्कल्स और ब्लेमिशेज पर काम करें। बेहतरीन फिनिश के लिए कंसीलर के बाद थोड़ा सा लूज पाउडर लगाएं। आखिर में नाक के टिप पर, चीकबोन्स पर और ठुड्डी पर हाइलाइटर का इस्तेमाल करें ताकि चेहरे पर ग्लो दिखे।

मेकअप प्राइमर :- मेकअप के बावजूद स्किन को ग्लोइंग दिखाना है तो प्राइमर जरूर लगाएं। इससे फाउंडेशन लगाने के बाद भी स्किन पर ग्लो बरकरार रहेगा, साथ ही में आपके पोर्स और स्किन को डैमेज भी नहीं होगा। इतना ही नहीं प्राइमर रिंकल्स, फाइन लाइन्स जैसी स्किन समस्या को छिपाने में भी बहुत मदद करता है।

इल्यूमिनेटर फाउंडेशन :- मार्केट में कई तरह के फाउंडेशन उपलब्ध होते हैं जो स्किन को अलग–अलग फिनिश देते हैं। फेस्टिव लुक के लिए इल्यूमिनेटर फाउंडेशन का इस्तेमाल करें। दरअसल इस तरह के फाउंडेशन में शिमर ऐड होता है जिससे स्किन पर लाइट पड़ने पर वह काफी शाइनी लगती है।

होंठों पर दें ध्यान :- होंठों पर लिपस्टिक लगाने से पहले लिप बाम का इस्तेमाल करें ताकि होंठों की ड्राईनेस या फटे होंठों की समस्या से छुटकारा पाया जा सके। अगर आपके आउटफिट का कलर पेस्टल हो तो आपको अपने लिपस्टिक का शेड बोल्ड रखना चाहिए। जैसे– सुर्ख लाल या ऑरेंज। लेकिन अगर आपके आउटफिट का कलर ब्राइट हो तो आपकी लिपस्टिक का शेड हल्का जैसे– लाइट पिंक या न्यूड कलर होना चाहिए।

आँखों की खूबसूरती :- क्या हमें आपको बताने की जरूरत है कि अब भी स्मोकी आई का ट्रेंड खत्म नहीं हुआ है। ब्राइट फेस्टिव लुक के लिए आप चाहें तो विंग्ड आईलाइनर का इस्तेमाल कर सकती हैं। अपने लुक को कंप्लीट करने के लिए हल्का मस्कारा यूज करें।

ग्लो के लिए ब्लश :- ग्लोइंग

फेस और ब्लशिंग चीक्स का कॉम्बिनेशन हमेशा ही बेहतरीन लगता है और दिवाली से बेहतर और क्या मौका हो सकता है इस लुक को अपनाने का। इसके लिए आप थोड़ा सा शिमरिंग ब्लश यूज करें और अपने गाल पर लगाकर गुलाबी गाल पा सकती हैं।

हेयर स्टाइल :- अगर आप इस दिवाली पटाखों से दूर रहने वाली हैं तो बाल में अच्छे से हेयर स्प्रे लगाकर बालों को खुला छोड़ सकती हैं क्योंकि खुले बाल में महिलाओं का लुक और भी बेहतरीन लगता है। लेकिन अगर आप दिवाली की रात दीये जलाते हुए पटाखे जलाने की प्लानिंग कर रही हैं तो आपको अपने बाल बांध लेने चाहिए और इसके लिए आप ट्विस्टेड साइड ब्रेड को ट्राई कर सकती हैं।

ब्लशर :- पाउडर ब्लशर की जगह क्रीम बेस्ड ब्लशर का इस्तेमाल करें। इस तरह का ब्लशर आपके इल्यूमिनेटर फाउंडेशन के साथ परफेक्ट मैच करेगा और आपके चीक्स के ग्लो को कम नहीं करेगा।

मैं राम नहीं हूँ

सैनिक कवि विशाल के. सी.
शोणितपुर (असम)

मैं राम नहीं हूँ
इसलिए मेरे पास लक्ष्मण जैसा भाई नहीं है
पर मेरे पास सीता जैसी जीवन साथी तो है
मगर मैं फिर भी उसके लिए कभी
राम न बन पाया तो
शायद ये मेरा दुर्भाग्य ही होगा।

ना मेरे पास हनुमान जैसा परम प्रतापी सेवक था
क्योंकि मेरे भीतर राम जैसी गुणवत्ता नहीं थी इसलिए मैं राम बन नहीं सका

पर मेरे पास अयोध्या नगरी थी
वह अयोध्या नगरी
जहाँ मेरे साथ कैकेई और मन्थरा भी थे
जहाँ जनता ने सीता के चरित्र पर आरोप लगाया था
और राम ने...
सीता को त्याग दिया था!
हाँ , यह सच है
वही अयोध्या नगरी मेरे पास भी है
जहाँ मैं कैकेई और मन्थरा से
आज भी युद्ध कर रहा हूँ
मेरी सीता के लिए
सत्य और न्याय के लिए।

खड़े हैं हजारों रावण
उसी अयोध्या नगरी के बाहर
जो मुझे वनवासी होते देखना चाहते हैं
और ...
मुझसे मेरी सीता को छीन कर
बहुत... बहुत दूर ले जाना चाहते हैं
पर मैं राम बन न सका
शायद इसीलिए मेरी सीता को मुझसे
दूर ले जा ना सका

वास्तव में देखा जाए तो
मैं ना सम्पूर्ण रूप से रावण ही बन पाया
और ना राम ही बन पाया
क्योंकि मेरे पास विभीषण तो था
पर कुंभकर्ण जैसा आज्ञाकारी भाई न था जो मेरे एक इशारे पे
खुद को कहीं भी अर्पित कर सके
पर मेरे पास मेघनाथ और लवकुश जैसे प्रतापी पुत्र खड़े तो हैं
मगर बाणों की शैया पर सोए भीष्म की तरह यह मेर दुर्भाग्य ही है
मैं उनके लिए एक कुशल पिता बन न सका

सच कहूँ तो
मैं अपने ही हिसाब-किताब में
कुछ भी ना बन सका
ना राम, ना रावण
यदि मैं रावण होता तो
कोई राम मेरा वध कर देता
यदि राम होता तो
फिर कोई रावण मुझसे मेरी सीता को हर लेता

इसलिए मैं एक 'शब्द' हूँ
तथा शब्द बनकर ही जीना चाहता हूँ
मेरे मन की अयोध्या में !!

दर्द की दहलीज़

डॉ. मञ्जरी चतुर्वेदी
भोपाल

ठहरा हुआ पानी जैसे एक कंकड़ की चोट से सिहर उठता है, उसी तरह गहरी सोच में डूबी मिताली भी फ़ोन की धनधनाहट सुन स्क्रीन पर आते हुए उस नाम को पढ़कर सहम गई. डरते – डरते कॉल रिसीव की....

क्या फ़ोन उठाने में इतनी देर लगती है? कॉल करने बाले व्यक्ति ने गुर्राते हुए कहा।

मिताली लड़खड़ाती हुई जुबान में कुछ बोलने की कोशिश करने लगी। पर डर से शब्द भीतर ही घुट कर रह गए।

तुम कितना लेट हो कुछ अंदाज़ा भी है तुम्हें वो आदमी फिर से चिल्लाकर बोला।

आ ही रही थी.. वो मीटिंग चल रही थी.. इसलिए.... , मिताली ने हिम्मत बटोरकर कहा।

मिताली आनन–फानन में पर्स में अपना सामान रखने लगी... समान रखते हुए उसकी डायरी से एक लिफाफा नीचे गिरा..उसने लिफाफा उठाया और उसमें से लेटर निकाल कर देखने लगी। उसने लेटर को कई बार पढ़ा। जैसे कोई उम्मीद बँधी हो उससे। फिर अच्छे से फोल्ड किया और वापस लिफाफे में रखकर पर्स में रख लिया। लेकिन कुछ ही पल में ना जाने क्या हुआ, उसने लेटर वापस निकाला। कुछ देर तक सोच में डूबी रही और आख़िरकार लेटर को मरोड़कर डस्टबिन में फेंका और वहाँ से निकल गई।

तभी पीछे से माया ने उसे आवाज़ दी,माया के हाथ में वही लेटर था। यह सब क्या है मिताली... तू इतनी कमज़ोर कैसे हो सकती है? माया की बात सुन,मिताली रुआँसी हो गई। माया और मिताली अच्छी सहेलियाँ होने के साथ ही एक ही स्कूल में टीचर भी थीं। इस लेटर के लिए तूने कितनी जद्दोजहद की है और जब मौका हाथ आया था तू पीछे हट रही है? माया ने लेटर उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा। माया क्यों ज़िद कर रही है, अखिल नहीं मानेंगे पागल.. उसको बताएगा कौन, ..माया ने मिताली के कंधे पर हाथ रखते हुए। मिताली ने एक पल को माया की तरफ देखा और फिर बिना कुछ कहे ही ऑटो में बैठ गई। ऑटो तेज़ गति से सड़क पर भागने लगा और मिताली का मन यादों के गलियारों में।

अखिल को पाकर मिताली की ज़िन्दगी वसंत के फूलों सी खिल उठी थी। ध्यान रखने बाले सास–श्वसुर, लविंग – केयरिंग पति.. किसी लड़की को अपने जीवन में और क्या चाहिए? अखिल का दिल अपने बड़े से ट्रांसपोर्ट के बिज़नेस और महल जैसे घर के बराबर ही बड़ा था। अकसर ये खुशियाँ मिताली को सपने जैसी लगती, क्योंकि मिताली साधारण से परिवार से थी। सामान्य सी दिखने बाली मिताली ने एक दिन यही बात अखिल से पूछी भी थी।

एक बात पूछूँ आपसे..

हाँ हाँ... क्यों नहीं?

आप इतने स्मार्ट हो... और मैं.... मैं तो आपके सामने कुछ भी नहीं..आपने मुझे क्यों चुना?

किसने कहा कि तुम सुन्दर नहीं हो....मेरा दिल तो पहली नज़र में ही तुम्हारी गहरी नीली आँखों और गालों के डिम्पल पर अटक गया था।

मिताली शर्म से लाल हो गई थी।

अखिल जितनी परवाह अपने माता – पिता की करते, उतनी ही मिताली की माँ की भी। अखिल के इन्हीं सब गुणों के कारण मिताली उसकी दीवानी हो गई थी। इसी प्रेम और दीवानगी का अखिल ने अच्छे से इस्तेमाल

किया। उसने मिताली को अपना बनाकर उसकी सारी जमा पूंजी, गहने, एटीएम यहाँ तक की हर महीने की सैलरी पर भी अपना हक जमा लिया था।

धीरे – धीरे झूठ की नींव पर खड़ा महल दरकने लगा था और उसको सँभालने और बचाने का सारा बोझ मिताली के कन्धों पर आ गया था। सर से पैर तक कर्ज़ में डूबे अखिल का दिल मिताली के डिम्पल पर नहीं उसकी सरकारी नौकरी पर जाकर अटका था। अच्छाई के मुखौटे की आड़ में मिताली का सब कुछ अपने बस में करने के बाद उसने अपना असली रंग दिखाना शुरू किया। असल में अखिल इंसान के भेष में जानवर ही था। वह मिताली को शारीरिक और मानसिक हर तरह से प्रताड़ित करने लगा था।

इन सब के बाबजूद मिताली उम्मीद करती कि कर्ज़ उतरने के बाद अखिल फिर से पहले जैसे हो जायेंगे। शायद परेशानियों ने उन्हें ऐसा बना दिया है, पर जैसे अखिल को तो कर्ज़ की कोई चिंता ही नहीं थी.. उसकी अय्याशियाँ और हैवानियत तो दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थी। मिताली हर पल डर के साये में जी रही थी। फिर भी वह बहुत बार इस बात का शुक्र मनाती कि उसकी ये हालत देखने के पहले ही माँ इस दुनिया को छोड़कर चली गईं।

रास्ते में गाड़ियों के शोर से मिताली अपने ख्यालों से वापस वर्तमान में आई। ट्रैफिक बहुत ज़्यादा था। मिताली ने घड़ी पर नज़र डाली। वह पहले ही पूरे आधे घंटे लेट थी। डर के मारे उसका बुरा हाल हो रहा था। वह बार–बार ऑटोबाले से तेज़ चलने को बोलती थी।

घर के गेट पर अखिल के दोस्त परम की गाड़ी देख, उसे थोड़ी राहत महसूस हुई। अखिल हमेशा अपने दोस्त के सामने अच्छा बनने का ढोंग करता था। मिताली के भीतर आते ही अखिल बोला, आज तो बहुत देर कर दी। खैर, फ्रेशअप होकर परम को बढ़िया सा चाय नाश्ता करवा दो।

मिताली ने अपना बैग साइड में रखा और किचन में जुट गई, उन दोनों को नाश्ता देकर अपने रूम में पहुँची, रूम की हालत देख दंग रह गई....रूम पूरी तरह अस्त व्यस्त था.... उसका कवर्ड बिखरा हुआ था... दराज़ों का सामान फैला हुआ था.... मिताली इन सब के बीच बेचैनी से अपना कुछ कीमती सामान ढूंढ़ने लगी.. पर उसे वो नहीं मिला... मिताली परेशान हो उठी... देर तक तलाश करने के बाद जब वह सफल नहीं हुई तो उसके सब्र का बांध फूट पड़ा.... गुस्से में कमरे में रखे फूलदान को ज़ोर से फेंका और फूट – फूट कर रोने लगी।

कमरे से किसी सामान के गिरने की आवाज़ सुन अखिल कमरे में आया और मिताली को रोते देख गुस्से से बोला, ये सब क्या हो रहा..क्यों तमाशा कर रही हो?

अखिल, वो पेंडेंट मेरी माँ की आखिरी निशानी है,प्लीज़ मुझे वापस कर दो।

कौन सा पैंडेंट..

प्लीज़ अखिल, मैं आपके लिए और मेहनत करुँगी, नौकरी के साथ ट्यूशन्स भी लूँगी, पर प्लीज.. वो मेरी माँ की आखिरी निशानी है प्लीज अखिल प्लीज उसको लौटा दीजिये....

मिताली अखिल से गिड़गिड़ाती रही,पर अखिल को कोई असर ना हुआ।

माँ तो नहीं थी.. पर मिताली को माँ का वह पैंडेंट उनके करीब होने का अहसास कराता... मिताली उससे इमोशनली अटैच थी.... मिताली ने अखिल के पैर पड़े..हाथ जोड़े... पर अखिल को ना फर्क पड़ना था ना पड़ा। मिताली मिन्नतें करती रही लेकिन अखिल उसे बिना कुछ कहे रूम से बाहर आ गया।

मिताली बदहवास – सी उसके पीछे दौड़ी...

परम के सामने मिताली को इस तरह देख अखिल अपना आपा खो बैठा..

उसने मिताली को ज़ोर से धक्का दिया...

मिताली साइड में रखी टेबल से टकरा कर गिर पड़ी.. सिर से खून बहने लगा..... और पेट पर दबाव पड़ने के कारण वह दर्द से कराह उठी।

अपने अजन्मे बच्चे को खोने के बाद भी अखिल के चेहरे पर सिकन तक नहीं थी। हर बार की तरह सैटरडे नाईट को पार्टी चलती रही। इन सब से मिताली पूरी तरह टूट चुकी थी। हर रात के अँधेरे को सूरज अपनी रोशनी से उजाले में बदल देता है, पर मिताली जान चुकी थी कि उसके रिश्तों में आ चुकी रात का अब अंत नहीं है। तार – तार हो चुके बंधन पूरी तरह कमज़ोर हो चुके हैं जिन्हें अब बुना नहीं जा सकता।

आखिर उसने निर्णय ले लिया था....संवेदनहीन रिश्ते को ख़त्म करने का। अखिल से तलाक लेने का। ज़िंदगी की नए सिरे से शुरुआत करने का बांध कर अपना सामान और समेटकर अपना टूटा बिखरा आत्मसम्मान। निकल पड़ी थी उस दर्द की दहलीज़ से बाहर अजनबी शहर की ओर.... साथ लेकर अपना दृढ़ – निश्चय और ट्रांसफर लेटर।

प्रियंका द्विवेदी
कौशाम्बी, उत्तरप्रदेश

माँ तुम हो मेरा संसार!

तुम ही चंदा, तुम ही खुसबू
तुम फूलों की डाली ,
तुमसे मेरी सारी खुशियां
होली और दिवाली ,
सज गया मेरा संसार
माँ तुम हो मेरा सँसार!

पंख लगा मैं संग उड़ूंगी
कलियां जब महकेंगी ,
माँ तुम इस घर का दीपक
रोशन जहां को करती हो ,
जब बरसेगा रिमझिम सावन
तब छलकेगा प्यार !
माँ तुम हो मेरा संसार !

जब रुखसत हूंगी मैं तुझसे
असह वेदना होगी ,
लेकिन तेरी चौखट पे माँ
सजदा सदा करूंगी ,
चारो धाम यही है मेरा
बद्री भी केदार भी!
माँ तुम हो मेरा संसार !

तुम से जीवन का किस्सा ,
तुम ही दुर्गा , तुम ही काली
निखिल सृष्टि का हिस्सा ,
तुमसे ही होता आया है
सदा सृष्टि विस्तार !
माँ तुम हो मेरा संसार !

रुद्र प्रकाश गुप्त सरस
हरदोई (उ.प्र.)

।। विजय पर्व दशहरा ।।

दे रहा संदेश हमको यह दशहरा ।।

न्याय पर अन्याय की निश्चित विजय है।
सत्य से है साथ जिसका वह अभय है ।।
त्याग–तप के बिन विजय की बात झूठी ।
राम के उस राज्य की गाथा अनूठी ।।

पात्र के बिन विजय अमृत फल न ठहरा ।
दे रहा संदेश हमको .....।।

थे कठिन वनवास के चौदह बरस वह ।
बाद इसके था अयोध्या का हरस वह ।।
बिन तपे चमका नहीं सोना कभी भी ।
श्रम सधे तो क्यों पड़े रोना कभी भी ।।

सतत श्रम से सफलता का प्रेम गहरा ।
दे रहा संदेश हमको .....।।

समझना है क्या कहाँ कर्तव्य अपना ।
साधना से ही हमारा पूर्ण सपना ।।
बल हमें देती रहेगी लगन अपनी ।
गर्मियों में भी पड़ेगी आग तपनी ।।

सब सुनेगा है नहीं वह ईश बहरा ।।
दे रहा संदेश हमको .....।।

भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव भी है दीपावली

डॉ. अलका जैन
'आराधना'
जयपुर (राजस्थान)

दीपावली भारत के प्रमुख त्यौहारों में से एक है। विभिन्न धर्मावलंबी इस त्यौहार को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह वो दिन है जब भगवान राम लंका विजय के पश्चात अयोध्या लौटे थे और अयोध्यावासियों ने दीप प्रज्वलित कर खुशियाँ मनाई थीं। वहीं जैन धर्म के अनुसार ये माना जाता है कि कार्तिक मास की अमावस्या के दिन जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

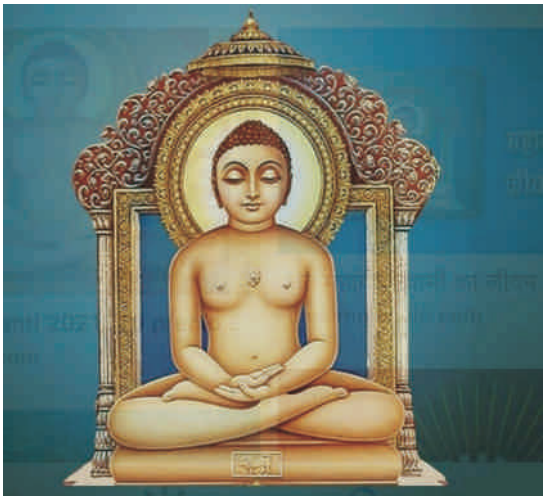

भगवान महावीर भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम के समान ही राजकुल में उत्पन्न हुए थे। दोनों ही नर रूप में अपने – अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे थे। राम ने जहाँ पिता के वचन के अनुपालन के लिए राजमहल का त्याग किया और सपत्नीक वनवासी हो गए। लक्ष्मण भी उनके साथ रहे। उन्होंने १४ वर्षों में धरती को राक्षसों के अत्याचार से मुक्त किया ... वहीं महावीर ने भी समस्त वैभव और राजपाट का त्याग किया। तपस्या की, ज्ञान प्राप्त किया, अपने ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया और इंसान से भगवान की पदवी तक का सफर तय किया। जहाँ राम ग्रहस्थ थे और उन्हें दुनिया के सामने एकपत्नीव्रत का आदर्श प्रस्तुत किया, मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए, वहीं महावीर ने वैराग्य को जीया। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य जैसे महाव्रतों की साधना की।

ऐतिहासिक आख्यानों और जैन धर्म ग्रंथों के अनुसार एक बार जब महावीर पावापुरी के मनोहर उद्यान में गए हुए थे, तब कार्तिक मास की अमावस्या के दिन सुबह स्वाति नक्षत्र में महावीर स्वामी ने अपने सांसारिक जीवन से मुक्ति पाकर मोक्ष की प्राप्ति की थी। उस समय इंद्र सहित समस्त देवों ने आकर भगवान महावीर के शरीर की पूजा की और पूरी पावानगरी को दीपकों से सजाकर प्रकाशयुक्त कर दिया।

इसी परम्परा का अनुसरण जैन समाज करता आ रहा है। जैन धर्मावलंबियों द्वारा प्रतिवर्ष दीपमालिका सजाकर भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव मनाया जाता है। उसी दिन शाम को श्री गौतम स्वामी को कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हुई थी। तब देवताओं ने प्रकट होकर गंधकुटी की रचना की थी। इस घटना के कारण दीपावली का महत्त्व और बढ़ गया। इस घटना की कालान्तर में व्याख्या हुई और

आज उसी उपलक्ष्य में सभी धर्मावलंबी सायंकाल दीपक जलाकर नए बही खातों का मुहूर्त करते हुए भगवान गणपति और माता लक्ष्मीजी का पूजन करते हैं। ऐसा माना जाता है कि बारह गणों के अधिपति गौतम गणधर ही भगवान गणेश हैं, जो सभी विघ्नों के नाशक हैं। उनके द्वारा कैवल्यज्ञान की विभूति की पूजा ही महालक्ष्मी की पूजा है।

भगवान महावीर के दिव्य–संदेश 'जीओ और जीने दो' को जन–जन तक पहुँचाने के लिए दीपावली मनाई जाती है। मंदिरों, भवनों, कार्यालयों व बाग–बगीचों को दीपकों से सजाया जाता है और भगवान महावीर की कृपा दृष्टि की प्राप्ति हेतु और उनके अनंत गुणों की आराधना हेतु जैन मंदिरों में निर्वाण लड्डू चढ़ाए जाते हैं। संदर्भ भले ही अलग प्रतीत होते हों पर दीपावली दो नरों के ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित होने की अमर गाथा का प्रतीक है। भगवान राम और भगवान महावीर .... दोनों ने मनुष्यता के नए मापदंड स्थापित किए, दुनिया का पथ प्रदर्शन किया, साथ ही ये भी बताया कि मानवीय दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है। यही कारण है कि राम 'नारायण' और महावीर 'तीर्थंकर' बन गए । चूंकि अहिंसा जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत है इसीलिए ये दीपावली पर की जाने वाली आतिशबाज़ी का घोर विरोध करता है । इससे प्रदूषण भी फैलता है और जीव हत्या भी होती है जो जैन धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध है। यही कारण है कि भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के रूप में दीपावली को 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत को अपनाते हुए मनाने पर बल दिया जाता है। ये हमारा कर्तव्य है कि हम इस त्यौहार को मनाते हुए अपने धर्म के मूल सिद्धांतों का सम्मान करें। ये वो सिद्धांत हैं जो किसी धर्म विशेष की पूंजी ना होकर समूची मानवता के जीवन के लिए आवश्यक शर्त है। जी हाँ हमें 'इको फ्रेंडली' रहते हुए त्यौहार मनाने चाहिए ताकि पर्यावरण प्रदूषण ना हो और जीवों को भी नुक़सान ना पहुँचे। फिर देखिए दीपावली की दीपमाला हमारे हृदयों के भीतर जगमगाएगी और दीपावली सार्थक होगी।

कविता

डॉ.विभा रजंन 'कनक'
नई दिल्ली

देवी दूर्गा के दोहे

प्रथम दिन नवरात्रि हो, शैलपुत्री का ध्यान।
भवसागर से तारती , दे देती अभय दान।।

दूसरे दिन याद करें , ब्रह्मचारिणी रूप।
तप त्याग की देवी है, मनमोहनी स्वरूप।।

देवी चन्द्रघंटा का हो , दर्शन तीसरे दिन
अस्त्र–शस्त्र सुशोभित है, पूजा करें निशदिन।।

चतुर्थ माँ कुष्मांडा हैं, हरती सबके रोग।
अमृत कलश लिए हाथ, बन जाए परलोक।।

पाँचवीं स्कन्दमाता हैं, मिटे शोक दुख रोग।
जो इनका सुमिरन करे, वह रहे स्वस्थ निरोग।।

छठवाँ रूप कात्यायनी, शोभे हाथ त्रिशूल।
इन्हें पुष्प अर्पण करें, नहीं चुभेंगें शूल।।

माँ कालरात्रि धर्म है , पधारो मेरे घर।
मेरा मन पवित्र कर दो, ना रहे मन में डर।।

महागौरी वर देती, ले जा हाथ पसार।
विनय सुन ले मेरी माँ , आई तेरे द्वार।।

सिद्धिधात्री कृपा करें, खोलो मन के द्वार।
भक्तगण तुझको पुकारे, जाऊँ मैं बलिहार।।

नवरात्रि व्रत को करिए, कट जाए सब पाप।
हाथ जोडें विनय करें , मिट जाए संताप।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

दीप-पर्व पर प्रेम का दीया जलाएँ...

शुभ संकल्पों से हम सब, दीपावली पर्व मनाएँ,
मन के अंधियारे को मिटाकर, नई रोशनी लाएँ।
सुवासित हो तन मन, हम ऐसे संस्कार अपनाएँ।।
पीड़ितों की कर मदद, उनके चेहरे पे ख़ुशी लाएँ।।

आओ हम सब दीप-पर्व पर, प्रेम का दीया जलाएँ...

नफ़रत की दीवार हम तोड़ें, प्रेम का संदेश फैलाएँ,
रूठें हों जो हमसे प्रियजन, चलो उन्हें आज मनाएँ।
जलते दीयों के प्रकाश से, हृदय का द्वेष तम मिटाएँ,
उनको भी हम खुशियाँ दें, जिनके चेहरे हैं मुरझाए।।

आओ हम सब दीप-पर्व पर, प्रेम का दीया जलाएँ...

भाग्य जो रूठा है हमसे, सद्कर्मों से उसे जगाएँ,
कठिन परिश्रम से हम, सफलता का सोपान बनाएँ।
माँ लक्ष्मी की करें पूजा, जो हमें धन कुबेर बरसाएं,
दीप प्रतीक होता ज्ञान का, अज्ञानता दूर भगाएँ।।

आओ हम सब दीप-पर्व पर, प्रेम का दीया जलाएँ...

आडंबर कुरीतियां दूर करने को, संकल्पित हो जाएँ,
मन कर्म व वाणी से हम, किसी को दुःख न पहुँचाएँ।
प्रार्थना है प्रभु से दीवाली पर, खुशियाँ हम सब पाएँ,
राष्ट्र, समाज व परिवार से, कटुता विषता मिट जाएं।।

आओ हम सब दीप-पर्व पर, प्रेम का दीया जलाएँ।।

अवनीश त्रिवेदी अभय
मोहरनिया (उत्तर प्रदेश)

नेह का दीपक जलाएं

आओ दीवाली में नेह का दीपक जलाएं,
बढ़ रहा जो नित नित वह तिमिर उर का मिटाएं।
सत्य के इस पर्व को एक नया आयाम दें हम,
वैर, नफरत जो दिलों में सब मिलकर हटाएं।
आओ दिवाली में नेह का दीपक जलाएं।
महलों जगमग हो किन्तु झोपड़ी रोशन रहे,
आपसी सौहार्द से महकता उपवन रहे।
कोशिशें ये भी रहे कोई भूखा न सोए,
जब तलक गंगा बहे इस देश मे अमन रहे।
कष्ट हावी हो न पाए ऐसी खुशियाँ लुटाएं,
आओ दिवाली में नेह का दीपक जलाएं।
मुश्किलों में साथ दें एक दूजे का बराबर,
ज़िंदगी के पथ पर लांघे अब हर सिंधु भूधर।
लक्ष्य पर जब चल पड़े तो मंज़िलें मिलती रहें,
कोई आँधी तूफ़ां अब रोक न पाए डगर।
खुशबुएँ अपनी सदा हम खिज़ाओं में उड़ाएं,
आओ दिवाली में नेह का दीपक जलाएं।
मज़हबों की आड़ में कभी न क़त्लेआम हो,
हर फ़िज़ा में गूँजता प्यार का पैग़ाम हो।
हर गाँव, गली, शहर की उन्नती होती रहे,
खुशबू महके हर सुबह रोशनाई शाम हो।
मैल दिल का मिटाकर एक नया रिश्ता बनाएं,
आओ दिवाली में नेह का दीपक जलाएं।

डिजिटल युग में बेहतर शिक्षक और शिक्षा का भविष्य

डॉ. शोभा जैन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

एक समय था जब किलों को विद्यालयों में बदला गया, हर शिक्षाकर्मी के हाथ में कंदील और किताब दे दी गई और उन्हें शिक्षा की क्रांति के लिए भेज दिया गया, पहाड़ों, जंगलों व दूरवर्ती इलाकों में इस तरह क्यूबा में किला, कंदील और किताब ने क्रांति की नई बारहखड़ी रची जिसने बन्दूक, बारूद और बम के बजाय बचपन, आनंद और शिक्षा का नया संसार रचा । अब हम तो इससे कहीं बेहतर स्थिति में हैं, सुविधा सम्पन्न कक्षाओं में शिक्षा देते हैं बच्चों को। पर आनंद की जगह परीक्षा में डर की शिक्षा को जन्म देने वाले जनक बन गये। लंबे समय से भारतीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर प्रश्न उठाया जाता रहा है हालाँकि गुणवत्ता हमारे देश में किस क्षेत्र में है यह भी विचारणीय स्वास्थ्य से लेकर राजनीति, व्यवहार से लेकर जीवन तक।

जब जीवन की गुणवत्ता नहीं तो शिक्षा की गुणवत्ता की कल्पना करना? हर दौर में हर शिक्षक को अपने आप से एक प्रश्न अवश्य करना चाहिए आखिर हम पढ़ा किसे रहें– पाठों को या बच्चों को? सर्जनात्मक शिक्षा जैसे अनेक विशेषणों से लदी शिक्षा में इसे बेकारी और तानाशाहों की शिक्षा भी कहा गया जिसमें शिक्षक स्वयं एक गुलाम की तरह सत्ता अथवा व्यवस्था को अपना वर्तमान और भविष्य सौंप चुके हैं। सच पूछा जाये तो कहीं भी जाएं, शासन और प्रशासन ये शब्द हमें डराते हैं। अस्पताल से लेकर पुलिस या अन्य सार्वजनिक सेवा सभी जगह व्यवस्था का डर हावी है। कम या ज़्यादा से पीड़ित डर के मनोविज्ञान से रची शिक्षा, शिक्षकों को उनके शिक्षक होने पर ही सवालों के घेरे में खड़ा कर देती है । क्योंकि शिक्षक स्वयं स्वतंत्र कहाँ ? उस पर इन दिनों वैकल्पिक रूप में शिक्षा का डिजिटल हो जाना ।

शिक्षा का समाज की समझ के परिप्रेक्ष्य में दायित्व कैसा और कितना है इस संदर्भ में कामु ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'द रेबल' में एक वाक्य में कहा है –– II the knowledge of world is not worth a child's tears. यूरी एजारेव ने अपनी पुस्तक 'ब्रिंगिंग अप चिल्ड्रन' में एक बात कही है जो बालक के माध्यम से एक समाज की ऐसी कल्पना करती है जिसके अंदर बालक की इच्छा का समाज है। बालक अपने को ऐसे लोगों के साथ रखना पसंद करता हैं जिनका व्यवहार उसकी अपनी चेतना के बहुत करीब हो । वह ऐसे लोगों के सम्पर्क में आ कर उनसे संबंध निभाना चाहता है जो उसे अच्छी तरह समझने का माद्दा रखते हैं और जिनके साथ वह प्यार के रिश्ते कायम कर सकता है। किशोर बालक सबसे ज्यादा तब खुश होता है जब कोई उसे उसके गुणों से साक्षात्कार करा दे, जिनके बारे में वह स्वयं बहुत मामूली ज्ञान रखता है। कहने का अर्थ शिक्षा से एक पूरे विकसित मनुष्य की कल्पना की गई, समूचे संसार को समझने के लिए

बहुआयामी सौंदर्य की, सामूहिक समाजोपयोगी कार्यों की कल्पना शिक्षा से की जाती है। ये सभी उदाहरण जिनका उल्लेख शिक्षाविद डॉ.रमेश दवे ने 'हम और हमारी शिक्षा' के संदर्भ में लिखे जिनके आशय में एक सवाल है जो अपने आप से ही करना होगा। क्या शिक्षक के रूप में हमारा कोई समाज है? क्या बालकों के रूप में बालकों का कोई समाज है? और उनके माता –पिता या अभिभावकों के रूप में क्या उनका अपना कोई समाज है? आज जबकि कॉरोना के निमित्त ही सही ऑनलाइन के रूप में अर्जित शिक्षा और उन्हें बालकों तक पहुँचाने वाले हम शिक्षक क्या सतत अध्ययन और चिंतनशील, दायित्वों के प्रति आस्थावान और समर्पित कर्म के प्रति गतिवान और बालक के विकास के प्रति चिंतित हैं? समाज ने हमें जैसी भी परिस्थिति दी पर हम बतौर शिक्षक समाज को लौटा क्या रहे हैं, यह विचार करने योग्य है।

कॉरोना संक्रमण के चलते लंबे समय से वीरान पड़े अकादमिक विभाग और उनके शैक्षणिक सत्र जिसमें कॉरोना ने हमारी गतिविधियों पर भले ही विराम लगा दिया पर सोच पर नहीं। क्या हम शिक्षक होते हुए यह सोच पाये कि इन दिनों हमने शिक्षा का विस्तार भले ही देखा पर विकास कितना कर पाये या यूं कहें हमारे समाज में ऐसे अभिभावक ही नहीं हैं जो यह कहते हों कि उन्हें कैसा शिक्षक चाहिए? कैसी शिक्षा चाहिए और वे कैसा बालक हमें दे रहे हैं? हम उन्हें कैसा लौटा रहे हैं? नई शिक्षा नीति ने बहुत उम्मीदें हमें दी हैं लेकिन उन उम्मीदों को पूरा करने के रास्तों से शिक्षकों को ही गुजरना है। हम शिक्षा को सत्ता कि ज़िम्मेदारी नहीं बनने दे सकते क्योंकि हर परिस्थिति में यह शिक्षकों का दायित्व है, लेकिन हम सत्ता या व्यवस्था के माध्यम से सोचने के आदि हो चले हैं जो बदलती रहती है। ऐसे में शिक्षा और शिक्षक का अपना अस्तित्व कहाँ? पाठ्यक्रम में तैयार सामग्री में किसानों के प्रति सम्मान की भावना, प्यार, इच्छा, उत्तेजना या क्रोध से या उसके अतिरेक से बचने, मज़दूरों के साथ आपसी मेल, ये सभी मानवीय मूल्य उस पाठ्यक्रम का हिस्सा बन सके। आपको जानकर आश्चर्य होगा 'बिग्रेडिस्टा' नामक किताब में अपनी समझ विकसित करने की उपरोक्त सारी बातें निहित थीं उसमें पहला ही वाक्य था– ''हुक्म देने से बचें''। युवा शिक्षकों से यह भी कहा गया कि छात्र से कहो, आईये काम शुरू करें, आइये पढाई शुरू करें। तानाशाही वाले लहज़े से बचो। इसकी शुरुआत तो शिक्षक से होगी। हमारे पास समयानुरूप बदलाव लिए नई शिक्षा नीति है जिसमें विद्यार्थियों को जड़ों से जोड़ते हुए भारतीय मानस के अनुरूप शिक्षा देने का लक्ष्य है पर क्या शिक्षक व्यवस्था से मिली अनेक अवांछित जिम्मेदारियों और दबाव के मध्य इस लक्ष्य को पूरे मनोयोग से पाने की तत्परता दिखा पायेंगे यह भी बड़ा प्रश्न है। चुनावों में ड्यूटी लगना, स्वास्थ्य शिविर में शिक्षकों का धकेला जाना क्या उनके शिक्षण कार्य को बाधित नहीं करता? उसके बाद जिस मानसिक दबाव से वह विद्यार्थियों के बीच पहुँचता है, उससे पाठ तो पढ़ाया जा सकता है पर छात्रों को नहीं। डिजिटल होते युग में बेहतर शिक्षक और शिक्षा का भविष्य उसके मानसिक परिवेश पर भी निर्भर करता है जिसमें सत्ता और व्यवस्था की अहम भूमिका रहती है।

इस दिवाली पर रखें अपनी डाइट का ध्यान

रजनी अरोड़ा
नई दिल्ली

दीवाली प्रकाशोत्सव के साथ–साथ बेहतरीन खान–पान और मिष्टान के बिना अधूरी सी लगती है। घर में पूजा से लेकर लेन–देन में मिठाई, ड्राई फ्रूट्स, केक, चॉकलेट जैसी चीजें खूब प्रचलन में रहती हैं। दिवाली के अवसर पर कई तरह के पकवान घर–घर में बनाए जाते हैं। बैलेंस डाइट फोलो करने वाले फीगर और हैल्थ कॉन्शियस लोग भी अक्सर ओवरगोल चले जाते हैं यानी अपने हेल्थ–गोल कुछ टाइम के लिए भूल जाते हैं।

त्यौहार के इस मौसम में विभिन्न तरह की मिठाइयों के मोह से खुद को नहीं रोक पाते। जिसकी वजह से उन्हें एक हद तक वज़न बढ़ने या पेट संबंधी बीमारियों से दो–चार होना पडता है। ओवर ईटिंग अच्छे–भले तंदरुस्त व्यक्ति के लिए भी परेशानी और बदहज़मी का कारण बनता है। जबकि उन्हें अपनी हेल्थ के प्रति अधिक सतर्क रहने की ज़रूरत होती है। अगर वे मोटापे, डायबिटीज़, हाइपरटेंशन, किडनी जैसी किसी बीमारी के शिकार हैं और उसे कंट्रोल करने के लिए अगर हेल्दी लाइफ स्टाइल फोलो कर रहे हैं तो कुछ भी हो, दीवाली के अवसर पर उसे भूलना नहीं चाहिए।

हालाँकि त्यौहारों की सीज़न में मिठाइयों की डिमांड बहुत होती है, लेकिन इनके निर्माण में कई बार शुद्धता और गुणवत्ता को अनदेखा किया जाता है। मिलावटी मिठाई खाने से पेट के इंफेक्शन्स और दस्त, अपच, अम्लता, हैजा, डायरिया जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इम्यूनिटी कम हो जाती है, शूगर लेवल बढ़ सकता है, हार्ट प्रॉब्लेम्स हो सकती हैं। इनसे दीवाली की मिठास में कड़वाहट आ जाती है और त्यौहार का मज़ा किरकिरा हो जाता है।

दूसरी ओर दिवाली के मौके पर कैलोरी रिच ऑयली फूड या गरिष्ट भोजन या पकवान और तरह–तरह की मिठाइयाँ घर–घर बनाई जाती हैं, जो खाने में तो भले ही मज़ेदार लगे लेकिन हमारी हैल्थ के लिए नुकसानदायक ही होती हैं। तिस पर अगर बनाने में सावधानी न बरती जाए या जीभ पर कंट्रोल न रखा जाए, तो कई बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

दिवाली में हेल्दी रहने के लिए कुछ टिप्स–

फेस्टिव सीज़न में बाज़ार में जब बड़े पैमाने पर मिठाइयाँ बनाई जाती हैं, तो उनमें वनस्पति घी या हाइड्रोजेनेटिड ऑयल का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है। इन ऑयल में ट्रांस फैट होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होते हैं। मिलावट को देखते हुए आजकल लोगों का रुझान बिस्कुट, कुकीज़, पेस्ट्रीज़, डोनेट जैसे बैकरी आइटम की ओर बढ़ा है। लेकिन इनमें भी वनस्पति डालडा घी का इस्तेमाल किया जाता है जिनसे बचने की ज़रूरत है।

कोशिश करें दिवाली पर मिठाइयाँ या बेकरी आइटम घर पर ही देसी घी में बनाएं। जिनमें चीनी की

मात्रा कम रखें। जहाँ तक संभव हो रिफाइंड की जगह देसी घी और ज्यादा से ज़्यादा ड्राई फ्रूट्स का इस्तेमाल करें। स्टीविया नेचुरल शूगर या शूगर फ्री मिठाइयाँ आसानी से बना सकते हैं। इनसे न तो बदहज़मी होने का डर रहेगा, न ही मोटापा बढ़ने का। इससे ये ज़्यादा टेस्टी और हेल्दी होंगे, हाइजीन के लिहाज़ से भी अच्छे होंगे। अगर संभव न हो तो ऐसी जगह से ही मिठाइयाँ लें जहाँ आपको विश्वास है कि देसी घी में डालडा वनस्पति की मिलावट नहीं होगी।

दिवाली के फेस्टिव सीज़न में अपनी हेल्थ के प्रति सचेत रहें। ऑयली और हैवी फूड से क्रोनिक डिजीज़ के मरीजों को ही नहीं, उन लोगो को भी खासी परेशानी का सामना करना पड़ता है जिनका स्टमक सेंसेटिव है या जिन्हें ब्लोटिंग या अपच की समस्या है। इसलिए उन्हें डेली रूटीन की डाइट पर खास ध्यान देने की ज़रूरत होती है। दिवाली के मौके पर अक्सर घरों में पक्का या फ्राइड तला हुआ ऑयली खाना बनता है। इसके लिए लंच–डिनर में बनने वाला भोजन अलग–अलग ऑयल में बनाएं। ऑयल को दो से ज़्यादा बार इस्तेमाल न करें। ऐसा ऑयल ज़्यादा नुकसानदेह होता है। संभव हो तो फ्राइड चीजों के बजाय ग्रिल्ड, रोस्टेड या एयरफ्रायर में कम ऑयल में बनी चीज़ें सबके लिए बेस्ट हैं। ऐसा खाना कम ऑयली होने के बावजूद टेस्टी भी होगा।

कोशिश करें इन दिनो कोई भी मील स्किप न करें। नाश्ता जरूर लें। रात के समय ऑयली फूड खाने से बचें क्योंकि रात में एक्टिविटी कम हो जाती है और पचने में कठिनाई होगी। खाने के साथ वेजिटेबल, रायता, दही और सलाद ज़रूर लें। इससे टमी फुलर का एहसास रहेगा और कोलेस्ट्रॉल कम बढ़ेगा।

इन दिनों बनने वाली स्पेशल मिठाई या नमकीन जैसे दिवाली स्नैक्स खाली पेट न लें। इससे लालच में ज़्यादा खाने के बजाय इन चीजों का सेवन सीमित मात्रा में ही कर पाएंगे। दिवाली स्नैक्स/खाना सर्व करते समय छोटी सर्विंग रखना बेस्ट है क्योंकि बाउल या प्लेट छोटी होगी तो खुद–ब–खुद इन चीजों का सीमित मात्रा में सेवन करेंगे। कोशिश करें कि एकाध बार ही लें ताकि कैलोरीज इनटेक लिमिट के बाहर न जाएं।

दिवाली के मौके पर मिठाइयों या ऑयली फूड का हेल्दी ऑप्शन लें जैसे– ड्राई फ्रूट्स, नट्स की वैराइटी, डार्क चॉकलेट, पनीर से बनी चीजें ले सकते हैं। रोस्टेड क्रंची नट्स कैलोरी से भरपूर दिवाली स्नेक्स और मिठाइयों कें बहुत अच्छे विकल्प हैं। फ्रेश फ्रूट्स और उनसे बने डेज़र्ट जैसे– फ्रूट क्रीम, फ्रूट कस्टर्ड, फ्रूट–वेजिटेबल सलाद या चाट लेना बेहतर है। ये खाने में काफी हेल्दी और टेस्टी तो होते ही हैं, मिठाई खाने की तलब को भी शांत करते हैं। हमारी स्किन और डायजेशन के लिए फायदेमंद होते हैं।

सबसे ज़रूरी है खुद को हाइड्रेट रखें। दिन में १०–१२ गिलास पानी जरूर पिएं। इससे एक तो हमारा डायजेशन ठीक रहेगा, ज़्यादा मात्रा में दिवाली स्नैक्स या जंक फूड खाने से भी बचे रहेंगे।

कोल्ड ड्रिंक्स जैसे सोडा या गैस वाली ऐरेटिड ड्रिंक्स लेने से परहेज करें। फ्रूट जूस या एल्कोहल लिमिटिड ही रखें क्योंकि ये ड्रिंक्स हमारी डाइट में सिर्फ कैलोरी बढ़ाते हैं, जो मोटापे का कारण बन सकते हैं, पोषण के लिहाज से ये फायदेमंद नही हैं। प्यास लगने पर पानी पीना ही बेस्ट है। अगर खाने का मन न हो और थकावट महसूस कर रहे हों तो नारियल पानी पिएं जिसमें मौजूद मिनरल्स प्यास बुझाने के साथ एनर्जी भी प्रदान करेंगे। इसी तरह शर्करायुक्त चाय–कॉफी या कैफीन भी ज़्यादा पीना नुकसानदेह है। ग्रीन टी पीना अच्छा ऑप्शन है, जिसे बनाने में टाइम तो कम लगता ही है, एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होने के कारण हेल्दी भी होती हैं।

फेस्टिव सीज़न होने के बावजूद अपनी फिटनेस पर ध्यान ज़रूर दें। काम ज़्यादा होने के बावजूद अपनी फिज़ीकल एक्टिविटीज़ न छोड़ें। भले ही कम टाइम के लिए करें लेकिन रूटीन एक्सरसाइज़ ज़रूर करें। बाहर न जा पाएं तो घर पर ही समय निकाल कर इंडोर एक्सरसाइज़ करें।

गरिमा सक्सेना
बैंगलोर (कर्नाटक)

छा जाये हर ओर उजाला

तेल भरे सबके दीपक हों
छा जाये हर द्वार उजाला
इस दिवाली सबके घर ही
सजें दीप, खुशियों की माला

दीपक की छोटी बाती को
चायनीज़ झालर धमकाते
त्यौहारों के अर्थ पुरानिक
नये दिखावों में खो जाते
माटी का भी मोल मिले कुछ
उसके सपने भी अँखुआते
जिसने चाक घुमा, माटी को
श्रम से है दीपों में ढाला

जगमग हो मावस कार्तिक की
सबकी खातिर हो दिवाली
श्री पहुँचे सबके घर–द्वारे
कहीं न बाकी हो कंगाली
गायें मंगलगीत सभी जन
खील–बताशे हो खुशहाली
चाहे छप्पन। भोग नहीं हों
हो पर सबके लिए निवाला

दीवाली तो कई मन चुकीं
बाकी आना रामराज्य पर
महलों पर तो रामकृपा है
बचे अभी दीनों के हैं घर
अबकी ऐसी दीवाली हो
जो ले सबके घर का तम हर
सभी वर्ग के लिए खुशी हो
हटे सुखों से दुख का ताला

अशोक 'आनन'
मक्सी (म.प्र.)

दीप जला तुम जाओ !

तिमिर–कुटीर की चौखट पर ,
एक दीप जला तुम जाओ ।
दीप – शिखा बन जल मैं जाऊँ ,
इतनी प्रीत निभा तुम जाओ ।
यौवन में सपने भी टूटे ;
टूट गया जब दिल का दर्पण ।
गुलशन में अब बहार कहाँ जब ;
प्यार का उजड़ गया गुलशन ।
पतझड़ जैसा लगता है जीवन,
बहार लेकर आ तुम आओ ।
दीप–शिखा बन जल मैं जाऊँ,
इतनी प्रीत निभा तुम जाओ ।
ग़मों से मैंने प्यार किया जब ;
खुशियाँ मुझे यहाँ मिली नहीं ।
मेरा भी जीवन,क्या जीवन है ;
जब महावर, मेंहदी रची नहीं ।
विधवा–सी सूनी पड़ी है मांग ;
सिंदूर बन समा तुम जाओ ।
दीप–शिखा बन जल मैं जाऊँ,
इतनी प्रीत निभा तुम जाओ ।
जलने से मैं डरूँ भला क्यों ;
जीवन ही जब बना हो बाती ।
इतना ही तुम मुझे बता दो ;
याद तुम्हें क्या मेरी भी आती ।
फंसा भंवर में आज सफ़ीना,
मांझी बन खिवा तुम जाओ ।
दीप – शिखा बन जल मैं जाऊँ,
इतनी प्रीत निभा तुम जाओ ।
जीवन में तुम भूला न देना ;
देती हूँ मैं तुम्हें कसम ।
सदा रही , मैं सदा तुम्हारी ;
चाहे ले लूं सात जनम ।
अंतिम इच्छा है इतनी मेरी,
अपना गीत बना तुम जाओ ।
दीप–शिखा बन जल मैं जाऊं,
इतनी प्रीत निभा तुम जाओ ।

रीना अग्रवाल
सोहेला (उड़ीसा)

काश! एक दिवाली ऐसी आती

दीपों का है ये त्यौहार
मन से मन का दीप जलाकर
घृणा–द्वेष का सब नाश करें
लक्ष्मी के आगमन की तैयारी बहुत है
द्वार पे बंदनवार सजे खूब हैं ।
आओ, किसी गरीब की चौखट पे
खुशियों का एक दीप जलाएं

धुम धड़ाके से पटाखे जलाते
उसकी आतिशबाजी से आंनद उठाते
पटाखों से रोशनी भी होगी
और थोड़ा धुँआ भी उठेगा
क्यों नहीं हम इको फ्रेंडली दिवाली मनाकर
पर्यावरण को भी बचाएं

लोगों की सलाह को छोड़ो
थोड़ी मिठाई ग़रीबों को दे दो
देंगे दुआ जब मनायेंगे दिवाली
ख़ुशियाँ जब आयेंगी दूर होगी
उनके जीवन की रात काली

काश! एक दीपावली ऐसी आती
राम जी की अयोध्या में छा जाती
सारा अयोध्या जगमगा उठेगा
हमारी संस्कृति फिर सजीव हो उठेगी !

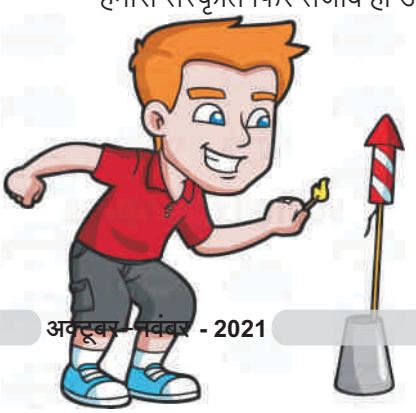

रुनु बरुआ
'रागिनी तेजस्वी',
जोरहाट (असम)
की दो कविताएँ

मातृभूमि

चलो चलें यश गाने
निज मातु सम माने
हिंद पुत्री खुद जाने
मातृभूमि को सजाओ
वृक्ष को न हम काटें
धरा को न हम बांटे
सारे भेद–भाव पाटें
मन सुख शांति पाओ
प्रकृति को माता माने
जीव कुल सम जाने
स्नेह भाव सब पाने
हृदय प्रेम जगाओ
पुण्य भूमि मेरी माता
स्वर्ग लोक कहलाती
प्रभु का घर सुहाता
ईश्वर के गुण गाओ।

२ कहे बंजारा

कर भला होगा भला
टल जाएगी वो बला
कहता बंजारा चला
थाम ले रे हाथ !
जीवन संघर्ष चला
सुबह का सूर्य ढला
सीख ले जीने की कला
निभा दे रे साथ!
जीवन चक्र की गति
ज्ञान ध्यान पाती मति
लक्ष्य पाना है सद्गति
बिता दे रे रात !
सबका साथ हो प्यारा
नाचे गाए हम यारा
बांटे सुख दुख सारा
हो जाय प्रभात!

डॉ सुकेशिनी दीक्षित
आगरा(उ. प्र.)

बहाव

बहो ... मत !!
संसारी नदी की
वेगमयी धारा में
रुको !!
तट पर ही
हर एक नदी
जो.... संसारी होकर..
बहती है
आत्म – नियंत्रण की
रस्सियों को
पल भर में
तोड़ देती है ।।
बहना ...छोड़कर
अनियंत्रित
लौकिक – नदी की
धाराओं में
सागर से मिलने की
भीतर की चाह में
उतरना
तुम !
उसी अलौकिक – नदी में
जिस में डूबकर
अंतहीन बहकर भी
सत्य का दृष्टा बन ,
सब कुछ पा लेता है .. आदमी ।।
तब वह बहाव
सार्थक होने की सीमाओं
के भी परे
अर्थ और परिभाषाओं के
अनेक रूपों में
पंक्ति–बद्ध , अर्थ–बद्ध
नहीं 'भी'
हो पाता है
किंतु
भीतर में
नव अनुभूति का
अकथनीय उजास ...
हो जाता है
बहुत अद्भुत और गहरा है .....
बहने ... और डूबने .... का
परस्पर ....
आत्मिक रक्त –वर्णी
ऊर्जा का
वह उजला सा
रहस्य !!!

राजपाल सिंह गुलिया
झज्जर, हरियाणा

१.
अपनों की निन्दा करें, करें ग़ैर का मान।
होता तब अपनाव का, मन भी लहूलुहान।।
२.
कमी बताऊँ आपकी, मेरी जानिब देख।
ठोकी तुमने कपट की, इस दिल में गुलमेख।।
३.
रहता वह किस हाल में, कभी झाँक कर देख।
बदली जिसकी वोट से, तेरी किस्मत रेख।
४.
वहम दूर हो आपका, जन हैं मालामाल।
आकर देखो तो कभी, हम रहते किस हाल।।
५.
करते थे गुणगान जो, खोज रहे अब खोट।
बदल गए ये लोग जब, हुई आँख की ओट।।
६.
बात आपकी बेतुकी, कैसे लें हम मान।
आँखों से देखी नहीं, पड़ी कभी ना कान।।
७.
सास कहे गर एक तो, बहू सुनाए चार।
नहीं किसी को दीजिए, प्रभु ऐसा घरबार।।
८.
घर का मुखिया जब लगे, करने मदिरापान।
बोलो गाँव जहान में, कौन करेगा मान।।
९.
उनसे हुई चुनाव में, बड़ी एक ये चूक।
कही सुनी ना काम की, रहे बिलोते थूक।।
१०.
छोड़ आपदा देश की, करें स्वयं का गान।
सुनकर बातें आपकी, पके हमारे कान।।
११.
चढ़ता सदा चुनाव का, जन पर यूँ उन्माद।
पाँच साल की बात भी, रहे न उनको याद।।
१२.
करते थे हर फैसला, लेकर जो हथियार।
किया उसी हथियार ने, उनका भी संहार।।

प्रियंका पांडेय त्रिपाठी
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

नारी ने हार कहाँ मानी

जब-जब विपदा पड़ी भारी,
नारी ने हार कहाँ मानी।
चंचल-चपल कुशाग्रबुद्धि,
सब्र धीरज धर भृकुटी तानी।।

ना आंच आने दी परिवार पर
उठ खड़ी हुई बनी मेरूदण्ड।
जब - जब उठी गलत नज़र,
फोड़ी आँख बाज बनकर।।

एक ही सपना नेत्रों में पाला,
जीना बस स्वाभिमान से जीना।
कम से कम में कर लेंगे गुजारा,
ईमान ना कभी अपना बेचना।।

हर हालात पर रखती पैनी नज़र,
हिम्मत-हौसले से लेती काम मगर।
ना घबराती कैसा भी आये तूफान?
परिवार खातिर बन जाती सेतु-बांध।।

हंसती-मुस्कुराती घर संभालती,
ना जाने कितनी पीढ़ियाँ संवारती?
बाहर भी खुद्दारी से करती काम,
कुटुंब का करती हरदम सम्मान।।

अनुपमा कट्टेल
दीमापुर (नागालैंड)

मज़दूर की व्यथा

मैं इस देश का बेटा हूँ
एक मज़बूर मज़दूर हूँ
कंधों पर जिम्मेदारी ढोकर
पसीने से लतपथ
रात-दिन
कड़े श्रम से चुर
मैं एक मज़बूर मज़दूर हूँ
तपती धुप हो या हो
कंपकपाती सर्दी
तमाम तरह के बोझ उठाते
थकता नहीं मैं
मुझे
न तो कॉरोना का भय
न और किसी भी बीमारी का
प्रजातंत्र चलाने में ही
सिर्फ मेरा योगदान रहा है
न तो गिला है किसी भी सरकार से
न ही कोई उम्मीद मैं रखता
बस, दुःख की विभीषिकाओं को
हरपल झेलता
पत्थरों और पहाड़ों से है प्यार हमें
क्योंकि-
पत्थरों पर ही जन्म लेते हैं
बच्चे हमारे
और
कभी पत्थरों पर
कभी पहाड़ों पर
दबकर दफन हो जाते हैं हम
खबर तो पढ़ते ही होंगे आप ?
पेट की आग के कारण
विषम परिस्थितियों में भी
मज़दूरी बंद न करता
धूप से झुलसे चेहरे हमारे
उभरी नसों वाले
खुरदरे हो चुके हमारे
कठोरतम हाथ
इतिहास गवाह है
नून्यतम पारिश्रमिक पर
मैं अपना जीवन जीता
बस, मैं एक मज़बूर मज़दूर हूँ।

रश्मि संजय श्रीवास्तव
'रश्मि लहर', लखनऊ

यह मन जरा सा

आज चिंतन के वृहद मस्तक पर संकोचन ज़रा सा ।
थक चुका विश्राम करना चाहता, यह मन ज़रा सा ।।

भावनाएं चली मिलने, हृदय से कुछ कर निवेदन।
पाँव धोने को हुए तत्पर, नयन–भर जल अकिंचन ।।

कुसुम कलियों से सुसज्जित, घूम लूँ मधुबन जरा सा।
थक चुका विश्राम करना चाहता, यह मन जरा सा ।।

मुदित मन अपलक निहारूँ, शाख की तितली सखे ।
रोक लूँ गर्जित घनेरे, मेघ की बिजली सखे।।

सन्निकट अनुभूति करना चाहता, यह तन जरा सा ।
थक चुका विश्राम करना चाहता, यह मन जरा सा ।।

गीत फिर प्रमुदित स्वरों से, गूँजने चहुंदिशि लगे ।
प्रार्थना करने चले कुछ भाव, अधरों पर सजे ।।

प्रथम आलिंगन प्रिया से चाहता जीवन जरा सा ।
थक चुका विश्राम करना चाहता, यह मन जरा सा ।।

ढूंढ लो अपनी कमी को ...

सतीश द्विवेदी
दसियांव (बिहार)

समझता हो जो मेरी तिश्नग़ी को.
कहाँ खोजूँ मैं ऐसे आदमी को.

उजालों ने दिये हैं ज़ख़्म अक़्सर,
शमा अब ढूँढती है तीरग़ी को.

किनारे दर्द देते हैं हमेशा,
कहाँ मालूम होता है नदी को.

अग़रचे दोस्ती निभती नहीं तो,
निभाकर देखिए फ़िर दुश्मनी को.

हुआ है देखकर हैरां ज़माना,
तुम्हारे हुस्न की बाज़ीग़री को.

हमेशा ज़िक्र क्या करना ग़मों का,
कभी तो बाँटिए अपनी ख़ुशी को.

करोगे कब तलक़ ग़ैरों की बातें,
सतीश अब ढूँढ लो अपनी कमी को.

वरिष्ठ साहित्यकार, समाजसेवी, कवि
श्री कुलदिप खन्ना 'दिप' की
दिल को छू लेने वाली कविताओं के संग्रह

1. आभार (हिन्दी में)
2. HOLI SOUL (अंग्रेजी में)
3. कसक (हिन्दी में)

मात्र १५०/– रुपये (प्रति संग्रह) में घर बैठे
रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्राप्त करें

राशि निम्न बैंक खाते में जमा करवा कर सूचित करें

बैंक ऑफ बड़ौदा : कुलदिप खन्ना
बचत खाता न. : 01230100080876
IFSC CODE : BARB0AJMERX

संपर्क :– कुलदिप खन्ना 'दिप'
३५, अम्बावाडी कॉलोनी, तोपधड़ा,
अजमेर (राजस्थान) मो. ८२३९९९५८३१

साझे की अम्मा

नीलू शुक्ला
भोपाल, (म.प्र)

चारों ओर सिमेंट और कंक्रीट से बने मोर की आकृतिनुमा जालीदार रोशनदान और दो मंजिला, दो आंगन वाला बड़ा सा मकान पिछले नौ महीनों से वीरान सा था।

घर के मुखिया चार बरस पहले ही परलोक सिधार गए, बची थी उनकी धर्मपत्नी।

वह भी पिछले फाल्गुन को चल बसी और अपने पीछे छह संतानें, दो बहुएं, नाती–पोते छोड़ गईं।

साथ में पहली मंजिल के चार किरायेदारों का परिवार भी,,,,। अम्मा के दो लड़के हैं बड़े ने दो ब्याह रचाए, पहली से निभी नहीं तो बिना तलाक के दूसरी लिवा लाए।

पहली मायके में अपनी बिटिया के साथ २५ साल से माँ–बाप के साथ जीवन काट रही है।

थोड़ा सामंजस्य विठाती, धीरज धरती तो आज अपने ही द्वारे होती।

दूसरा बेटा अपने दो बच्चों और पत्नी के संग बाहर रह कर नौकरी करता है। अम्मा के चार बिटिया भी हैं। चारों अपने–अपने घर में सुखी हैं,,,,,,, फिर भी जब तक अम्मा ज़िंदा रहीं तो बिटिया ताने मारत रही कि हमें कहाँ ब्याह दओ अम्मा,,,,!!

अम्मा यही कहती रही कि तुम सबको सरकारी नौकरी चाकरी वाला लड़िका चाहिए रहा,,, सो ब्याह कर दीनगा।

अम्मा और पिताजी ने अपने लड़कों से अधिक चारों लड़कियों के लालन–पालन और शिक्षा में ध्यान दिया। और एक से बढ़कर एक संभ्रांत और प्रतिष्ठित परिवार में उनका ब्याह भी किया।

अम्मा के बड़े बेटे की पत्नी ने मायके जाकर दुनियाँ भर के आरोप कोर्ट कचहरी करवाए, जिससे पूरा घर और अम्मा का जीवन नर्क हो गया। यहाँ तक कि दोनों प्राणियों को जेल तक जाना पड़ा,,, और साथ में छोटे बेटे को भी। लेकिन आरोप निराधार होने के कारण दो दिन बाद ही छूट गए,,,,जेल चाहे एक दिन की हो या जीवन भर की, बाद का अपमान नहीं सहा जाता,,,,, तब तो छोटा बेटा भी बहुत छोटा था। मुश्किल से आठवें नौवें दर्ज़े में रहा होगा। उसका जीवन भी बर्बाद था समझो,,,,पढ़ाई छोड़ बस में क्लीनरी भी करनी पड़ी,,,,क्योंकि कुछ समय के लिए मोहल्ला जो छोड़ना पड़ा था। जैसे–तैसे जीवन पटरी पर आया और उसकी पढ़ाई भी किश्तों में चलती रही।

अम्मा जिन्होनें पूरा जीवन संघर्षों में बिताया पति की नौकरी बाहर होने के कारण अकेले ही बच्चों का लालन–पालन किया। बचा–खुचा जीवन कोर्ट कचहरी में बर्बाद हुआ।

अम्मा जिनकी रौबदार बुलंद आवाज़ से पूरे घर में सन्नाटा पसर जाया करता था। और किरायेदारों का शोरगुल पल में शांत हो जाया करता था।

बच्चों के घर आने की खुशी में अम्मा व्यंजनों की झड़ी सी लगा दिया करती थीं,,,,,और अम्मा के व्यंजनों की महक पूरी गली में बिखर जाती,,,,,अम्मा के ज़मानें में अचार और मुरब्बों के मर्तबान

ठसाठस भरे रहते थे।

अम्मा को सबकी पसंद ना पसंद का खासा ख़्याल रहता था। और आज अम्मा के अंतिम समय में एक औलाद भी न पहुँची। अरे! दो दिन के ही दस्त में अम्मा निढ़ाल हो चुकी थी,,,,,छोटे बेटे और बहू के पहुँचते–पहुँचते अम्मा ने चोला छोड़ दिया था। किरायदारों नें घर को अपनी बपौती मान कर अम्मा की सेवा के नाम पर खूब नोचा खसोटा,,,,जिसके जो हाथ लगा दुबका लिया।

अम्मा का बड़ा बेटा तो पिताजी के मरने पर भी झांकनें नहीं पहुँचा तो अम्मा के समय कैसे आता,,,,बगल का बड़ा वाला प्लॉट बेच कर पिता जी से पहले ही अपना हिस्सा ले चुका था।

छोटे बेटे ने अम्मा का क्रिया कर्म किया और नौ महीने भाई बहनों के घर आने का इंतज़ार भी किया,,,,,पर कोई नही आया।

घर खाली छोड़ना मुश्किल लगने लगा था क्योंकि किराएदारों का कब्जा घर में बढ़ने लगा था।

अंततः घर बेचने की नौवत आ गयी।

अम्मा के ज़िंदा जो औलादें अंतिम समय पर न पहुँची,,,,, घर बिकने का सुन भागी–भागी पहुँच गई। और अपने छोटे भाई से एक स्वर में कहने लगीं कि अब तो माँ–बाप भी नहीं हैं फिर काहे का भाई और काहे की भौजाई।

इस घर में हम सब बराबर के हक़दार हैं, हमें भी हिस्सा चाहिए। भैया तुमने कौन सा तीर मारा है, अम्मा को सिर्फ चिता पर रख कर जलाया ही तो है!!

व्यग्र पाण्डे
गंगापुर सिटी
राज.

आया दीपावली त्यौहार...

आया दीपावली त्यौहार
लाया खुशियां बेशुमार।

घर–आँगन की साफ–सफाई
दीवारों की हुई पुताई
गली मौहल्ले दमके सारे
सजावट लिए हाट–बाज़ार
आया दीपावली त्यौहार।

रसगुल्लों के हैं हँसगुल्ले
जलेबी नवेली मारे ठल्ले
सोनपपड़ी सोनपरी सी,
करें सबका जो सत्कार
आया दीपावली त्यौहार।

हम माटी के दीये लगायें
स्वदेशी वस्तु अपनायें
दीप–पर्व पर देशप्रेम के
सब गावें मंगलाचार
आया दीपावली त्यौहार
लाया खुशियाँ बेशुमार।

डॉ. तृप्ति गोस्वामी काव्यांशी
जोधपुर (राजस्थान)

दीप जलाओ

दीप से इतने दीप जलाओ,
अमावस का तीमिर हरो।
जगमग करती दिवाली पर,
मावा मिष्ठान के थाल भरो।।
अयोध्या आये थे जब श्री राम,
महक उठा था प्रत्येक धाम।
तब प्रकटी थी माँ लक्ष्मी जी,
दिपोत्सव संग हुई धूम धाम।।

सुख, समृद्धि और वैभव संग,
धन, ऐश्वर्य लाती लक्ष्मी मां।।
अरुण वसन परिधान कर,
पूजन करते सब तेरी माँ।।
चमकती रहे आभा धरा पर,
हर मानव मात्र हो प्रदीप।
भरपूर उत्साह,आह्लादित मन,
घर आंगन हो प्रज्वलित दीप।।

आओ हम सब दीप जलाएं,
कोई घर ना छूटने पाएं।
तमसो मा ज्योतिर्गमय का,
घर घर हम संदेश पहुँचाएं।।
असतो मा सद्गमय का,
हम सबको पाठ पढ़ाएं।
आओ हम रोशनी फैलाएं,
सब मिलकर दिवाली मनाएं।।

मेकअप

डॉ. हंसा दीप
टोरंटो, कनाडा

यह उस दिन की बात है जब शमा को थोड़ी फ़ुरसत थी।

बाहर घूमने का मन तो था लेकिन अधिक उत्सुकता नहीं थी। कुछ दिनों से आइना बहुत परेशान कर रहा था उसे। लगातार कह रहा था कि चेहरा अब ढुलमुल हो रहा है। आँखों के गड्ढे जो पहले चश्मे में दब जाया करते थे, वे अब और उभर कर सामने आ रहे हैं। चेहरे पर जगह-जगह काले धब्बे ऐसे दिखने लगे हैं जैसे किसी ने काले परमानेंट मार्कर से मॉडर्न आर्ट का कोई स्कैच बनाना शुरू किया हो और बाद में ऐसे ही छोड़ दिया हो। स्किन झूलने लगी है। तैयार होकर निकलते समय लगता ही नहीं कि अभी नहा-धोकर फ्रेश हुए हैं। उम्र का तकाज़ा सुना तो था मगर इस तरह चुपके से चेहरे को शिकार बनाएगा इसका अंदाज़ा नहीं था। सिलवटें-दाग-धब्बे उभरकर आँखों के सामने इस तरह खड़े हो गये थे कि बार-बार एलबम निकाल कर अपनी पुरानी तस्वीरें देखने का मन करता। वह तस्वीर और यह चेहरा दोनों मिलकर कहते कि कपड़े चाहे कितने ही अच्छे पहन लो मगर चेहरे पर रौनक तो होनी ही चाहिए।

बिटिया ने कहा – ममा, आपको ब्यूटी टिप्स चाहिए।

आप तो सस्ता सामान लगाती हैं चेहरे पर, उससे आपकी स्किन खराब हो रही है।

इतना पैसा बचाकर कर क्या करोगी ममा? कुछ अपने लिये तो खर्च कर लिया करो।

शमा को समझ में आ गयी बिटिया की बात। कभी-कभी बड़ों की अड़ियल सोच को बच्चों की लाठी आगे बढ़ाती है। वही हुआ। उसकी सोच भी जागी। सारे सुप्त सिद्धांत जाग कर कहने लगे – पता नहीं है क्या, पूत सपूत तो क्यों धन संचे, पूत कपूत तो क्यों धन संचे?

अपनी बेटी को तो जानती ही है वह। खुद की कमाई का कितना हिस्सा तो डोनेट कर देती है! कभी गरीब छात्रों की स्कॉलरशिप के लिये तो कभी हॉस्पिटल में गरीब बच्चों के इलाज के लिये। जो शमा ने उसके लिये इकट्ठा किया है वह सारा पैसा ममा के जाते ही इधर-उधर बाँट देगी और खुश हो जाएगी कि इतना काम कम हुआ। इतना पैसा सँभालने की झंझट खत्म हुई। बहरहाल, शमा ने अपने साथ न्याय करते हुए तय कर ही लिया कि आज जो भी खर्च हो, अपने चेहरे को सुधारने के लिये उसे कोशिश करनी ही होगी। वहाँ जाना चाहती थी जहाँ कम पैसे लगे और नेचुरल मेकअप का सामान मिले। ऐसा न लगे कि मेकअप चुपड़ा हुआ है। सोच-विचार के बाद टोरंटो के मशहूर स्टोर शॉपर्स पर पहुँची। यहाँ का ज़्यादातर सामान तो अच्छा होता ही है, सर्विस भी बहुत अच्छी होती है।

मेकअप सेक्शन में इधर-उधर चक्कर लगाते हुए मदद करने वालों को खोजने लगी। दो पेशेवर मेकअप करने वाली युवा लड़कियाँ थीं। उनके चेहरे बहुत ही कोमल, दमकते हुए ऐसे दिखाई दे रहे थे जैसे उनकी स्किन पर किसी ने एक खास कलर के नेचुरल रंग से पेंट कर दिया हो। हर जगह, एक समान। लग ही नहीं रहा था कि ये चेहरा किसी जीते-जागते इंसान का है, ऐसा तो सिर्फ किसी बेबी डॉल का ही हो सकता था। खूबसूरती तो जन्मजात होती ही है पर आजकल की इन लड़कियों ने प्रकृतिप्रदत्त सुंदरता को चिर स्थायित्व देने की कोशिश में कई नये आयाम रच दिए हैं। इतनी अच्छी तरह तैयार होती हैं कि युवा लड़कों के साथ ही उम्रदराज महिलाओं-पुरुषों की आँखें भी इनके चेहरे से नहीं हटतीं।

दोनों लड़कियाँ ग्राहकों के साथ व्यस्त थीं। उन दोनों के अलावा और कोई लड़की दिखी नहीं शमा को। दस मिनट बीत गए पर किसी के आने के कोई आसार दिखाई नहीं दिए। उसका धैर्य जवाब दे रहा था। इधर-उधर नज़रें डालीं कि कोई तो हो जो उसकी मदद करे। तभी किसी

ने कहा – क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।

एक गोरा चिकना लड़का शमा के ठीक सामने खड़ा था। हल्का–सा मेकअप था चेहरे पर, वही तामझाम था जो उन दोनों लड़कियों के पास दिख रहा था। सफेद एप्रिन पहना हुआ था जिसमें दाएँ–बाएँ पॉकेट थे। कई तरह के ब्रश भरे हुए वे पॉकेट पूरे के पूरे टूल बॉक्स लग रहे थे, चेहरों को सुधारने के विविध उपकरण।

उसने पूछा – आप कुछ ढूँढ रही हैं, शायद!

जी हाँ, ढूँढ तो रही हूँ पर सब व्यस्त दिखाई दे रहे हैं।

मैं आपके लिये कुछ करूँ?

धन्यवाद, मैं अपने लिये मेकअप खरीदना चाहती हूँ पर मुझे मदद चाहिए।

तो कहिए मैं आपको क्या दिखाऊँ, फेस मेकअप, आई मेकअप?

आप! शमा हक्का–बक्का–सी उसे देख रही थी। ज़ाहिर–सा था कि वह असमंजस में थी।

जी, आइए मैं आपकी मदद करता हूँ।

शमा के पास अब कोई विकल्प नहीं था – जी फिलहाल तो फेस मेकअप का सामान लेने के लिये आयी हूँ। मेरे चेहरे पर इतने रिंकल्स हैं, इतने दाग–धब्बे हैं। उसकी कोई प्रतिक्रिया हो उसके पहले ही शमा ने अपनी कमजोरियों को विस्तार से बता दिया।

आइए मैं आपको मेकअप का बढ़िया सामान दिखाता हूँ। हमारे पास बहुत अच्छे ब्रांड्स हैं, आपको जरूर पसंद आएँगे।

और वह शुरू हो गया एक के बाद एक प्रोडक्ट दिखाते हुए। उसे यूँ मेकअप के लिये मदद करते देखकर शमा की मन:स्थिति उलझन में थी। शायद इसीलिये वह सहज नहीं हो पा रही थी और बार–बार कनखियों से उस ओर देख रही थी जिस ओर वे लड़कियाँ ग्राहकों के साथ व्यस्त थीं। हालाँकि वह लड़का बहुत अच्छी तरह से हर उत्पाद के बारे में बता रहा था। शमा उसके समझाने के तरीके से बेहद खुश थी पर झिझक तो थी। ऐसी झिझक कि जब वह स्किन की किस्म जानने के लिये शमा के चेहरे को ध्यान से देखता तो वह सहम जाती। दोबारा शमा को देखकर वह कुछ ढूँढने लगता तो शमा को लगता कि आज न जाने क्या होगा मेरे चेहरे का। शमा के हावभाव देखकर उस लड़के को आभास हो गया कि यह कस्टमर दुविधा में है।

वह बोला – अगर आप चाहें तो मैं आपका मेकअप करके आपको डेमो दे सकता हूँ।

अच्छा! विस्मय से भरे शब्द बाहर आए। संकोच तो हुआ पर उसकी आवाज़ में इतना मीठापन था कि शमा ना कह ही नहीं पायी। उसे सिर्फ़ इसलिए विस्मय नहीं हो रहा था कि वह लड़का है, इसलिये भी हो रहा था कि वह बिल्कुल लड़कियों की तरह नाजुक लहजे में बात कर रहा था। इससे भी बड़ी उलझन ये थी कि इस तरह लड़कियों की तरह बात करने वाले लड़के गे हो सकते हैं जो किसी लड़के की पत्नी बनकर अपना जीवन गुज़ारते हैं। और इन सबसे भी अधिक इसलिये हो रहा था कि अपने आपको आधुनिक मानने वाली शमा, इतनी असहज क्यों थी! प्रकृति का यह पहलू स्वीकार करने में इतनी बेचैन क्यों हो रही थी, क्यों बार–बार लड़कियों की प्रतीक्षा कर रही थी कि वे इस ऊहापोह से उसे बचा लें।

जब वह शमा की आँखों का, उसके चेहरे का हल्के–हल्के हाथ से मेकअप कर रहा था तो शमा आँखें मींचे ऐसे बैठी हुई थी जैसे कि जरा–सी भी आँखें खोलीं तो न जाने क्या हो जाएगा। वह अपना काम इतने आहिस्ते से कर रहा था कि लग ही नहीं रहा था कि यह किसी पुरुष का हाथ है। तकरीबन दस मिनट लगे उसे। थोड़ी देर और हो जाती तो शायद शमा को झपकी भी आ जाती।

जब उसने आँखें खोलने के लिये शमा से कहा तो धीरे–धीरे आँखें खोलते हुए उसने देखा कि एक बड़ा सा आइना है उसके सामने, और उसमें जो चेहरा है वह बिल्कुल नया है। दाग–धब्बों से विहीन। शमा को मेकअप का बेहतरीन सामान देने की सफल कोशिश थी यह। वह खुश होकर भी खुश नहीं थी, हैरान थी अपनी सोच से। उसकी विनम्रता की दाद नहीं दे पायी। थोड़ी–सी प्रशंसा भी नहीं कर पायी, यहाँ तक कि उसे धन्यवाद भी नहीं कहा। क्यों शमा उसे

उस रूप में स्वीकार नहीं कर पा रही थी? अन्यमनस्क-सी खुद में उलझने लगी। उसे लगा अगर वह उस लड़के के व्यक्तित्व को, उसके काम को, उसकी विनम्रता को स्वीकार नहीं कर पाती है तो अपने भीतर छुपी ऐसी कई गाँठों को खोल पाने के बजाय उनमें और जकड़ती जाएगी।

अपने संकुचित खयाल उसे अपनी ही नज़रों में गिरा रहे थे। लिंग भेद का सदैव विरोध करती रही। आज क्या हुआ! उसके इस पक्षपाती रवैये ने लिंग भेद करने वालों में एक नाम उसका स्वयं का भी जोड़ दिया था। बाहर निकलते हुए उसने पलट कर देखा तो वह लड़का मुस्कुराते हुए उसे विदा दे रहा था। उसने बहुत कोशिश करके मुस्कुरा कर हाथ हिलाकर उसे प्रत्युत्तर दिया तब भी शमा का पूरा ध्यान उसकी ओर नहीं बल्कि अपने दिमाग की उस ग्रंथि पर था जिसकी गाँठ को रत्ती भर ढीली करने में भी उसे खुद से जूझना पड़ रहा था।

दो पल के लिये उसके कदम रुके। एक बार फिर से स्टोर के अंदर गयी। उसी लड़के से वह सारा सामान जो उसने डेमो में प्रयोग किया था, खरीदा। उसका नाम पूछकर उसे इतना अच्छा मेकअप करने के लिये धन्यवाद कहा। स्टोर से बाहर निकलते हुए खुश थी शमा। चेहरे का मेकअप तो धुल जाएगा पर कभी न धुलने वाले मेकअप की मुस्कान ने चेहरे की आभा को और बढ़ा दिया था।

पुस्तक समीक्षा

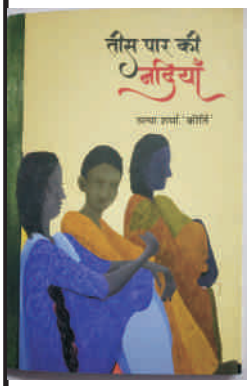

प्रकाशनार्थ : पुस्तक समीक्षा :
जीवनबोध और रागात्मकता को कविताएँ : तीस पार की नदियाँ
कृति : तीस पार की नदियाँ (कविता संग्रह)
कवयित्री: सत्या शर्मा 'कीर्ति'
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, सी-४६, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन, बाईस गोदाम, जयपुर -३०२००६
संस्करण :२०२० कीमत : रुपये १५०/-

समीक्षक :- राजकुमार जैन राजन,आकोला,राजस्थान

मन के भाव गद्य या पद्य जिस भी माध्यम से कहे जाएं, बस पाठक के दिल तक पहुंचना चाहिए।आज विकास की अंधी दौड़ में भौतिकता का बोलबाला है।पाश्चात्य संस्कृति-सभ्यता सुरसा की तरह मुंह बाए खड़ी है जो भारतीयता को नेस्तानाबूत कर देना चाहती है।वर्तमान जीवन की दुरूहता व जटिलताओं ने कोमल भाव छीन लिए हैं।इस बीच मुक्त छंद कविताओं की भीड़ में यदि कोई अच्छा कविता संग्रह पढ़ने को मिल जाये, जिसकी कविताएँ मानवीय संवेदनाओं में लिपटी हो तो सुकून मिलता है।बहुत दिनों बाद एक सार्थक कविता संग्रह पढ़ने को मिला है, रांची की सत्या शर्मा 'कीर्ति' का 'तीस पार की नदियाँ'।

इस संग्रह की अधिकांश कविताएं पाठकों को अपना सहयात्री बनाने में समर्थ बन जाती है।संवेदनाओं से ऊर्जस्वित इन कविताओं में कवयित्री के गहरे जीवनबोध एवं रागात्मकता का परिचय तो मिलता ही है, जीवन को खूबसूरत बनाने तथा जीवन और समाज में लय, ताल, एवम अनुशासन की आवश्यकता पर जोर है तो स्त्री चेतना को जागृत और विकसित करने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। देखिए ये पंक्तियाँ- 'अपने जीवन के समुद्र में / विलीन हो जाने से पहले /वो करती है इंतज़ार /उस अनाम तट का /जहाँ तीस पार होती /लड़कियों के लिए होता है / संगम का मोक्ष द्वार।'

सत्या कीर्ति जी ने अपनी रचनाशीलता और लेखकीय प्रतिबद्धता से अबतक उल्लेखनीय सफर तय किया है यही कारण है कि उनकी हर कविता में एक विशिष्टता दिखाई देती है। स्त्री जीवन अपने आप में एक महान चलचित्र है।उसमें छिपे दर्द के सुरों को कवयित्री ने सुना और और उन्हें शब्द देकर पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जो सामाजिक संदर्भों से प्रेरित हों अथवा प्राचीन प्रसंगों को पुनः परिभाषित करते हों- अपने पाठकों को भाव व विचार की एक नई दुनिया मे ले जाते हैं। देखिए ये पंक्तियां - ' जब संघर्षों की धूप /झुलसाने लगे तुम्हारे आत्म विश्वास को /उग आए फफोले तुम्हारे थकते पाँवों में /जब मन की पीड़ा हो अनकही / पुकार लेना मुझे।'

इस कविता संग्रह में हरेक रिश्ते की अहमियत देखी जा सकती है तो सृजन की पीड़ा, किन्नर विमर्श, मैं मजदूर, सेल्समेन, शहीदों के नाम, मैं बुद्ध होना चाहती हूं, रेप पीड़ित बेटी के पिता का दर्द, मुक्ति बाहर नहीं,अंदर है, जैसी संवेदनाओं से सिक्त कविताएँ भी हैं। ये कविताएँ किसी अन्य अनजान लोक से नहीं आती हमारे बीच, हमारे आसपास ही उपजती और पनपती रहती है...किंतु कोई रचनाकार ही अपनी पारखी दृष्टि से चुनकर और संवेदना से सँवारकर उन्हें शब्दों के संसार में स्थापित करता है। सत्या शर्मा 'कीर्ति' ने ऐसी ही कविताओं को आकार दिया है, जो अपने जमाने से दो-दो हाथ करते भी दिखती है। कभी न हार मानने की जिद्द, कभी न रुकने की हट 'तीस पार की नदियाँ' में आद्यन्त विद्यमान है। मानव मूल्यों व नारी के आदर्श, जिजीविषा और नारीमन की कोमलता, साहस, हठ का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण इस संग्रह की कविताओं में बखूबी हुआ है।

सत्या शर्मा 'कीर्ति' को इस महत्वपूर्ण कविता संग्रह 'तीस पार की नदियाँ' के लिए हार्दिक बधाई। बोधि प्रकाशन ने पूरी उत्कृष्टता व गुणवत्ता से इस संग्रह को प्रकाशित किया है। कवर पेज को कुँवर रविन्द्र के बनाये कलात्मक चित्र से सजाया गया है। आशा की जा सकती है कि यह कविता संग्रह समकालीन कविता जगत में विशेष सम्मान अर्जित करेगा और साहित्य जगत में सराहा जाएगा। मंगलकामनाएं!

कोरोना के साथ दिवाली

डॉ. देशबन्धु
'शाहजहाँपुरी'
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

दिवाली का त्यौहार पास आता जा रहा था। लेकिन महेश के मन में इस बार ज़्यादा उल्लास नहीं था। कारण यह था कि इस बार कोरोना महामारी ने सभी त्यौहारों को फीका कर दिया था। महेश के चाचा होम्योपैथी के डॉक्टर थे। उन्होंने लॉकडाउन में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ाने वाली दवाइयाँ मुफ्त बाँटकर जनता की बहुत सेवा की थी।

सबसे ज़्यादा परेशानी का सामना गरीबों को और झुग्गी झोपड़ी में रहने वालों को करना पड़ रहा था। क्योंकि एक तो उनके पास महंगी दवा के लिए पैसों का अभाव था, दूसरी ओर झुग्गी झोपड़ियों के आसपास फैली ढेर सारी गन्दगी में मच्छर लगातार पनप रहे थे।

उस दिन महेश ने अपने दोस्त प्रदीप से ऐसे ही बातों बातों में कहा,–'' पूरे शहर में कॉरोना के साथ साथ मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। मेरे चाचा जी होम्योपैथी के डाक्टर हैं। होम्योपैथी दवाई न तो महंगी होती है और न ही उसका कोई विपरीत प्रभाव पड़ता है।''

कुछ पल रूककर उसने फिर कहा,–'' मेरे दिमाग में एक विचार आ रहा है। इस बार हम लोग पटाखों और आतिशबाजी में पैसे बरबाद न करके, यदि हम लोग अपनी जेब खर्च के पैसों को बचाकर, होम्योपैथी की शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ाने वाली दवाइयाँ, झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले गरीबों को मुफ्त में बांटें तो इससे गरीबों को बहुत लाभ होगा। इसके साथ ही हम लोग मिलकर झुग्गी झोपड़ियों के आसपास फैली गन्दगी को साफ करने का अभियान चलाएं तो इससे हम लोग शहर में डेंगू, मलेरिया आदि बीमारियों को और फैलने से रोक सकते हैं।''

प्रदीप को महेश के विचार बहुत पसन्द आए। उसने तुरन्त उसका साथ देने की हामी भर दी। फिर क्या था, महेश और प्रदीप ने अपने अन्य मित्रों को भी अपनी इस योजना से अवगत कराया। जो भी इस योजना को सुनता, तुरन्त तैयार हो जाता। सभी ने अपनी जेबखर्च की राशि इस अभियान के लिए देनी शुरू कर दी। धीरे धीरे लगभग पाँच हजार रूपए इकट्ठे हो गए। महेश ने जब अपने डॉक्टर चाचा से होम्योपैथी दवा के बारे में पूछा और अपनी योजना उन्हें बतायी तो वे भी बहुत खुश हुए। उन्होंने न केवल उन दवाइयों के बारे में महेश को बताया बल्कि सीधे दवा बनाने वाली कम्पनी से बात करके बहुत ही सस्ते दामों में दवाइयाँ मंगवा दीं। फिर महेश और उनके दोस्तों के काफिले के साथ चाचा जी स्वयं दवा बाँटने के लिए झुग्गी झोपड़ियों में गए।

महेश ने सफाई अभियान के लिए रविवार का दिन चुना। उस दिन सुबह से ही सभी दोस्त महेश के साथ झुग्गी झोपड़ियों के आसपास फैली गन्दगी को साफ करने में जुट गए। नालियों में भरी ढेरों पॉलीथीन, जिनसे नालियाँ बन्द हो गयी थीं, उन्हें बाहर निकाल कर मैदान में इकट्ठा किया। और फिर कूड़े को भी एक

ही जगह पर एकत्र करके उसे जला दिया। शाम तक झुग्गी झोपड़ियों के आसपास का दृश्य ही बदल गया था। सफाई अभियान में न केवल महेश और उसके दोस्त थे, वरन स्वयं झुग्गी झोपड़ियों में निवास करने वाले लोग भी सफाई करने में जुटे थे ।

महेश के इस सफाई अभियान ने न केवल झुग्गी झोपड़ियों की, वरन उसकी कॉलोनी की हालत भी बदल दी थी, क्योंकि अब कॉलोनी के लोगों ने भी कूड़े के ढेर को बजाए नालियों में फेंकने के, इकट्ठा करके उसे जलाना शुरू कर दिया था।

महेश के इस कार्य की पूरे शहर ने प्रशंसा की। अगले दिन समाचार पत्रों में भी महेश और उसके दोस्तों के इस पुनीत कार्य की खबरें प्रमुखता से छपीं। हर वर्ष हज़ारों रूपए की आतिशबाजी जलाकर भी महेश और उसकी टीम को वो दिवाली की ख़ुशी नहीं मिलती थी , जो आज उनके इस अभियान से मिल रही थी। कॉरोना के साथ दीपावली की यह ख़ुशी सभी के लिए यादगार बन गई थी ।

।। विजय ।।

विजय सिंह चौहान
इंदौर (मध्यप्रदेश)

पिछली दीपावली के समय ही सबने मना कर दिया था। घर ले जाओ माँजी को और सेवा कर लो।

कुछ ने मरीज़ के सामने ही कह दिया... मुन्ना अब ज़्यादा समय नहीं है, बेहतर है तुम माँ को घर ले जाकर गीता जी सुनाओ और गंगाजल पिलाओ।

इन शब्दों ने मानो असंख्य सुई एक साथ शरीर में भेद दी। मन–मस्तिष्क शून्यत्व को छू गया। आँखों के सामने अंधेरा सा छाने लगा, हताश भाव भी सजल हो उठे।

रुग्ण माँ के हाथों को थामें काकू आज नि:शब्द था। बीमार माँ ने बेटे की मनोदशा को भाँपते हुए कहा, 'बेटा, चल अपने घर चलते हैं।'

अस्पताल से रास्ते का सफर काटे नहीं कट रहा। उधर नीली बत्ती का सायरन कानों में शीशा घोल रहा था।

उस दिन घर पहुँचते ही माँ ने सब बच्चों को एकत्रित किया और कहा, 'बेटा, जीवन–मरण सब विधाता के हाथ में है। मगर एक बात कहूँगी मन के हारे, हार है और मन के जीते, जीत। इसलिए मुश्किल घड़ी में अपने मन को जीतना ही जीवन है। यह सीख आज भी कानों में गूंजती है क्योंकि कल ही माँ, बड़ी बहू से कह रही थी कि, बेटा, दीपावली आने वाली है इस बार अपने आंगन को गोबर से लिप कर गेरू के मांडने बनाना, आँगन खिला खिला अच्छा लगता है।

फूलझड़ी मुस्करा दी

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'
रतनगढ़ (म.प्र.)

बेक्टो ने सूतलीबम उठाया। दूर ले जा कर जला दिया। ज़ोर की आवाज़ हुई। यह देख कर पास रखी फूलझड़ी सहम गई। चकरी को चक्कर आने लगे।

''अरे भाई ! धीरे आवाज़ किया करो। हमें बैरा कर दोगे क्या?'' चकरी चिल्लाई।

''क्यों भाई ! मेरी आवाज़ अच्छी नहीं लगती है। इसे सुन कर अच्छे अच्छे सहम जाते हैं। यह धमाके की आवाज़ होती है,''सूतलीबम ने कहा, '' सेक्टो को देखो। जब भी मेरी आवाज़ होती है वह अपने कान बंद कर लेता है।''

''हाँ सही कहते हो। सभी तुम्हारे दीवाने हैं। जिसे देखो वह तुम्हें ही जलाने की बात करता है?'' फूलझड़ी ने निराश हो कर कहा, ''हमें कोई कोई जलाना ही नहीं चाहता है।''

यह सुन कर सूतलीबम को अपनेआप पर अभिमान हो गया, ''सब मेरी आवाज़ को पसंद करते हैं। तुम्हें कौन जलाएगा। मरीमरी सी आवाज़ में जलती हो? कोई धमाका भी नहीं करती हो।''

''सही कहा भाई, ''चकरी बड़ी देर से उन की आवाज़ सुन रही थी। ''मैं तो बिना आवाज़ की हूँ। जलती हूँ तो सुरर्र सुरर्र करती हूँ। मुझे कौन जलाना चाहेगा।''वह निराश थी। बहुत देर से डिब्बे में पड़ीपड़ी बोर हो रही थी।

''बस ! इस डिब्बे में बैठी रहो। आज तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं है,''सूतलीबम ने कहा। तभी बेक्टो ने आ कर एक बड़ासा सूतलीबम उठा लिया।

''अब में इसे जलाऊँगा। यह जम कर आवाज़ करेगा,''कहते हुए वह बम जलाने गया।

''अब देखना ! अब मेरे यह साथी सूतली बम कितनी जम के आवाज़ के साथ फूटता है?'' कहते हुए सूतलीबम ने बेक्टो की ओर देखा। वह उसे ले कर दूर चला गया था। वहाँ जमीन पर रख कर उस की बाती में आग लगा दी। मगर, यह क्या? बहुत देर तक बाती जली। फिर बूझ गई।

बेक्टो पास में गया। अचानक सूतलीबम फूट पड़ा। बेक्टो ने उसे हाथ में उठाया था। वह चीख पड़ा।

'' हाय मर गया !'' बेक्टो के हाथ में सूतलीबम फूट गया था।

श्रेया और उस की मम्मी पास में खड़े थे। वे दौड़ कर बेक्टो के पास गए। उस का हाथ झुलस चुका था। वह अपना हाथ लटका कर चिल्ला रहा था। उस के हाथ पर तुरंत पट्टी बांधी गई। मगर, उस का हाथ ज़ोर से जल रहा था। उसे डॉक्टर के पास ले जाया गया।

डॉक्टर ने उस के घाव को साफ किया। उस को सुई लगाई। बाद में हाथ में पट्टी बाँध दी गई। अब बेक्टो सूतलीबम नहीं जला पा रहा था। उस का एक हाथ घायल हो गया था।

वह सूतलीबम के पास आ कर बोला, ''ये खतरनाक है। इन्हें डिब्बे में बंद करके रख दो।''

''इस से वायु प्रदूषण भी होता है।'' मम्मी बोली तो श्रेया ने पूछा, ''मम्मी ! पटाखे प्रदूषण फैलाते हैं।''

''हाँ।'' मम्मी ने कहा, ''तुम्हें नहीं पता। ये दो तरह का प्रदूषण

फैलाते हैं।''

''दो तरह का प्रदूषण?'' श्रेया चकित थी। उसे तो वायु प्रदूषण के बारे में नहीं पता था।

''हाँ। एक तो ये जम कर आवाज करते हैं, इस से ध्वनि प्रदूषण होता है। यदि हजारों पटाखे एकसाथ जलाये जाएं तो इन की तेज आवाज़ से कई व्यक्ति बेहरे हो सकते हैं।''

''वाकई मम्मी !'' श्रेया को यह बात आज ही पता चली थी।

''हाँ बेटा!'' मम्मी ने कहा, ''दूसरा ये जल कर वायु को प्रदूषित करते हैं।''

''हाँ मम्मी सही कहा। दिल्ली में इसी प्रदूषण की वजह से सांस लेना मुश्किल हो रहा है। वहाँ दिन में भी कोहरा छाया रहता है। इन के धुएँ से कई बीमारियाँ फैलती हैं।''

''पटाखे किसी भी तरह से लाभदायक नहीं होते हैं।''

''सही कहती हो मम्मी, इन पटाखों को अब मैं नहीं चलाऊँगी,''कहते हुए श्रेया ने पटाखों का डिब्बा एक तरफ रख दिया। हाथ में फूलझड़ी ली। उसे जलाने लगी। पास रखी चकरी उठाई। फूलझड़ी से चकरी जला दी। चकरी जल कर नाच उठी। वह जोरजोर से घुम रही थी। उस के चारों ओर हंसी के फव्वारे जैसी चिंगारियाँ निकल रही थीं।

दूर पड़ा बम चुप था। उस का घमंड चूर हो गया था। अब कोई उसे जलाने वाला नहीं था। उस की तेज आवाज़ और जम कर फूटने की वजह से बेक्टो का हाथ जल गया था। कोई भी उसे वापस जला कर खतरा मोल नहीं लेना चाहता था।

सभी चकरी और फूलझड़ी जला रहे थे। यह देख कर फूलझड़ी मुस्करा दी।

''देखो ! अब हमारे भी नाचनेगाने के दिन आ गए।''

''ठीक कहती हो बहन!'' सूतलीबम अपनी मरी हुई आवाज़ में बोला, ''किसी को अपनी योग्यता पर धमंड नहीं करना चाहिए। किसी एक में कोई गुण होता है तो दूसरे में दूसरा गुण होता है।''

''हाँ ठीक कहा भैया, ''चकरी नाचते हुए गाने लगी, ''भाई मैं नाच सकती हूँ। तुम चिल्ला सकते हो और फूलझड़ी हंस सकती है। यही हमारा गुण है।'' कहते हुए सभी खिलखिला कर हंस पड़े।

''चलो ! हम मिल कर दिवाली मनाते हैं,''सभी एक साथ बोल पड़े। कह कर पटाखें भी दीपावली मनाने लगे।

डॉ. पूनम चौहान
बिजनौर, उत्तर प्रदेश

मुन्ना है चुलबुल्ला रे ।

मुन्ना है चुलबुल्ला रे।
करता हल्ला – गुल्ला रे।
पाँव पटकता,शोर मचाता,
पकड़े माँ का पल्ला रे।।

दादी की ये माला खींचें,
और दादू का चश्मा जी।
भैया के कांधे पे चढ़ता,
पापा बनते घोड़ा जी।

जब भी स्वेटर बुनती मम्मी,
छीने ऊन का गुल्ला रे।।
मुन्ना है चुलबुल्ला रे ।।

मारे झपट्टा,बाज के जैसा,
फुर्ती एक शिकारी सी।
नज़र जो चूके,पल भर में,
करता गड़बड़ भारी जी।

सीधे बाहर दौड़ लगाये,
दरवाज़ा जो खुल्ला रे।।
मुन्ना है चुलबुल्ला रे।।

नकल की सजा

बाल कहानी

विमला नागला
अजमेर, राजस्थान

बात उस समय की है जब मैं कक्षा तीन में पढ़ती थी। एक बार मैं अपने पापा–मम्मी के साथ अपने गाँव गई।

मुझे गाँव में बहुत मज़ा आता था। बड़े से पेड़ पर झूलते हुए, बैलगाड़ी में बैठकर खेत पर जाने में और कुंए पर चलते चड़स देखने, वहाँ नहाने और बहुत देर तक पानी के कुंड में खेलने, बहते पानी के धोरों में कागज की कश्ती चलाने में, मिट्टी के घर बनाने में, पेड़ों के पत्तों की उक्तियाँ बनाने में।

एक दिन मेरी बुआजी,मेरी मम्मी और मैं पैदल–पैदल हमारे खेतों की तरफ जा रहे थे। मैंने देखा तीन–चार बच्चे मेरी ही उम्र के अपनी भैंसों पर बड़े मजे से बैठकर सवारी कर रहे थे।

अब तो मैने जिद पकड़ ली कि मैं भी भैंस की सवारी करूँगी ।

बुआजी और मम्मी ने बहुत समझाया कि देखो, इन बच्चों को तो रोज का अभ्यास है, और तुम्हें।

... पर मुझे कुछ नहीं सुनना था।

मैं और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। हठ करने लगी। मेरे बहुत रोने पर मेरी बुआजी का मन ममत्व से पसीज गया और उन्होंने वहाँ से गुज़र रही एक भैंस पर मुझे भी बैठा दिया। मैं पहली बार भैंस की सवारी से डर तो रही थी, पर मन में इतनी खुश थी जैसे कोई राजकुमारी घोड़े की सवारी कर खुश होती है।

सबकुछ ठीक चल रहा था। मम्मी और बुआजी आपस में बातें करते चल रहे थे और पता मुझसे कोई गलती हुई या भैंस को मुझ जैसी सवार पसंद नहीं आई। अचानक वो आराम से चलती चलती जोर से दौड़ पड़ी।

मम्मी और बुआजी कुछ करते इससे पहले मैं अनुभवहीना धड़ाम से नीचे गिर पड़ी। वो रेतीला मार्ग था, इस कारण भयानक चोटों से तो बच गई परन्तु इस दुर्घटना में मेरा सीधा हाथ फ्रेक्चर हो गया।

पूरे दो महीने प्लास्तर बंधा रहा। सब मुझे अक्सर चिढ़ाते हुए कहते 'आजा, भैंस की सवारी करा दे'

मैं हाथ जोड़कर कहती– ज़िन्दगी में मुझे कभी भी नहीं करनी और किसी की नकल कभी भी बिना सोचे समझे नहीं करनी।

बाल कविता

उपेन्द्र 'अणु',
ऋषभदेव (राजस्थान)

बुराई हारी है

नवरात्रि में माँ के दर्शन,
करके खुशी मनाई है।
अब आई है विजया दशमी,
सबके मन को भाई है।

चींचीं मोनू पहन के कपड़े,
रावण देखने जाएंगे।
माँ पापा के साथ में जाकर,
पानी पूरी खाएंगे।

दस सिर के रावण को देखो,
ताल ठोक के खड़ा हुआ।
कुम्भकर्ण और मेघनाद भी
मूछें तान के अड़ा हुआ।

राम लला की आई सवारी,
संग में सीता माई हैं।
जलते तीर से रामलला ने,
इनमें आग लगाई है।

धू धू करता रावण जलता
और पटाखे चलते हैं।
मेघनाद और कुम्भकर्ण के
पुतले देखो जलते हैं।

अच्छाई की जीत हुई है,
और बुराई हारी है।
बचे बुराई से सब बच्चे
कहती दुनिया सारी है।

कल्याणी झा कनक
राँची, झारखंड।

फूलों की क्यारी

रंग बिरंगी फूलों की क्यारी
खिली खिली लगती है न्यारी
मौसमी पुष्पों की आयी बहार
बगिया सज धज कर गुलज़ार।।

बेला, चम्पा और महकी चमेली
रातरानी की खुशबू खूब निराली
जूही खिलने को हो रही बेताब
गुलाब की अदा, जुदा अलबेली।।

प्रकृति का अनूठा देखो उपहार
रंग– कूची लिए, खड़ा चित्रकार
कैनवास पर, छा गई हरियाली
फूलों को रंगने , आया बेकरार।।

लाल, गुलाबी, नीली लिए आभा
क्यारी की, बढ़ी अनुपम शोभा
पत्तों को भी, अब हुआ गुमान
रजनीगंधा की फैल रही प्रभा।।

आओ प्रकृति से प्यार करें
अब इनका, हम सम्मान करें
पौधों से ही, जीवन है हमारा
बगिया इनसे गुलनार करें।।

डॉ. पूर्वा शर्मा
वड़ोदरा
(गुजरात)

त्यौहारों की लड़ियाँ

देखो! देखो! सावन है आया
त्यौहारों की लड़ियाँ लाया।

धरा सजी है धानी–धानी
लुटा रहे मेघ बूंदें सयानी।

हरिशयनी एकादशी जो आई
वर्षा ऋतु की छटा है छाई।

शाखों पर सज उठे हैं झूले
शिव चरणों में दुःख–दर्द भूले।

पनपे पादप धरा भीगी–नहाई
देखो अमावस हरियाली है लाई।

गूँजते फिज़ाओं में कजली गीत
सखियाँ मनाएँ हरियाली तीज।

पंचमी को दर्शन देते नाग देवता
अगस्त पंद्रह मिली थी स्वतंत्रता।

छाया भारत में अब चैनो–अमन
लहराता तिरंगा करे वीरों को नमन।

रक्षाबंधन पर सजती कलाई
नेह बंधन में बंधे बहन–भाई।

मटकी फोड़े फिर दही चुराए
अष्टमी पर कान्हा मन लुभाए।

इतने सारे त्यौहार हैं मनाते
पूरे सावन हम खुशियाँ लुटाते।

काव्या कटारे
(कक्षा –८)
बीना, मध्य प्रदेश

मैं क्या करूँ

हैं पिता बीमार घर में बोलिए मैं क्या करूं,
माँ भी हैं लाचार घर में बोलिए मैं क्या करूं

लोग मुझसे पूछते हैं सब्ज़ियाँ क्यों बेचते ,
भूखे भाई चार घर में बोलिए मैं क्या करूं

किस तरह स्कूल जाऊँ फीस भी कैसे भरूँ ,
खर्च की है मार घर में बोलिए मैं क्या करूं

रोज़ लगती भूख खाना चाहिए परिवार को ,
मेरा तो संसार घर में बोलिए मैं क्या करूं

दीदी की डांट

दीदी मुझ को डांट रही है
मधुमख्खी सा काट रही है

झूठे बिस्कुट मुझको देती
और क्रीम खुद चाट रही है

अपनी ज़िद पूरी करवाने
मेरा पत्ता काट रही है

खाने की चीजों में हरदम
करती बंदर बाँट रही है

उसकी बात जलेबी जैसी
मेरी बात सपाट रही है

Tejas Patel

NARMADA MARKETING

Industrial Piping solutions

Wishing you a Happy Diwali & Prosperous New Year

May the beauty and festivity of Diwali fill your home with Happiness and Joy

PPRC Pipe & Fittings

PP, ISOPP & PVDF Ball Valve

HDPE Pipe & Fittings

PNEUMATIC PPRFR Pipe & Fittings

PVC, UPVC & CPVC Pipe & Fitting

PP, SS & PTFE Flange Guard

PNEUMATIC PPRFR Piping Installation

HDPE Tank & Piping Installation

PPRC Piping Installation

Exporter, Supplier & Installation Services

- **PPR-C Pneumatic Piping System**
- **PP, PTFE & SS Flange Guard**
- **HDPE, PP & PPFRP Piping System**
- **PP, ISOPP, PVDF Industrial Valves**
- **PVC, CPVC & UPVC Piping System**

Regd. Office : GF-4, INFINIUM, B/h., Fortune Gateway, Near Manorath Tenament, T.P.-13, Chhani Jakat Naka, Vadodara-390 024, Gujarat, India.

Mob. : +91 98797 94474, 96876 38855

E-mail : narmadamarketing4747@gmail.com, narmadamarketing1992@gmail.com

RNI No. : GUJHIN/2013/55691 Post Reg. No. L1/RNP/VDR(E)329/2020-22

सामाजिक
सांस्कृतिक
शैक्षणिक
क्षेत्र में कार्यरत

महिलाओं के संपूर्ण विकास
हेतू कार्यरत संस्था

संगिनी फाउंडेशन

Sangini Foundation

कार्यालय :-
22 - तिलक नगर, नवजीवन बस स्टेन्ड के सामने,
नवजीवन, आजवा रोड़, वड़ोदरा-390019.
ई-मेल : sanginifoundation@gmail.com
मो. : 9924716869